



# अनमोल मोती

तफ़सीर-ए-हुसैनी के

कुल्ज़ुम ख़रूप साहिब की नूरी नज़र में

धाम : श्री ५ पदमावतीपुरी दरगाहे मुक़द्दस, परना धाम, पन्ना

प्रकाशक :

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, ज़िला सहारनपुर

# अनमोल मोती

तफ़सीरे हुसैनी के

कुल्ज़म स्वरूप साहिब की नूरी नज़र में

मुख्तार-ए-हिन्द सिरदार महामत साहिब-ए-मुन्तज़र,  
श्री विजयाभिनंद बुद्ध नेहक्रलंक कल्कि अवतार जी,  
आख़रूल इमाम महंमद महदी साहिबुज़्ज़मां की मेहर  
एवं परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी, सरकार  
साहब की नज़र-ए-करम से प्रकाशित कराया गया



धाम स्थान : श्री ५, पदमावतीपुरी मुक्तिपीठ, दरगाह-ए-मुक्ददस,  
परना धाम, पन्ना, ( बुन्देलखण्ड ) मध्य प्रदेश,

प्रकाशक : श्री प्राणनाथ जी ज्ञानपीठ, सरसावा, ज़िला सहारनपुर,  
( पश्चिमी ) उत्तर प्रदेश

प्रथम संस्करण - 1000 प्रतियां



न्यौछावर :



प्रकाशक :

श्री राजन स्वामी  
श्री प्राणनाथ जी ज्ञानपीठ,  
सरसावा, जिला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश



मुद्रक :

द प्रिन्ट प्वाइंट

139-बी, दादा ननगर, कानपुर - 22

# प्राक्कथन

प्राणाधार श्री सुन्दरसाथ जी एवं धर्म प्रेमी सज्जनों !

यह गौहर समीन बयान यानि कुरान पाक का तर्जुमा व तफ़सीर-ए-हुसैनी वही ग्रन्थ है, जिसको दिल्ली में क़ायमउल्लाह के मुख से सुनकर श्री जी साहिब जी तीन दिन तक बिस्तर से उठे ही नहीं अर्थात् लगातार सुनते रहे। श्री मुखवाणी कुलज़म स्वरूप साहिब एवं मूल बीतक साहिब में तर्जुमा व तफ़सीर-ए-हुसैनी के उद्घरण कई जगहों पर दिये गये हैं, जो इस ग्रन्थ की महत्ता को प्रदर्शित करते हैं। चौपाई :-

**महामत कहे ऐ मोमिनो, लो हकीक़त क़ुरान।**

**ढूँढो फिर के नाज़ी को, जो है साहिब ईमान॥**

तफ़सीर-ए-हुसैनी कुरान मज़ीद की सर्वप्रथम अरबी-फ़ारसी टीका है, जो मुहम्मद अली के सुपुत्र हुसैन साहिब के द्वारा की गई। बाद में उसका बहुत ही बेहतरीन उर्दू अनुवाद फ़ख़्रे उल्मां मौलवी फ़ख़रुद्दीन साहिब के द्वारा तफ़सीर-ए-क़ादिरि के नाम से किया गया तथा उसको लखनऊ की प्रसिद्ध प्रेस से मुंशी नवल किशोर जी, तेज कुमार जी ने उर्दू में प्रकाशित कराया। वर्तमान में यह हिन्दी अनुवाद आपके कर-कमलों में प्रस्तुत है। वैसे तो कुरान-पाक की देश में बहुत सी तफ़ासीर (टीकायें) हिन्दी में प्राप्त हैं, किन्तु तफ़सीर-ए-हुसैनी की महत्ता सर्वोपरि है।

कुरान मज़ीद के मूल आशय को न समझने के कारण ही आज ज़िहाद के नाम पर आतंकवाद बढ़ रहा है। सच तो यह है कि इस्लाम धर्म का जो स्वरूप वर्तमान में दिखायी पड़ रहा है, वह कुरान-पाक की मूल मान्यताओं के विपरीत है। विश्व में सत्य धर्म का प्रचार हो, इसी उद्देश्य को ध्यान में

रखते हुए हमें यथार्थ ज्ञान का प्रचार करना चाहिए जो सम्पूर्ण मानव मात्र के लिये कल्याणकारी हो। चौपाई :-

**जो कुछ कहया वेद ने, सोई कहया कतेब।**

**दोऊ बन्दे साहेब के, लड़त बिन पाये भेद॥**

अक्षरातीत धाम धनी श्री प्राणनाथ जी की असीम कृपा एवं सदगुरू परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी तथा धर्मवीर सरकार श्री जगदीश चन्द्र जी की प्रेरणा से इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद आपके कर-कमलों में प्रस्तुत है। हिन्दी टीका का यह सम्पूर्ण कार्य एडवोकेट श्री नरेश टण्डन जी, जालंधर सुंदर साथ नशात वहदत के द्वारा किया गया है जो कतेब परम्परा के मूर्धन्य विद्वान है। धाम धनी के चरणों में प्रार्थना है श्री नरेश जी पर मेहर की अपार वर्षा होती रहे, ताकि वे समाज की अधिक से अधिक साहित्यिक सेवा कर सकें।

श्री सुन्दरसाथ एवं पाठकजनों से यह विनम्र प्रार्थना हैं कि इसमें जाने अनजाने होने वाली भूलों को सुधार कर हमारे पास सुझाव भेजें। हम आपके अत्यन्त आभारी होंगे।

इस टीका में केवल उन्ही आवश्यक अंशों को ही प्रकाशित किया गया हैं, जोकि श्री मुख वाणी में वर्णित है। अन्यथा मूल हिन्दी टीका तो बहुत विस्तृत है। आशा है यह प्रयास आपको पसन्द आयेगा।

आपका

राजन स्वामी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा  
जिला - सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

फोन - 01331-246000

# तफ़सीरे हुसैनी ( कादिरी/हादी )

## ज़िल्द अव्वल ( पहला )

### बिसिमिल्लाहिरतमानिरहीम

**अऊजू**—पनाह (संरक्षण) लेता हूँ और इल्तिज़ा (प्रार्थना) करता हूँ  
**बिल्लाह**—साथ माबूद (पूजनीय) बरहक़ (पूर्ण सत्य) और खुदाबंद (परमेश्वर) मुतलक (स्वच्छंद) के **मिनश्शैतानि**—वस्वसा (भ्रम) शैतान (दुष्ट) के सर (अभद्र) से जो सरकश (अशिष्ट) फरेब (धोखा) देने वाला है। या रहमते इलाही (ईश्वर कृपा) से दूर रहा हुआ है। **रंज़ीम**—निकाला हुआ जन्नत (परम धाम) के बाग़ों से या भगाया हुआ आसमान के तबको (श्रेणियों) से,

**सूर तुल-फ़ातिहति ५ मक्क़ी** (सूर: फ़ातिहा मक्क़ा में नाजिल हुई।)

**बिस्मिल्लाहिरहमानिरहीम**—शुरू अल्लाह (परमेश्वर) के नाम से जो बड़ा मेहरबान (दयालू) व निहायत (अत्यंत) रहम (कृपालु) वाला है।

**व हिया सबओ आयातिन** (और वह सात आयतें हैं।)

**अल्हम्दु**—जो सना (प्रशंसा) और सिफ़त (महिमा) के अज़ल (अंत) से अब्द (नित्यता) तक मौजूद और मालूम थी। और है। और होगी, वह सब तमाम (संपूर्ण) व कमाल (कला) **लिल्लाहि**—उस खुदा के वास्ते हैं जो नामों और सिफ़ात-ए-कमालिया (कला की महिमा) के साथ नाम रखा गया और सिफ़त किया गया है। **रब्बिल आलमीन**<sup>™</sup>—पैदा करने वाला, पालने वाला, रखने वाला, तर्बियत (शिक्षित) करने वाला, काम बनाने वाला, सब अहले-आलम (संसार) का, के मलायक (देवता), जिन्न (प्रेत), आदमी (मानव), चरिन्द (जानवर), परिन्द (पक्षी), दरिन्द (दुष्ट) दरियायी (सुमुद्री) जानवर वग़ैरह हैं। **अर्ह्वानि**—दुबारा हस्ती (जीवन)



बख्शाने (प्रदान) वाला, आखिरत (अंत) में अहले जहां के फ़ना (नष्ट) हो जाने के बाद **हीम**<sup>ला</sup>—दुबारा बख़्श़ास (दया) करने वाला, मुसलमानों (धर्मनिष्ठों) पर मेहरबानी (दया) के साथ उस जहाँ (परलोक) में और उन्हें हमेशा के वास्ते दाख़िल (प्रवेश) ज़न्नत करने में, **मालिकि यौमिद्दीन**<sup>ताए</sup>—ख़ुदा (मालिक) रोज़-ए-जज़ा (न्याय दिवस) व शुमार (शामिल) का यानि रोज़े कयामत (अखण्ड दिन) का या तसरूफ़ (परिवर्तन) करने वाला, उस दिन जो कुछ चाहे या बन्दों के आमाल (कर्म) का ताकि नाम-ए-आमाल देने-लेने में गलती न हो या रोज़े हिसाब (गणना) का काज़ी (धर्माधिकारी) के बन्दों के दरम्यान हक़ हुक़म करे या रोज़-ए-जज़ा देने वाला **इय्या-क नअबुदु** तुझ ही को इबादत (प्रार्थना) करते हैं। हम बस इस वास्ते के तेरा और इबादत (प्रार्थना) का मुस्तहक़ (सांझा) नहीं। **व इय्या क नस्तअीन**<sup>ताए</sup>—और ख़ास (विशेष) तुम ही से मदद चाहते हैं। हम तेरी इबादत में और सब हाज़तें (इच्छायें) और ज़रूरतें बर आने (प्राप्त) में **इहिदन**—हमें राह दिखा। **स्सिरातुलमुस्तक़ीम**<sup>ला</sup>—राह सीधी के अक्रवाल (सदुपदेश), अफ़आल (कृतिया) इख़लाक (चरित्र) में, औलिया-अंबिया (शृषि-मुनि) की राह है। इस वास्ते के अफ़रात (ऊंचा), तफ़रीत (कामचोर) और ज़्यादती व कमी में वह राह दरम्यान (मध्य) है। या राह मुस्तकीम (सही-राह) पे हमें साबित (बनाये) रख के वह दीन इस्लाम (निजानंद संप्रदाय) और सुन्नत (नियम वो काम जो पैग़म्बर सल्ल० करते रहे) सैयदुल अनाम अलैहि सलातो सलाम है। और हज़रत कुतुबुल आरिफीन ग़ौस वासलीन नसरून हकुददीन कुदुस रुहुल अजीज ने इसके मायनों में एक बड़ा नुक्ता (निशानी) और बहुत अच्छी बात फ़रमाई है। वह ये है कि दिखा तू हमें सीधी राह यानि अपनी जात की मुहब्बत और मुसाइद (सहायक) से मशरिक (उदयाचल) रख ताकि अपनी तरफ़ और तेरे ग़ैर (अन्य) की जानिब (पक्ष) इल्तज़ात (कृपा) करने से

आज़ाद होकर हम बिल्कुल तेरे ही गिरफ्तार हो जाएं और, तेरे सिवा ना हम कुछ जानें, और तेरे सिवा ना हम कुछ देखें, और ना तेरे सिवा कुछ ख्याल (ध्यान) करें। या यह मायने हैं कि दिखा तू हमें सीधी राह यानि वह राह जो तेरी जात पाक को हर मौजूद (उपस्थित) के साथ है कि वह मौजूद उस राह के बगैर कुछ ज़हूर (प्रकट) ही नहीं रखता और वे उसके अपने क्रमाल की इन्तिहा (हद) को नहीं पहुँचता ताकि हर हाल में तेरे सिवा हम कुछ ना देखें और तेरे ग़ैर की तरफ़ मुतवज्ज़ा (ध्यान) होने से हम आज़ाद हो जाये। **सिरातल्लजी न-दिखा** हमें उन लोगों की राह कि अपने फ़जल (दया) से **अनअम-त अलैहिम**—इनाम किया तूने उन पर (अवतार) नबुवत-ए-रिसालत (संदेश वाहक) विलायत, सिद्दीकियत (सच्चाई), शहादत (बलिदान), सकाहत (श्रेष्ठता) की नेमत देकर या उन लोगों की राह जो अहले कुर्ब (समीपता) हैं और कमाल नेमत ज़ाहिरी से कि कबूल शरीयत (नियम) है। और जमाल नेमत बातिन से की इसरारे हक़ीकत (सच्चाई) की वाक़फियत (जानकारी) है उनको तूने इज्ज़त दी बुजुर्गी, बख़्शी **गैरिलमग़जूबे अलैहिम**—ना उन लोगों की राह जिन पर तूने गुस्सा किया और पैदा होने से पहले वह तेरे ग़जब (आश्चर्य) में आ गये और उसी सबब (कारण) से उन्होंने कुफ़्र (कृत्घ्नता) पर कदम मारा या यहूद की राह की सरकशी (अशिष्टता) और दुश्मनी और यौजिश (परेशान) करने और कत्ल अंबिया और तहरीक़ कुतुब के सबब से तूने उन पर गुस्सा किया **वलज्ज़ाल-लीन\***—और ना गुमराह हो कि राह यानि वह लोग को पैदा होने के बाद मुख़लिफ़ तरीकों और टेढ़ी राहों में मुड़ गये या नसारा (ईसाई) की राह कि जनाब मसीह यानि हज़रत ईसा अलैहिसलाम की शान में ज्यादती और हज़रत हबीब (प्रियतम) यानि रसूले-अंबिया मुहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम की जनाब (प्रतिष्ठा) में कमी करने से गुमराह (भटक) हो गये।



# “श्री जी साहिब जी मेहरबान”

तफ़सीरे हुसैनी का बेहतरीन उर्दू तर्जुमा तफ़सीरे क़दिरी के नाम से मौलवी फ़ख़रुद्दीन साहिब ने किया। जिसका हिंदी अनुवाद तफ़सीरे हादी के नाम से सिरदार महामत साहेब की नूरी रहनुमाई में वाहिद सुंदरसाथ के ज़रिए मुकम्मल करके साया कराया। वास्ते अहले जहाँ में दीन हक़ीकी इस्लाम (निजानंद-संप्रदाय) के तबलीग़ की नसरो इशाअत (प्रचार-प्रसार) के लिए इमाम साहिबुज़्ज़मां (श्री जी साहिब जी) को नाचीज़ खाकसार का ख़िराजे अकीदत (श्रद्धा सुमन)

## —सूरः फ़ातिहा—

प० 1 सिरातुल मुस्तक़ीम-दिखा हमें तू सीधी राह यानि अपनी जात की मुहब्बत कि हम इधर-उधर न भटके।

## सूरः बकरः

प० 3 पहले तुझसे और पैग़म्बरों पर भेजे सहीफे (ग्रंथ) तौरैत जबूर वगैरह अलिफ़ लाम् मीम क़ुरान के भेद हैं, हर एक उन पर आगाही (जानकारी) नही रखता, मैं खुदा हूँ बहुत (बड़ा) जानने वाला वह किताब जिसे भेजने का वायदा अल्लाह ने अगली किताबों में किया था, यह पूरी किताब है, बिलाशक साथ है, देखे हुए हक़ तआला फ़रिश्ते और क्रियामत और दूसरी छिपी चीजें।

प० 4 मुहर (छाप) कर दी अल्लाह ने उनके दिलों पर और कानों पर आँखों पर

प० 6 अल्लाह घेरने वाला है। इलम (ज्ञान) में काफ़िरो (नास्तिक) को और उनके अक्वाल (बोली करनी) और फ़ैल (रहनी) उस पर पोशीदा (छिपा) नही

**प० 12** और याद करो (ऐ मूसा) उसे भी कि फ़ाड़ा हमें साथ तुम्हारे यानि तुम्हारी निजात (मुक्ति) के वास्ते दरिया-ए-कुल्ज़म, जब फिर्ओन से तुम भागे थे। और दरिया तुम्हारे सामने था। और दुश्मन का लश्कर तुम्हारे पीछे था फिर छुड़ाया हमने तुम्हें उस लश्कर के ज़र से, और डुबोया हमने फिर्ओन के लोगों को, हालांकि देखते थे तुम कि दरिया को कि क्यों कर फटता था, या फिर्ओन वालों को तुम देखते थे, कि किस तरह डूबते थे (किताब कुल्ज़म स्वरूप साहिब का प्रमाण)

**प० 13** और खुशख़बरी है। ऐ रसूल उन लोगो को जो ख़ुदा की तोफ़ीक से ईमान(विश्वास) लाए और रसूल और कुरान का और हक़ बज़ा लाये वायदा नेक फ़राहज़ (कर्तव्यो) और सुन्नते अदा (नियम) करने से ओर मज़मून (विषय) बसारात यह हैं कि बेशक वास्ते उनके हैं आख़िरत (अन्त) में जन्मते बाग (उद्यान) ओर उनमें हर किस्म के मेवे (फल) होंगे उनके उनके दरख़्तों (वृक्षों) के नीचे से या उनकी खिड़कियों से और झरोखों के नीचे से नहरें पानी, दूध, शर्बत और शहद की,

मेवा: खिलाया था पहिले दुनिया में। यह फ़ाज़िल लोग वह हैं जो तोड़ते हैं उज़्र ख़ियानत (विश्वास) से विधान जाहिद (संयमी) वो ख़ुदा के जो उनसे लिया हैं वह अहद (प्रतिज्ञा) मज़मूल हो जाने के बाद वह अहद मुराद है जो पैग़म्बर के आख़रुलज़माँ की ताबेंदारी पर नबी इस्माईल ने किया हैं तौरेत में या रोज़े महसर से मुराद है। अज़ल (शुरू)

**प० 14** वह तो नुक्सान के मारे हुए हैं, दुनिया और अक़बा में क्योंकि काफ़िर होते ख़ुदा के साथ हाँलाकि थे, तुम मुर्दे या ऐसे अजसान

(मूक) कि उसके बास्ते जिन्दगी नयी फिर जिन्दा किया अल्लाह ने तुम्हारे बदनो में रह फूँककर फिर मार डालेगा। जब तुम्हारी मुददते मुन्कर (कृतघ्नता) हो जायेगी (शिकस्त) फिर दोबारा जिन्दा कर देगा। क़ब्रों में सुर: फूँक कर तुम्हे जिन्दा करेगा। हश्श नश्श के वास्ते और फ़ेरे जायेगे जब पाने के वास्ते

**प० 19** पैदा किये सात आसमान, कहा रब ने फ़रिस्तो के वास्ते, बेशक मैं पैदा करने वाला हूँ मुत्लक़ (स्वच्छद आज़ाद) ज़मीं में एक बदले को कि क़ौम (समुदाय) नबी-उल-ज़माँ बदल होगा या किसी को जो इमारत ज़मीन और इबादत रब-उल-आलमीन में तुम्हारा ख़लीफा हो,

और कहा यहूद ने अपने ज़इम पर हैं, ना छुएगी दोज़ख़ की आग, और हमको न पहुँचेगी, मगर चंद रोज़ (कुछ दिन) गिनती के, कि वह सात दिन है। हर दिन हज़ार बरस (वर्ष) के बराबर कि वही सात हज़ार बरस दुनिया की उमर है। या चालीस दिन के कि इतने ही दिनों हमारी क़ौम ने गौशाला परस्ती की है। (दुनिया की उम्र का विवरण)

**प० 21** जब अरब के कुफ़ार यहूद को क़त्ल करने का इरादा करते और यहूद तंग हो जाते तो हाथ उठाकर कहते बाख़ुदा यानि हम तुझसे मदद चाहते हैं। मुहम्मद के सबब से कि वह आख़रूलज़माँ है। उन लोगो को वह जो काफ़िर हुऐ है।

अरब के मुशरिको में से फिर जब कि आया उनके पास जिसे पहचान चुके थे। काफ़िर हो गये साथ उसके वास्ते कि उन्हे गुमान था। कि नबी आख़रूलज़माँ बनी इस्त्राईल में से होगा। चूँकि वह बनी इस्माईल में से हुऐ तो उनके साथ यहूद लोग काफ़िर हो

गये और उनका ईमान ना लाये, पस लानत खुदा की काफ़िरो पर, कि उन्होंने अपनी पहचान के मुबाफ़िक काम न किया और नबी आख़रूलज़मां के साथ दुश्मनी कर ली, इस्म जाहेर ज़मीर (पहचान) की वज़ह पर लाना अस्बात है। उनके कुफ़्र का, बुरी चीज़ है कि उन्होंने बेचा है। उस चीज़ के साथ हिस्सा अपनी जानो का और वह क्या चीज़ है। यह कि काफ़िर होते हैं। साथ उस चीज़ के जो उतारी खुदा ने और वह क़ुरान है। हस्द जलन की ज़ानिब (तरफ़) से यानि रशक़ (ईष्वा) करते थे, साथ उसके कि उतारे अपने फ़ज़ल से कि वह फ़ज़ल किताब और वही जिस किसी पर चाहे अपने बंदो में से जो उसके लायक हो पस फ़िर गये, यहूद लोग बसबब गुस्सा खुदा के दूसरे गुस्से पर एक गुस्सा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और अंजील के इन्कार पर, और दुसरा गुस्सा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और क़ुरान के सबब से हुआ,वास्ते जब कहा जाता है। कि ईमान लाओ, कहते हैं ईमान लाये हम साथ उस चीज़ के जो उजारी गई हम पर,तौरेत और काफ़िर होते हैं। साथ उस चीज़ के जो उसके सिवा है। अंजील और क़ुरान दुरुस्त है। सिवा रखने वाला है। उस किताब के जो उनके साथ है। और इस तौरेत के साथ भी यहूद का कुफ़्र (कृत्घ्न) लाज़िम (अवश्य) आता है। मैकाईल (ब्रह्मा) रिज़क रोजी रोटि पहुँचाने वाला फ़रिश्ता ज़बराईल खुदा का वही अमानतदार, इस्त्राईल, याकूब मक्रबूल बढ़ा आख़रूल (इमाम महंमद महदी साहिबुज़ज़मा यानि श्री जी साहिब का अवतरण यहूदी (हिंदूओ) में)

प० 23 खुदा जिसे चाहता है। नबूवत देता है। आयत मन्सूख़ कर और उससे बेहतर आयतें लाते हैं। क्या नही जानता तू यह सिताब उन

लोगो की तरफ़ है। जो मनसूख हो जाने के मुन्कर थे। यहूद लोग आयत के मनसूख हो जाने पर झगड़ा करते थे। कहते थे कि मनसूख क़िब्ला को मुकददस से काबा: की तरफ़ फेर देना, मूसा अलै० की तरह मुहम्मद सल्ल० भी एक किताब लाये। (नई किताब का अवतरण, पुरानी किताबों का रद्द होना)

**प० 28** ऐ मुहम्मद हम तुमसे न पूछेंगे कि यह क्यों ईमान न लाये वही पहुँचा देना, और रिसालत ज़ाहेर कर देना, तुम्हारे जिम्मे पर है। और उन गुमराहो का हिसाब हमारे जिम्मे है। (मोमिनो का काम सिर्फ़ पैग़ाम देना)

**प० 29** एक पत्थर रखा है जहा मूसा के आसा: (छड़ी) का निशान है। क़ाबा: मे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस्माईल की औलाद में पैदा किया,

**प० 30** सहीफ़े (किताब-रिसाले) मूसा को तौरैत (यहूदी ग्रंथ) ईसा को इंजील (बाईबल)

**प० 31** फिर अगर ईमान लाए यहूद (यहूदी) और नसारी (ईसाई) साथ मिसल (उदाहरण) उस चीज़ के कि ईमान लाए हो तुम साथ उसके यानि साथ किताबों के और रसूलों के तो अलबत्ता सीधी राह पाई। उन्होंने और अगर फिर जाए और इन्कार करो पस सिवा उसके नहीं कि वह महल ख़िलाफ़ और अदावत (दुश्मनी) है और ऐ मुहम्मद उनकी दुश्मनी से तुम कुछ अदेंशा न करे। पस करीब है कि ख़ुदा क्रियामत करे और यहूद और नसारी के सूर: को तुमसे बाज़ रखें। (श्री जी सहिब जी की ही राह सही)

**प० 32** और कौन बडा जुल्म (अन्याय) करने वाला है। अपने ऊपर उस शख्स से जो छुपाए ग़वाही को जो उसके नजदीक साबित हो

खुदा से यानि किताब-ए-इलाही के ज़रिये से उसने जाना और हज़रत को नबूवत के बाब (बारे) में जो अहले किताब हक़ बात छुपाते थे और न ही सच्ची गवाही देते थे इस आयत में बेख़बर इशारतन उसका बयान है और नहीं है खुदा बेख़बर उस चीज़ से जो तुम वह करते हो। हक़पोशी और क़ुरान की तकज़ीब और मुहम्मद से इन्कार और वह क़ौम जिसका ज़िक्र किया गया था एक ग़िरोह थी उनको वही मिलेगा जो उन्होंने खुद कमाई की, (विद्वानो द्वारा श्री जी साहिब जी का प्रकटना छुपाना)

**प० 34** उन्होंने तो रेत में पड़ा है कि पैग़म्बर आख़रूलजमाँ दो क़िब्लो की तरफ़ नमाज़ पढ़ेंगे आख़िर जो क़िबला ठहरेगा वह क़ाबाः है (पूर्व पश्चिम द्वार परना धाम का)

**प० 34** क्रियामत के दिन रब तुम को लाएगा हक़ (सत्य) व बातिल में फ़र्क़ देखने वालो में तुम सब को जमा करेगा कि क़िबला करे पहाड़ो का कि हक़ तरफ़ में ना है

**प० 36** जो लोग धर्म के काम में शहीद हुए वह रब के दरबार में जिंदा है। (मोमिनो की धर्म के लिये कुर्बानी)

तुम नहीं जानते हो उस ज़िदंगी की कैफ़ियत (समाचार) इस वास्ते कि अक्ल (बुद्धि) से उस ज़िदंगी की कैफ़ियत मुमकिन नहीं ग़लत आज़माईश करते है।

**प० 37** सफ़ा और मरवा दो पहाड़ जिनका (हाज़ी) सिज़दा करते है। दारुल इसलाम

**प० 52** पहले एक ही आदम की औलाद व एक ही उम्मत थी। फिर जुदा-जुदा हो गये फिर पैग़म्बरो को भेजा और किताबें उतरी फिर किताबों में तबदीलिया (परिवर्तन) कर दी, फिर मोज़िज़े

(ईश्वरीय चमत्कार) और दलीलें (तर्क) (हिन्दू-मुस्लिम ईसाई एकता)

**प० 68** तालूत और शमउल दाऊद को ज़बूर दी दाऊद के हाथ से कत्ल हुआ ना (श्री जी साहिब जी और छत्रसाल जू की लीला)

**प० 71** कुछ बाज़ अंबिया को सपने में पैग़म्बरी दी और बाज़ों को जागते में बाज़ों के ख़्याल में इद्रीस से मुराद (आशय) है। (स्वप्न में जागनी कर्ता का सत्य वर्णन)

ना इख़्तलाफ़ करते वह लोग जो पीछे अंबिया से थे, बाद उसके कि आये पास उनके निशानियां खुली हुई, अपने पैग़म्बरों की नबूवत पर (न्याय दिवस पर सिफारिश नहीं)

**प० 72** समा लिया है, ओर गुजाईश पाई है कुर्सी उसकी ने जो अर्श के नीचे और आसमानों के ऊपर है या घेर लिया है उसके इल्म ने सब आसमानो को ओर उसकी जो कुछ उनमें है और तमाम ज़मीन को ओर उसे जो कुछ उन पर है। (इल्म की श्रेष्ठता)

**प० 73** जिन ख़ुदाओ को ज़मीन में पूजते हैं उनमें सबसे बदतर उनकी ख़्वाहिश (इच्छा) है। क्या नहीं देखते हो तुम ऐ मुहम्मद उसे जिसने अपना ख़ुदा ठहराया है। वह बेचारा समझता है कि मैं ख़ुदा का बंदा हूँ। (मुर्ति पूजा, गुरु पूजा निषेध)

**प० 75** फ़तूहात (आदेशो) (मक्की) में मज़कूर है कि जिंदा करने की क्रिस्मे है। जैसे कि ख़लक (दुनिया) हस्ती कि बाज़ी ख़लक कलमा कुंन से मौजूद हुई और बाज़ को ख़ुदा ने एक हाथ से, और बाज़ को दो हाथो से, और बाज़ो को पहले ही हस्ती में लाया और बाज़ो को मख़्लूक़ात के सबब से पैदा किया, (पांच तरह की पैदाईस का वर्णन)



चूँकि इब्राहिम ने खलक की वजूद के क्रिस्में होने को देखा था और समझा था, और मौत के बाद खलक को जिंदा करना यह बजूद ही और है।

**प० 76** और इसकी भी क्रिस्में हो सकती है, तो हज़रत इब्राहिम ने प्रार्थना की ऐ अल्लाह मुझे दिखा दे। कि किस क्रिस्म पर और किस तरह पर तू मुर्दों को जिंदा करता है, ताकि मुझे मालूम हो।

**प० 77** अनवार में लिखा है कि जो शख्स चाहे कि अपनी जान की हमेसगी के साथ जिन्दा करके उसे चाहिये कि अपने बदन की कुव्वतों (शक्ति) को रियाजत की तेग से नीमजान करके बाज़ को बाज़ (कुछ) में मिला दे ताकि उनकी सूरत बिगड कर हुक्म के ताबे: हो जाये। उन्हे शरा: और नक़ल की पुकार से पुकार यहाँ तक कि खुशी की राह से फिर दौड़ें आए। मुहक्का ने कहा है कि यह चारों जानवर जिब्ह: करने में यह इशारा है कि कब तक जो हमेशा लोगो से मिला-हिला रहता है और खलक से रिश्ता तोड दे और मुर्ग जो सोहबत में महब रहता है। जिब्ह: कर और सोहबत से अपने आपको बचा, कव्वा (कौआ) हिर्स तमा का प्रतीक है उसे मारकर हिर्स तमा से छुटकारा पा, और मोर जो सिरों की जीनत है। उसका सिर उतार ले चार बुरी चीज़ों से बचकर हयात आब (अमृत) ही कायम (अखण्ड) जीवन जिये (मन, चित, बुद्धि अहंकार पर नियंत्रण आवश्यक)

**प० 77** मिसाल खर्च करने उन लोगो की जो बे सहाबा गर्ज़ दान की महिमा अल्लाह बहुत बख्शीश करने वाला (सेवा से पाओ पार)

**प० 79** खजूर व अगूर के बाग़ गये भेद सिदका(दान) देने वालो में (मोमिन, मुस्लिम में भेद)

## सूर: आले इम्रान

- प० 88 अलिफ़, लाम, मीम, अलिफ़ अला-ए-अली ऐ सबको घेरने वाले लाम बका-ए-करीम, मीम मुहब्बत-ए-कदीम (पुरानी)
- प० 90 नहीं ख़िलाफ़ करता वायदा जो उसने नस्त्र के बारे में कहा, तहक़ीक़ वह लोग काफ़िर हुए, यानि यहूद और करीज़ और नज़ीर या कुफ़ार कुरैश रसूल सल्ल० को तार्इन से कहते थे कि फ़क़ीरी और बेटे नहीं रखता और ज़ोर अपने माल और औलाद पर फ़ख़्र करते थे। (मोमिन का ख़जाना परमधाम)
- प० 92 मुत्तकी लोग महलों में रहेगें जिनके नीचे पानी बहता है (परमधाम वर्णन)
- ला इलाह इल्लल्लाह फ़रिश्तों और आलिमो ने इसकी गवाही दी, अहले किताब मोमिन
- प० 93 पस न हो तुझ पर, मगर पैग़ाम पहुँचा देना (संदेश पहुंचाना दुनिया को)
- प० 94 बनी इस्राईल ने दिन उगते 43 पैग़म्बर क़त्ल किये 112 आदम आबिद ज़ाहिद कत्ल किये शाम तक,
- प० 95 वारसी नबुवत रिसालत इस्राईल से छीनकर इस्माईल को दी जिसे चाहता है इज्ज़त देता है ईमान और मारिफ़त की सबब (कारण) से, (रब की मेहरबानी से मिलती है राह)
- प० 95 तफ़सीर बसाईर में लिखा है कि सुलतान महमूद गजनबी ने जब सोमनाथ का क्रस्द (बुतख़ाना) ध्वस्त किया तो इमाम मिस्री गजनबी जो उस वक़्त अपने ज़माने में कुतब औलिया थे, उनकी ख़िदमत (सेवा) में सुलतान महमूद गजनबी ने हाज़िर होकर

फ़तहमंद (विजयी) होने के वास्ते दुआ चाही और उसी तरह सफ़ नंआल (लाईन) में खड़े होकर आया उसकी तफ़सीर का नुक्ता पूछा। ख़्वाजा ने जवाब दिया इस आयत की बहुत खुली हुई एक सूरत यह है कि तू सतरह सौ जंगली हाथी, पाँच हजार फ़र्जद आबाद मुल्क, और लाख सवार रखता है। बाईस बामुल्क की ज्यारत (दर्शन) को ख़्वाहिश में हक़ तआला तुझे मुझ जैसे फ़कीर के घर में लाता है और सफ़ के नीचे जहां जूतिया उतारते हैं वहां खड़ा रखता है आज़ादी में सद्र नशीन करता है और मुझे उस फ़टी कमली और नंगे होने में मुल्क कवाइत बख़्शाता है और आज़ादी में सद्र नशीन करता है। (इमाम के प्रति त्याग)

**प० 98** अगर इंकार करोगे रसूल की इशाअत से पस्त हक़ीक़ दोस्त नहीं रखता दोस्त काफ़िरो को ख़ुदा व रसूल की इशाअत से इंकार करना कुफ़्र है—

नूह का साथ ताउम्र और किशती बनाने और पहली तो शरीयत मंसूख करने के मरियम-ख़ुदा को लौड़ी

**प० 100** मरियम को मस्जिद के पास कमरे में बंद रखा। ख़ुदा ने कहा ऐ ख़ुदा की लौड़ी, तहक़ीक़ कि अल्लाह ने बस किया। तुझे ताऊत (पूजा) इबादत के वास्ते या क़बूल फ़रमाया ख़िदमत (सेवा) के लिए।

हज़रत ईसा के लिये एख़ खास बात ये कि वह बे बाप के, तो ईसा अलैहिस्सलाम को कलमा वाले इस वास्ते कहते हैं कि वह कलमा कुंन से पैदा हुए। (ज़िकरया के पुत्र एहिया यानि श्री जी साहिब जी)

प० 101 पैगम्बर का नाम अख़रूल नबी हज़रत मुस्तफ़ा मुहम्मद रसूलल्लाह सल्ल०

प० 102 पाँच मोजिज़े ईसा मसीह के मुर्दों को जिंदा कर देना, नूह के बेटा 4000 साल पहिले मरा हुआ, तौरेत हज़रत मूसा की किताब,

प० 104 नसारी (ईसाई) हज़रत ईसा और मूसा को रसूल मानते हैं।

ख़ुदा, ईसा, शैतान कुंन से पैदा किया आदम को इसी तरह ईसा को बगैर बाप के कुंन से पैदा किया। (ईसा यानि देवचंद्र जी का प्रसंग)

प० 108 जो कोई आज किसी को हसँते रखता है, कल क्रियामत के दिन उसी के साथ होगा। मोमिन और ख़ुदा में फर्क नहीं,

जिस नबी आख़रूल ज़मां का वायदा तुम्हारी किताब में है। उसकी निशानियां तुम्हारे नबी में मौजूद नहीं, तो मुमकिन है कि इस हैअला और करीब से असहाब नबी सल्ल० (आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़ज़मा श्री जी साहिब जी का आना)

प० 118 बस वह लोग कि स्याह मुँह हो जायेंगे उनके, (न्याय के दिन मुँह काला होगा)

## सूर: निसा

प० 171 हदीस इर्शाद रसूल सल्ल० का, ला-इलाह-इल्लिल्लाह, और क्रियामत के रोज़ हिसाब के लिए सब उठाए जायेगे कोई शख्स ही उस दिन में क़ायम किये जायेगे औलिया दोस्त,

प० 173 तौबा अता करना ख़ुदा की तरफ़ से है और उसी को तौफ़ीक़ से,

प० 174 एक हज़ार काफ़िरो के छोड़ देने का अज़ाब कम और एक मुसलमान (धार्मिक-व्यक्ति) को मारने का अज़ाब ज्यादा

**प० 177** मुफ़स्सिरों ने कहा कि इस से हर हाल में खुदा को याद करना मुराद है जादल उलूम लिखा है कि ज़िक्र के मायने यह है। यानि डर खुदा से क्रियामत यानि काम करते वक़्त यानि खात-पीते वक़्त और जब ख़लक के साथ बैठी जब सोने का इरादा करो और ऐसे ही खौफ़ ( डर ) ( रात-दिन याद करो प्रीतम को )

**प० 179** बहुत उलमाओं ने कहा है कि वह इलम ( ज्ञान ) है। ख़ूबीयत हक़ और उसके जलाल का और पहिचानना। अबू बैअत नफ़स और उसके हाल का और बहरूल हक़ाईक में लिखा है, कि जो कुछ हो चुका और जो कुछ होगा यह उसका इलम है कि वह इलम है। ख़ूबियत शबै-ए-मेराज में रसूल को अता फ़रमाया जैसा कि मेराज की हदीसों में बार-बार हुआ है कि मैं अर्श-अज़ीम के नीचे था एक कताश मेरे हलक़ में डाला दिया पस जान लिया मैंने जो कुछ हो गया है। और जो कुछ होने वाला है ऊपर तेरे बैठा हो इस वास्ते कि नबुवते कामिला (पूर्ण) तुझे है। इससे बढ़कर कोई फ़ज़ल नहीं। नहीं है भलाई बीच बहुत के भेद कहने उनके से, ( परमधामं दर्शन का विवरण )

**प० 180** शिर्क ( किसी दुसरे की पूजा ) के सिवा सब गुनाह माफ़ हो जाने की उम्मीद है। फ़रिश्ते खुदा की बेटिया हैं ज़हन्नुम में जायेगे और जब बहिश्त मे एक सब उम्मतों में और बाक़ी याजूज़ माजूज़ की उम्मत मे से,

**प० 181** हमारा नबी ख़ातम-उल-अंबिया है और हमारी किताब तुम्हारी किताबों को नासिध है ( रद करने वाला ) तो हम ही बहिश्त को सज़ावार बहुत है। जो वायदा किया है खुदा ने सवाब देने का वह पाया न जाएगा। तुम्हारी आरज़ुओ से, ऐ मुसलमानो कोई काम

आरजुओ उसे बर नही आता बल्कि जिसे रियाज़ बहिश्त चाहिये उसे रियाज़ (अभ्यास) करना चाहिये। रियाज़त करनी चाहिये, बहुत मेहनत करनी चाहिये, (साधना का अभ्यास जरूरी)

**प० 184** और है खुदा बेनियाज़ अपनी सब ख़लक से अगर हुक्म माने या न माने (हक़ को सभी का ज्ञान)

**प० 185** और फ़रमाया यह वह क़ौम है यानि पारसा (संयमी) और खुदा ऊपर फ़ना करने और पैदा करने के क़ादिर जो कोई चाहे अपने अमल से सबाब दुनिया का जैसे मुज़ाहिद मसलन ज़िहाद दुनिया के लिये करे यह सबाब नाचीज़ उसे कोई क्यो तलब करे और जो चीज़ सब चीज़ों से ज्यादा शरीफ़ और अजीज़ है उससे क्यो बेज़ार है (सच्चा ज़िहाद इन्द्रियां विजय)

**प० 186** रसूल और किताब के साथ मुहम्मद सल्ल० और कुरान जोड़ दिया गया है जो कोई काफ़िर हुआ साथ अल्लाह के और उसके फ़रिस्तो के और उसकी किताबों के और रसूलो के और भागे आख़िर के तहक़ीक़ कि वह गुमराह हो गया। (हक़ के बिना मुक्ति नहीं)

**प० 187** पुलसरात पर मोमिनो का नूर क़ायम रहेगा और काफ़िरो का नूर न रहेगा और गिर जायेगे दोजख़ में (जीव सृष्टि का वर्णन)

**प० 188** तुम्हारी निज़ात उसके फ़ज़ल पर है। तुम्हारे शुक्रजून हो,

**प० 189** और चाहते हैं कि यह जुदाई डाले दरमियान खुदा के और उनके रसूलों के और चाहते हैं। कि जुदाई डाले पैग़म्बरो से कहते हैं हम ईमान लाये बाज़ पैग़म्बरो पर मूसा अजीज़ उलेमा और कुफ़्र करते हैं। हम ईसा और मुहम्मद के साथ और चाहते हैं कि पकड़े दरमियान ईमान और कुफ़्र के दरमियान राह ढूँढते हैं।

वह काफ़िर है। उनका कुफ़र मुहक़ (भस्म) हो गया है। यानि अपने कुफ़र में कामिल है और उन्हें मोमिन नही कह सकते, इस वास्ते कि जो ईमान उन्हे, (दुनिया की भक्ति दिखावे के लिये)

**प० 190** उठाया ईसा को उस ख़ुदा ने और महले करामत (प्रतिष्ठा) पर ले गया। औलिया ग़ालिब (विजेता) बीच उस चीज़ के जो वह चाहता है हज़रत ईसा को उठा लेना और यहूद इन्तक़ाम (बदला) लेना। हुक्म करने वाला साथ लानत के यहूद के या तदबीर (चारों ओर घुमने वाला) करने वाला। यह कि ईमान लाएगा ईसा के साथ पहले मौत अपनी से वह ईमान मौन मुआईना करते वक़्त होता है कि उसे ईमान वाला कहते हैं। उससे कुछ फ़तह (विजय) नही और बाज़ो ने कहा है, कि अहले किताब हज़रत ईसा का क़िबलः ईमान हज़रत ईसा लाएंगे। और वह उस वक़्त होगा जब हज़रत ईसा अलैहिसलाम आसमान से उतरेगें और दज़्ज़ाल को क़त्ल कर डालेंगे और यकीन जानेगे कि वह पैग़म्बर थे, और हज़रत ईसा अहले किताब को देने इस्लाम की तरफ़ बुलाएंगे और मुख़लाफ़,

**प० 191** मिलते लोगो मे से उठ जायेगे और इस्लाम के सिवा और कोई मिल्लत न रहेगी। और हज़रत ईसा हमारे हज़रत मुहम्मद की किताब और सुन्नत (नियम) के मुआफ़िक (अनुसार) अमल करेगा और चालीस वर्ष ज़मीन पर रहेगे। फिर इन्तक़ाल करेगे और मुसलमान उन पर नमाज़ पढ़ेगे और दिन क्रियामत के कि उन्होंने उन्हे ख़ुदा का बेटा कहा है। हमने अता की एक किताब कि इसका नाम जबूर था और उसने हक़ तआला की स्तुति (प्रशंसा) की केवल और अमरी निबाही कुछ न थे बल्कि हज़रत दाऊद की शरिया वही तौरैत की शरीयत थी और भेजा हमने



रसूलों की कि कुरान में तहक्रीक कर नाम लिये हैं। हमने उनके और उनके किस्से तुझ पर जाहिर किये हैं। पहले इससे जैसे युसूफ़ ज़िकरिया, (ईसा की पातसाही चालीस वर्ष)

**प० 192** याहया इलियास और कलामअल्लाह मूसा के साथ अगर मूसा के साथ कोहतूर पर था तो मुहम्मद सल्ल० के साथ खिलवतखाना नूर में किया। कुफ़ार की एक जमात हज़रत सैयद मुहम्मद के पास आई और अर्ज़ किया कि ऐ मुहम्मद हमने उल्मा यहूद से तेरे दीन और आईन का हाल पूछा और तेरी नबूवत और किताब का इसतमासार किया। वह कहते हैं कि हम उसे नहीं पहचानते और इसका ज़िक्र (वर्णन) हमारी किताब में नहीं है। आयत नाज़िल हुई कि यह अदावत-के सबब (कारण) से गवाही ही नहीं देते। मगर ख़ुदा गवाही देता है और तेरी नबूवत बयान करता है। साथ उस चीज़ के जो के नाज़िल की है तर्क तेरे कि वह कुरान है। खुला मोज़िजा (ईश्वरीय चमत्कार) और हलाल करने वाला नबूवत पर नाज़ (गर्व) किया। कुरान ख़ास के और है साथ इलम के और महफूज़ (चमत्कार को नमस्कार)

**प० 193** और कलमा उसका है मुफ़स्सरीन ने कहा कि कलमा से वह खुशख़बरी मुराद (आशय) है जो हज़रत मरियम की हुई थी, कि तेरे लड़का पैदा होगा। बगैर किसी मर्द के हाथ लगाए हुए पहुँचा दिया। उस कलमा को अल्लाह ने तरफ़ मरियम के यानि बशारत दी, और ईसा साहिब-ए-रूह है और वो रूह जो हक़ तआला से बेवास्ता अस्बाब सादर हुई। न कहो कि ख़ुदा हमारे तीन तन है। और बाज़ नसारे (ईसाई) का इतकाद (विश्वास) यह था कि तीन ख़ुदा है। अल्लाह, ईसा, मरियम और बाज़े नसारे इस

बात पर थे कि तीन चीजों पर इबारत है। यानि बाप की जात अकनूम अल इतन यानि इलम और अकनूम उल हैवात या रूहल कुदस और क्रायम सलसा कहते हैं। हक़ तआला ने कहा बाज़ (ईसा रूहअल्लाह हक़ का बेटा नहीं रूह है।)

**प० 194** रहो तसलीस से तीन हिस्सों में तकसीम करना। अनवार में है कि यह मलाएका (देवताओ) करीबी अर्श (धाम) के गिर्द (और) है।

बहरूल हक्राईक में लिखा है कि अहले बसारत की जुबानी इस आयत के मायने पर है। जब उठो तुम नीद से और मुतवज्ज़ा हो उस नमाज़ की तरफ़ जो तुम्हारे मेराज है

मक्का मकाम कर्म की तरफ़ रूजू करने में पस उन मुहो को जिनसे दुनिया की तरफ़ से तवज्ज़ोह की है तौआअ और अस्तग़फ़ार से धो डाली और दोनो जहान के अलावा और जो कुछ दो जहाँन में है उससे तअल्लुक़ (संबंध) से हाथ धो डालो (दुनियादारी की जगह रब को याद रखो)

### सूरः माइदः

**प० 199** और याद करो नेमते अल्लाह की जो उसने इनाम की ऊपर तुम्हारे, और याद करो अहद व पैमाने को ऐसा अहद व पैमानः कि क़ौल (वचन) लिया तुमसे साथ उसके यानि रोज़-ए-अलस्त में खुदा ने जो तुम से अहद लिया या लैल-तुल-अकबा में हज़रत मुहम्मद के साथ जो तुमने अहद किया कि सुनने इताअत (पैरवी) करने पर तुम ने बैअत की,

**प० 202** छुपाते हो उसे तौरैत में से। जेसे मुहम्मद सल्ल० की तय्यत और अजीत में से जैसे अहमद की जो बशारत ईसा ने दी, और मुआफ़ करता है। बहुतेरी छुपी बाते।

हज़रत का नाम नूर जो है। नूर हज़रत है और किताब कुरान है।  
(दुनिया का हक़ का झुठलाना यानि छिपाना)

**प० 204** ईसा और मुहम्मद सल्ल० के दरम्यान (बीच) चार पैग़म्बर भेजे।  
तीन बनी इस्राईल और एक खालिद बिन शबान अरब में इतने  
पैग़म्बर और किसी क़ौम (वंश जाति) में नहीं हुए जितने यहूदो  
मे बनी इस्राईल में,

**प० 208** क़ायम उल असराद में लिखा है कि आबिदो (तपस्वी) का  
वसीला(कर्तव्य) फ़जाईल है और आलिमो का वसीला दलाईल  
(दलीलें) है और आरिफ़ों का वसीला तर्क वसाइल है। आबिद  
तो मुआमला (विषय) से तवस्सुल (सहारा) ढूँढ़ता है और  
आलिम मकालः से राह चलता है और आरिफ़ मुआईना से राह  
देख लेता है। (तीन तरह की उम्मत का वर्णन )

**प० 211** बदल देते हैं आयतो को (यानि रद-बदल हक़ का नाम)

**प० 212** तहक़ीक़ हमने उतारी है। हम ने तो तह बीच उसकी हिदायत है,  
इसकी तरफ़ और नूर कि शुबहा (संदेहो) की तारीकियाँ (अँधेरा)  
दूर करे।

**प० 213** और आजमाता (परीक्षा लेता) है। तुम्हे उस चीज़ के जो दी है।  
तुम्हे यानि मुख़तलिफ़ (विभिन्न) शरीयते। हर ज़माना (समय)  
के मुआफ़िक़ ताकि फ़रमाबरदार, गुनाहगार से तमीज़ कर लिया  
जाए। पस डरो और पेश करो तरफ़ ख़ैरात के कि अनवार शरीयत  
हैं, अल्लाह के फ़िर जाना हैं, तुम सब को पस करीब हैं लाए  
ख़ुदा एक क़ौम। कि दोस्त रखता हैं फ़िर अल्लाह उन-लोगों को  
और वह लोग दोस्त रखते हैं अल्लाह को। फ़रीतन और ख़ाक़सार  
और मेहरबान होंगे ऊपर मोमिनो के सख़्त दिल और फ़िर पड़ने

वाले और बेरहम होंगे ऊपर काफ़िरो के और यह क्रौम अहले यमन थे।

ख़ुदा की मुहब्बत तो यह हैं कि दुनिया में बंदा की तौफ़ीक और हिदायत का इरादा फ़रमाया।

और आख़िरत में हुस्न सवाब और करामत बेहिसाब अता करना। और ख़ुदा के साथ बंदा की मुहब्बत यह हैं कि ख़ुदा की ताईत का इरादा और उसकी मासियत (पाप) से वचन और

अहले तरीक के नजदीक बंदा के साथ ख़ुदा की मुहब्बत मंद हैं कि बंदा अपनी दरगाह से करीब और नजदीक कर ले। (मोमिन ख़ुदा के दोस्त हैं, इम्तिहान जरूर होता है, साधना में)

**प० 217** वह लोग जो क़ायम रखते हैं नमाज़ और ज़कात (दान) (प्रार्थना दान जरूरी है)

**प० 218** हम ईमान लाए साथ के और साथ उस चीज़ से जो नाज़िल फ़रमाई यानि क़ुरान और साथ उस चीज़ से जो नाज़िल फ़रमाई हम से पहले यानि अंजील और तौरैत और सब (आसमानी किताबों का सम्मान)

**प० 224** कुछ लोगों ने सलाह की कि गोस्त न खाएंगें। रोज़ा: (उपवास) रखेंगे और औरतों के पास न जायेंगे तो पैग़म्बर ने मना किया कि यह ठीक नहीं। यह कर्म जरूरी है। इस्लाम के अनुसार, (बातूनी अर्थ ले जाहिरी नहीं कि सामाजिकता भी जरूरी है)

**प० 231** जब कहा अल्लाह ने ईसा बेटे मरियम को कि याद कर नेमते (चीजें) मेरी जो पहुँचाई मैंने रूहल कुदस साथ ज़बराईल या साथ उस कलाम जिससे तूने दीन जिंदा किया या मुर्दे जिंदा कर

दिये। और बाज़ों ने कहा रूहल कुदस अज़ीम है बाते करता था, तू लोगो से ईसा अधेड़ उम्र से पहले आसमान पर गये और उसी सिन (आयु) से फिर उतरेगे और ज़मीन पर पहुँचेगा।

और याद कर ए ईसा जब हमने तुझे किताब और समझ चीजों की और तौरेत और अंजील के मायने और हक्काईक़ (ईसा का अवतरण फिर से होगा)

**प० 233** उन लोगों के वास्ते जो हमारे बाद आए या हमारे अब्बल और आख़िर (अन्त) उस रब्बान से हिस्सा पावे।

### सूर:अनआम

**प० 237** और हदीसों में आया है कि हक्क़ तआला ने एक किताब लिखी है और वह उस के पास है। अर्श पर-मज़नून (आशय) उसका यह है कि बेशक़ रहमत ग़ालिब हो गई है। मेरे ग़ज़ब पर और चाहिए कि उससे रहमत जातिया मुराद दी (परोक्ष ज्ञान से रहस्य प्रकट)

**प० 250** कुंन फ़या कुंन (हो जा) तीन बार (सृष्टि का प्रारम्भ व अन्त)

**प० 262** नहीं है। उनके क़ताल में किसी चीज़ में यानि जिस वक़्त उनके साथ पहरावा नहीं है ये आयत ग़ैब से मंसूख़ (रद) है और बाज़ों ने कहा है कि इस कौम से अहले बदत मुराद है और इस सूरत में के मायने ये है कि इतने बेजार है नहीं है काम उनका मगर खुदा के साथ है। अगर चाहे उन पर अज़ाब करे अगर चाहे इस ज़हान में मुहलत दे और आख़िरत में अज़ाब करे अगर चाहे तो तौबा की तौफ़ीक़ दे। फिर ख़बर दे उसे क्रियामत के दिन। (अखंड परम धाम की सूचना)

## सूर: आराफ़

प० 274 या आये हुक्म रब तेरे का उनके अजाब के वास्ते या उसकी आयतों की तमामी के लिए इन आयतों से अलामाते (इलम) क्रियामत मुराद हैं और वह बहुत हैं। उन बड़े वाक्यों में दज़्जाल और दाभ-तुल-अर्ज का निकलना और हज़रत ईसा अलैहुसलाम का उतरना और इमाम महंमद महदी अलैहुसलाम का जुदा और याजुज़ माजुज़ का जुंदा (अलग) और याजूज़-माजूज़ जाहिर होना और मग़रिब (पश्चिम) आफ़ताब (सूर्य) का निकलना हैं वाज़ी निशानियां तेरे रब को जो क्रियामत क़ायम करने को जो उसने मुर्क़र (निश्चित) की है। जिस दिन आयेगी बाज़ी निशानियाँ तेरे रब के अगर के मग़रिब से आफ़ताब का निकलना है। और जिस रात की फ़ज़्र (सुबह) को आफ़ताब मग़रिब से निकलेगा। वह रात बड़ी होगी और उसकी दराज़ी तहज़ुज़ (आधी रात) और दरूद क्रियामत (रात्री कालीन नमाज़) पढ़ने वालों को मालूम होगी। जब और दरूद से फ़ारिक (निवृत्त) होंगे तो सुबह का मुन्तज़र करेंगे और सुबह न होगी तो वह लोग गुमान (संदेह) और शक में हो जायेंगे और फिर दरूद का वज़ायब नये सिरे से शुरू करेंगे। जब फिर तमाम होगा और सुबह के आसार जाहेर न होंगे तो वो लोग जानेगे कि शब से कोई बड़ा काम ज़ाहेर हुआ चाहता है। तो वो लोग ज़री और ज़री और अशतगफ़ाआर मशगूल यहां तक कि सुबह के आसार मग़रिब की तरफ़ नुमाया होंगे और आफ़ताब मग़रिब से निकलेगा। और उससे कुछ रोशनी न होगी और तमाम ख़लक उसे देखेगी और जब बड़ी निशानी ज़ाहिर हो जायेगी तो रौब ऐन हो जायेगा और उस बक़्त का ईमान इस तरा़ी (तरह से) होगा वो इसी सवाब से न फायदा करेगा। किसी को

ईमान उसका न था, के ईमान लाया होना फैला इससे। और आज ईमान लाता है या ना था उसने कमाई की होती अपने ईमान मे भलाई यानि नेक काम लोग ईमान की वे अमल के मातबर (विश्वास) नही करते यही आयत उनकी दलील है जो लोग ईमान की बेअमल के मातबर जानते है वो उस हुक्म को उसी रोज़ के साथ ख़ास करते है। कहते है कि लोग के ख़ैर से मुराद है यानि जिस तरह काफ़िर का ईमान उस दिन फ़ायदा न करेगा। उसी तरह वे आदमी यानि मुनाफ़िक़ का ईमान भी उस रोज़ सूदमंद न होगा। इमाम हसन बसरी रहमतुअल्लाह ने कहा कि मगरिब से आफ़ताब निकलने के केवल जो शख्स (व्यक्ति) ईमान रखता होगा और उसने ख़ैर न की होगी और जब यह निशानी देख लेगा फिर ख़ैर करेगा तो वह ख़ैर कबूल न होगी। मुआलम अल मज़लिस में लिखा है कि उस दिन ना काफ़िर का ईमान मकबूल (प्रिय) है न फ़सिक तौबा और इस क़ौल की ताईद करता है। वो मज़मून जो हदीस में आया है कि तौबा मे मनकता न होगी। जब तक कि आफ़ताब मगरिब से तुलना करें। कह ऐ मुहम्मद इंतज़ार करो उन निशानियों का तहक़ीक़ कि हम भी इन इन निशानियों के मुंतज़र है और जब ये निशानियाँ ज़ाहिर हो तो अफ़सोस है, तुमको और खुशी है हमको बेशक जिन लोगो ने पामन्दा किया दीन अपना के बाज़ अंबिया और बाज़े किताबो का तो ईमान और बाजो के साथ काफ़िर हो गये। गिरोह दो जैसे यहूद के इकहत्तर फिरके थे और नसारा (ईसाई) बहत्तर फिरके हो गये (महाप्रलय की निशानियाँ)

**प० 285** हज़रत शेख़ुल इस्लाम कुदस अल्लाह रुह ने फरमाया कि यानि दिल अल्लाह की तरफ़ रख तुम यानि ग़ैर खुदा को छोड़ दे (मालिक की राह में सभी कुछ समर्पण)



- प० 289** बेशक रब तुम्हारा अल्लाह वह जिसने पैदा किये आसमान ज़मीन, दिन-रात को मिकदार में, इस वास्ते कि आसमान के क्रिब्ल वह दिन जो आफ़ताब निकलने से गरूब (छिपने) होने तक एक मुद्दत मुईन से इबारत है। (रब की महिमा बेमिसाल)
- प० 290** मोर साँप की मदद से बहिश्त मे आया और आदम और हव्वा को गेहूँ खिलाने के लिये उकसाया मोर और साँप को भी बहिश्त से निकाला। आदमी साँप और मोर एक दूसरे के दुश्मन है। तिबयान में लिखा है कि इन दिन से आखिरत के दिन मुराद है कि हर दिन दुनिया के हजार वर्ष के बराबर है और पहिला क्रौल बहुत सही और मशहूर है और मशहूर है और अश्या को कलमा कुंन से पैदा किया।
- प० 292** नूह अलैहिस्सलाम ने क्रौम के हलाक हो जाने की दुआ की और खुदा के हुक्म से एक किश्ती बनाई और मोमिनो के साथ किश्ती में आए, हक्र तआला ने तूफ़ान भेजा, और सब काफ़िरों को हलाक कर दिया और हज़रत नूह अलै० उन लोगों समेत सलामत बच गये जो किश्ती में सवार थे, चुनांचे हक्र तआला ने फ़रमाया है। फिर निजात दी हमने नूह को डूबने से, और उन लोगों को भी जो उनके साथ थे और वह सब अस्सी (80) आदमी थे, चालीस (40) मर्द, चालीस (40) औरतें, (श्री कृष्ण जी का ब्रह्मांड लय करके सखियों के साथ योगमाया में पहुंचना।)
- प० 301** हक्र के इंकार करने के बाद कैसा हुआ, कैसा हुआ अंजाम, का रुतबा कारवों का कि, गर्क हो गए, हज़रत मूसा अलै जब मिस्र से चले, तो मदीन में हज़रत शुऐब अलै० के पास पहुंचे, और उनकी बेटी सफूरा को अपने अक़द निकाह में लाये फिर मिस्र

जाने का क्रस्द किया, और आश्ना-ए-राह में पहुंचकर पैगम्बरी पाई और आसा: और बैअफा के मअखबरे के साथ मख्सूस हुए, चुनांचे। इस किस्सा की तप्सील इस सूरत में आगे मजकूर है। और हक्र तआला ने उन्हें हुक्म फरमाया कि मिस्र में जाए और फ़िर्ओन को राह-ए-ख़ुदा की तरफ बुलाए और तकब्बर और दावा ख़ुदाई से मना करे, हज़रत मूसा अलै आए और मदत के बाद फ़िर्ओन से मुलाकात हुई, तो हज़रत-मूसा ने राह-ए-ख़ुदा की तरफ़ उसे बुलाया (सारा प्रकरण श्री जी साहिब व औरंगज़ेब बादशाह का है। )

**प० 316** मुर्ग चुने हुए मूसा ने पत्थर ऐसा आसा: मारा तो 12 चश्मे खाने की चीज़े और चूज़े (बारहवें इमामों का प्रकट होना 12वीं सदी में)

**प० 320** याद करो ए मुहम्मद सल्ल० जब ली तेरे रब ने औलाद आदम से उन पीठो से उनकी औलाद और गवाह कर दिया। उन्हें उनकी जातो पर उस इक़्रार का जो उन्होंने कहा बाज़ को गवाह कर दिया और फ़रमाया “अलस्तु बेरब्बि कुंम” क्या नहीं हूँ मैं रब तुम्हारा कहा उन सब ने कि क़ालू बला हाँ तू हमारा रब है (एक पार ब्रह्म की पूजा करनी जरूरी है)

**प० 321** बइलम का किस्सा उन लोगो में से जिन्हे हमने ज़न्नत के वास्ते पैदा किया। उनका ज़िक्र जब हो चुका तो अब हक्र तआला ने अहले-ए-जन्नत का ज़िक्र करता है। एक गिरोह है कि उसके लोग राह दिखाते हैं। साथ हक्र के और साथ हक्र के अदल करते हैं। अपने हुक्मो में (नाज़ी गिरोह की पहचान)

**प० 323** कैद उस इलम को करते हैं जो पोशीदा हो, (छिपी हुई बातें)

**प० 324** क्रियामत कब आयेगी। खुदा को मालूम है। क्रियामत साईत बसाईत कायम होगी। इतना बड़ा एक दिन खुदा के नजदीक एक साईत होगा। अल्लाह के सिवा किसी को इलम नहीं।

जाहिर न करेगा क्रियामत को उसके बजाहेर मगर वही जो जानता है

पोशीदा (छिपा) है इलम क्रियामत आसमानो और ज़मीनों में (क्रियामत का ज्ञान केवल पार ब्रह्म को ही है)

### **सूर: तौबा:**

**प० 350** मुत्तकी के चार निशान है। (ब्रह्मसृष्टि की पहचान)

1. हदो की हिफ़ाजत (सुरक्षा) 2. कमाई खर्च करना 3. अहिद (वायदा) वफ़ा करना 4. जो कुछ मौजूद हो उस पर कनाईल (संतोष) करना।

**प० 358** वह है खुदा जिसने फज़ल (कृपा) से भेजा। अपने रसूल साथ कुरान के बि महज़ हिदायत है और दीन इस्लाम हक़ है और भेजना इस वास्ते था ताकि जाहिर और ग़ालिब (बड़ा) कर दें। वह अपना दीन सब दीनो पर ज़ोर सब दीनो के एकाम मनसूख (रूद्ध) कर दे और आसमान से हज़रत ईसा अलैहिसलाम के उतरने के बाद मे होगा बि तमाम रुए ज़मीन पर दीने इस्लाम के सिवा और कोई दीन न रहेगा। अगर चाहत रखे सूरत से और वो लोग जो ईमान लाए हो तहक़ीक़ के वह तेरे यहूद और नसारे के आलिमो और जाहिदो से अलबत्ता आते हैं। माल लोगो के साथ रिश्त लेने के हुक्म देने मे और बाज़ रखते हैं सबको बि दीने इलाही से। (केवल निजानंद संप्रदाय ही सत्य धर्म)

**प० 369** वायदा किया है अल्लाह ने मोमिन मर्द और मोमिन औरतो से जन्नतों का मेवा:दार है। बहती है नीचे से उसके दरख्तों के नहरें हमेशा रहेगी। उनमें और वायदा किया है उनसे पाकीजा अच्छे मकानों का बीच अदन के जन्नतें अदन बहिश्त में एक शहर का नाम आता है। कि चश्मा तस्नीम उसी में है। और बहिस्त में दर्जा है

इमाम सालवी फ़रमाते हैं कि वह एक नहर है, जन्नत में कि उसके बाग़ उसके दोनों किनारों पर है और खुशी अल्लाह के नजदीक से मोमिनो को बहुत बड़ी है। बहिश्त और बहिश्त की नेमतों से

**प० 388** तहकीक़ कि आया-ए रसूल तुम्हारे पास ऐ अरब के लोगो तुम से तुम्हारी जुबान में बोलने वाला तुम्हारे कबीला में से इब्ने अब्बास ने लिखा है कि अरब में कोई ऐसा क़बीला न था जिससे हज़रत मुहम्मद सल्ल० का रिश्ता फ़र्माइ न हो।

और वह रब अर्श-ए-अज़ीम का इससे मुलक़ अजीम मुराद है या अर्श मकसूद जो मछुआरों का क़िबला है और फ़रिश्तो के तवाफ़ करने की जगह। अर्श की अज़म का हाल लिखा है अर्श के आठ हजार रुकन हैं और एक साईत में तीन लाख पाए हैं और एक पाए से दूसरे पाए तक तीन लाख वर्ष की राह है और सब राहे भरी हुई हैं। मेरे और सब बाँधे हुए फ़रिश्तो से (हर क़ौम में जुबान में पैग़म्बर आए हैं)

## सूर: युनूस

**प० 389** हक़ तआला फ़रमाता है। कि कसम खाता है अपनी नेमतों की जो तुझ पर थी अज़ल में और अपने लुत्फ़ करे जो तेरे साथ है। वजूद में और शफ़क़त कि जो तुझ पर होगी (मोमिनो पर मेहर)

**प० 390** पैदा किये आसमान और ज़मीनो कि इस आलम के अजसाम में सबसे बड़े है। छः दिन को मिकदार में दुनिया के दिनो के अंदाज से फिर क्रार पकड़ा अर्श पर कि सब मखलूकात में बड़ा है। (छः दिनों का वर्णन सृष्टि संरचना)

### सूरः हूद

**प० 416** अल्लाह ने कहा है कि आयत सैफ़ इस आयत को नासिध है और पैरवी कर ऐ मुहम्मद सल्ल० उस चीज़ की जो वही की जाती है। तेरी तरफ़ खुद उस पर अमल करके और दूसरो को पहुँचाकर और सबर करो दावत इस्लाम पर और उसके रज़ा पर जो तुझे पहुँचती है और तहम्मूल अख़्तियार कर यहां तक कि हुक्म करे अल्लाह तेरी नुसरत को या बुत-परस्तो के हुक्म क़त्ल करने का और अदल किताब से जायजा लेने का। अलस अहकाफ़ में फ़रमाया है कि इस्तलाह और अरफ़ी की निसबत हरूफ़ मुक्तआत है। इससे जो मुराद है वह मैं नहीं आती तो मुक्तआत के मायने पोशीदा भेद है और इसी क़ौल की आईद (लगने वाला) यह बात करती है कि साबी से मुक्तआत के मायने लोगो ने पूछे उन्होनें फ़रमाया कि यह अल्लाह का भेद है इसे न पूछे और बाज़े इस बात पर है कि मिनअल्लाह का यानि मे खुदा हूँ और आसूदो (सुमद्धि) की ताअत मैं खुदा हूँ और हर एक की उसके अमल के मुताबिक जज़ा दूँगा। (छिपे भेद क़ुरान पाक के मुक्ताअत शब्दों में)

**प० 418** और वह है जिसने कि पैदा किये आसमान और ज़मीन छः रोज़ में दुनिया के दिनो में से कि पहला रोज़ हफ़्ता का दिन होता है और आख़री रोज़ जुम्मा (शुक्रवार) और आख़री या आसमान

ज़मीन पैदा करने के केवल अर्श उसका पानी के पर, चंद तफ़सीरो में लिखा है कि इप्तदाए: खलकत(सृष्टि रचना) में हक़ तआला ने एक मलकूत पैदा किया और नज़र हैवत से इसे देखा और वह जौहर (तालाब) पानी हो गया। फिर हक़ ने हवा पैदा की पानी को हवा पर रखा और को पानी पर जगह दी और पानी पर अर्श और पानी की हवा पर ठहरने की फ़िक्र करने वाले बंदो को इबरत लेना है और हक़ तआला ने आसमान ज़मीन हवा अर्श, को इस वास्ते पैदा किया ताकि आजमाए तुम्हे (सृष्टि संरचना के छः दिन व जुमे का महत्त्व)

**प० 424** हाम, साम, याफ़िस नूह की किशती का वाक्या (बलराम, श्रीकृष्ण, कल्याण जी का प्रकरण)

**प० 429** राह हक़ और अदल पर है। जो कोई उस पर तवक्कुल करता है। वह उसे सीधी राह दिखा देता है। और ख़राब नहीं छोड़ता, बहरूल हक़ाईक में लिखा है कि सिरातुल मुस्तकीम वह है कि जो हक़ की तरफ़ तमाम हो, उसके ग़ैर की तरफ़ नहीं, जैसा कि हक़ तआला ने फ़र्माया है। (श्री जी साहिब जी की राह ही सीधी राह है)

**प० 432** इबाहीम ने 112 वर्ष की आयु में और उसकी बीबी की आयु 99 वर्ष में बेटा पैदा होने का बायदा (क्रादिर की कुदरत यानि मेहर-ए-हक़)

**प० 438** तहकीक़ (निश्चत) इन किस्सो में जो हमने बयान किया अलबत्ता इबरत उस शख्स के वास्ते जो ड़रे अज़ाब आख़िरत से, क्रियामत का दिन वह दिन कि हाज़िर किए गये, उस दिन अहलें ज़मीन और अहलें आसमान जब तक वह मुर्दा न हो जाए, क्रियामत क़ायम न होगी। जिस दिन आएगा वह रोज़ मशहूद तो न बात

करेगा कोई ऐसी बात जो फायदा पहुँचाए यह कि मगर हुक्म से और यह हाल मुआफ़िक़ खास में होगा और एक ऐसा होगा कि उसमें बात करने की भी इजाज़त न होगी, (क्रियामत का डर मोमिन को)

### सूर: यूसुफ़

**प० 469** और तिबयान में लिखा है कि हज़रत याकूब़ अलैहिसलाम ने कहा कि जब तक तुम हज़रत ख़ातम उल-नबी सैय्यद अल मुर्सलीन व असहाबा अज़मओन की क्रसम न खाओगे, बनी यमीन को मैं तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा। (हज़रत मुहम्मद सल्ल० की शोभा)

**प० 471** मुशरको में से इमाम जाहदी ने लिखा है कि कहा ख़ुदा के वास्ते फ़रिश्ते मौजूद हैं। आदमी को रसूल करके वह क्यों भेजता। अगर चाहता तो फ़रिश्तो को रसूल करता। हक़ तआला ने फ़रमाया कि और नहीं भेजा हमने तुमसे पहले रसूल करके मगर मुर्दों को के करने पूरा पड़ा है वादे गायब मज़तूल कारियेगा उनकी तरफ़ और हिफ़ज ने नहीं जमाँ मुतक़लम मारूफ़ का सियगा पड़ा है। के वो मर्द शहर और देहात के लोगो में से थे। वासद में इमाम हसन बसरी रहमतुल्लाह अन्हा से मज़कूर है हक़ तआला ने जंगल के आदमियो जीन्न और औरतों में से हरगिज कोई रसूल खलक (दुनिया) पर नहीं भेजा। फिर क्या शहर नहीं करते काफ़िर श्याम और यमन के ज़मीन में और साद और सबूद के दयार मे गुज़र नहीं करते, (नबी केवल आदमी है, होगा जिन्न या फरिश्ता नहीं)

### सूर: रअद

**प० 472** अलिफ़, लाम, मीम, रे, हरूफ़ मुक्ताआत उन कलमात से मुख़्तसर (संक्षिप्त) है जो सिफ़त इलाही पर दलालत करते हैं चुँनाचे



अलसर के मायने में कहा है कि अलिफ़ उसका आला का है और लाम उसके लुत्फ़ का और मीम उसके मुल्क की और रे उस की राफ़्त की और एक क़ौल यह है। (हरुफ़ मुक्तआत छिपे भेद)

**प० 472** फिर कशफ़ (प्रकट) किया अर्श पैदा करने का या क़रार पकड़ा उस पर कुदरत और हुक्म जारी करने के साथ या अर्श मुल्क हो।

**प० 474** और कहते हैं कि वह लोग जो काफ़िर हुए क्यों नहीं भेजी जाती मुहम्मद सल्ल० पर निगरानी उसके रब के पास से यानि वह मौज़िज़ा जो हम तलब (इच्छा) करते हैं। जैसे हज़रत मूसा का और हज़रत ईसा का मुर्दों को जिंदा करना हक़ तआला फ़रमाता है कि ऐ मुहम्मद सल्ल० के नहीं डराने वाला है यानि डराने के वास्ते भेजे गए हो। तुम पर यही पहुँचा देना है। बस तुम्हें निशानियाँ ज़ाहिर होने में क्या है और हर ग़िरोह के वास्ते राह दिखाने वाला है। यानि ऐसा पैग़म्बर जो ख़ास किया गया हो। एक ऐसे मौज़िज़े के साथ जो उस चीज़ की सूरत पर हो जो उसकी चीज़ पर ग़ालिब हो जैसे हज़रत ईसा के ज़माने में जादू का ग़ुल्बा या और हज़रत ईसा के ज़माने में तब की कसरत थी तो मूसा के समय में मौज़िज़े जो तुम माँगते हो वह तो उन्हीं के ज़माने के साथ ख़ास थे। (चमत्कार करना ज़रूरी नहीं)

**प० 480** जिस तरह से तुझसे पहले रसूल भेजे हैं उसी तरह भेजा हमने उम्मत में कि गुज़री है। उम्मतें ताकि पढ़ें उन पर वह चीज़ जो वही की है। हमने तेरी तरफ़ यानि क़ुरान और हाल यह है कि ईमान नहीं लाते साथ ख़ुदा कि रहमान उसका नाम है और इसकी तरफ़ फ़िरना लिखा है मेरा, (पार ब्रह्म की दयालुता)

**प० 470** यह जो बयान किया गया यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का। किस्सा ग़ैब की ख़बरो में से है। कि एजाज़ की दलीले ज़ाहिर करने को वही करते हैं। उसे तेरी तरफ़ से मुहम्मह सल्ल० खुश तू न था यूसुफ़ के भाइयों के पास जब उन्होंने अपनी राय यूसुफ़ को कुएं में डाल देने पर और वह मगर करते थे यूसुफ़ और याकुब के साथ और जब तुम वहाँ न था। और तेरी तक़्ज़ीब (खंडन) करने वाले यह जानते हैं कि यह किस्सा (श्री जी साहिब जी का स्वरूप)

**प० 471** मुशरिको में से इमाम ज़ाहिदी ने लिखा है काफ़िरों ने कहा ख़ुदा के पास फ़रमाते हैं आदमी को रसूल करके क्यों भेजता है। फ़रिश्तो रसूल क्यों नहीं भेजता। हक़ तआला ने फ़रमाया कि और नहीं भेजा, हमने तुझसे पहले रसूल करके मगर मर्दों को कि बक्रर ने यूँ ही पढा है यानि वही भेजी गई उनकी तरफ़, (इंसान ही पैग़म्बर हुए फरिश्ते नहीं)

**प० 472** वो हैं जिसने बुलंद किये आसमान यानि पैदा किये ऊपर उठा दिये बग़ैर सतून के उस पर आसमान क़ायम हो देखते हो तुम इन आसमानो को और बाज़ो ने ये मायने कहे हैं कि उठाए हैं आसमान बेसतून तुम्हारे देखने में तो इससे लाजिम आता है कि है। मगर दिखाई नहीं देते और वो उसकी कुदरत है। कि आसमान उसके सबब से बुलंद हैं फबायद-उल-सलूक में लिखा है कि हज़रत वाज़ी तआला ने आसमानों की बुलंद छत्तें वे ऐसे सतूनों की बुलंद कर रखी हैं, जिन सतूनो को देख सके। यदि आसमानों के छत का सतून है। मगर पोशिदा दिया और वो अदालत हो सकती है यानि आसमान और ज़मीन अदल के सबब क़ायम है। अर्श पैदा करने का या क़रार पकड़ा उस पर कुदरत हुक्म जारी करने के साथ या अर्श मुल्क हो और हक़ तआला ने उनका

क्रस्द किया हिफ़ाजत (रक्षा) और तदवीर के साथ और बराबर किया आफ़ताब महताब (सूर्य-चंद्र) की बंदी की सहूलतों के वास्ते। उस चीज़ के साथ जो उसने यदि यही हरकतों में से एक हद मुहाईयत तक कि अपनी गर्दिस पूरी कर ले या हरकत में है। उस माने तक कि हरकत मंकतह हो जाये यानि क्रियाम-ए-क्रियामत तक तदवीर करता है। हक् तआला अपने मलकूत के काम को, मौजूद करने, मादूम (नष्ट) करने, ज़िल्लत (बदनामी) देने, इज़ज़त देने, जिलाने, मार डालने से, बयान करता है। आयते कुरान की यानि अमरो नही मुफ़स्सल (स्पष्ट) बयान फरमाता है। या अपनी फ़ुरतर की दलील एक के बाद एक पैदा करता है। शायद कि तुम अपने रब के दीदार के साथ यानि जज़ा-ए-क्रियामत के दिन हक् तआला देगा, वो जबाव पाने का यकीन करो और जान लो कि इन चीज़ों को पैदा करने पर क़ादिर (समर्थ) है, वो दुबारा पैदा ज़िन्दा करने की भी कुदरत रखता है। और वो जिसने पैदा किया ज़मीन को पानी पर पानी ज़मीन पर लम्बी चौड़ी फैला दी, ताकि हैवानत (जानवरों) के फ़िरने की जगह हो। और पैदा किये इसमें पहाड़ मजबूत जमे हुए ताकि ज़मीन की पेंच हो जाए और पैदा की ज़मीन में पानी की नहरें जारी और सब नहरों में से पैदा किये ज़मीन में दो किस्म के मसलन सुर्ख-ज़र्द और स्याह सपेत और छोटे-बड़े और खट्टे-मीठे और सर्द-गर्म जंगल के और बाग के खुश्कतर और इसके अस्निन (प्रशंसा) का लफ़्ज़ (शब्द) उपज की जुजिन का ताकीद है। जैसा अपना कलाम में अर्बका (दान) हक् देना है। और खींच लेता है। राह को दिन पर यहा तक कि हवा जो रोशन थी तारीक (अंधेरा) हो जाती है और इसी में से दिन को रात पर ढ़ंक देना और खींच देना दरयाफ़्त हो सकता है कि हवा तैरगी की बाद रोशन हो जाती है लेकिन

के कुदरत की इन निशानियों और आसार में अलबत्ता खुली हुई निशानियां हैं। वास्ते उस गिरोह के जो ग़ौर और फ़िक्र करते हैं उन निशानियों में। (हक्र की साहिबी बेमिसाल है, सहूर करो)

**प० 478** जो चीज़ उतारी गई है तेरे रब की तरफ़ से सही और दुरुस्त है। उस शख्स के जो अंधा हो और कुरान से इंकार करे सिवाय उसके नहीं कि न नसीहत मानने वाले होते हैं। कुरान के सबब से साहिब अक़लो के जो अक़ले साफ़ हो गई बहम भी इंकार और झगड़े से। और वो लोग जो फ़साद करते हैं। इलाही जो उन्होंने रोज़ मिसाक में बाँधा है और नहीं तोड़ते हैं, उस अहद को और जो लोग मिलाते हैं उस चीज़ को कि हुक्म किया है अल्लाह ने साथ उसे ये कि बुलाई जाए वो चीज़ यानि रिश्ता रिश्तेदारों से या ईमान सब किताबों और रसूलों के साथ। इनमें बग़ैर फ़र्क किये हुए और डरते हैं, अपने रब के अज़ाब (गुस्से) से और ख़ौफ़ करते हैं सख़्ती से रोज़ हिसाब के और जिन लोगो ने सब्र किया नफ़्स (इंद्री) की मकरूह बातों और उनकी ख़ौफ़ों मुख़ालफ़त (विरुद्ध) की, पर या ज़िहाद पर अपने रब की रज़ामंदी चाहने की और क़ायम रखी उन्होंने नमाज़ जो फ़र्ज़ की गई, और खर्च किया उस चीज़ में से जो रोज़ी है। हमने उन्हें पोशिदा (छिपा) और उनलामियां और दफ़ा कर दी उन्होंने नेकी के सबब से बुराई और बाज़ों ने कहा है कि सफ़ा को इलम के साथ उन्होंने मुक़ाबला किया और की सलाम के सभी और मुनका को मारुद के साथ या गुनाह को तौबा: करके दफ़ा किया या मासियत को इबादत करके चुँनाचें हदीस मे आया हैं कि बुराई के बाद नेकी कर मिटा देगी उसे उल्माओं और तहक़ीक़ ने फ़र्माया हैं कि उन पर जब जुल्म हुआ, तो उफ़ कर दिया। और जिन लोगों ने उनको

महरुम रखा उन्होनें महरुम रखने वालों का। महरुम रखने के बराबर बदला दिया। और अगर किसी ने उनसे रिश्ता तोड़ा तो वो इससे मिले। वो गिरोह जिनमे ये सिफ़्तें हैं। अंजाम नेक यानि अमल की जगह दुनिया में भी और आक्रबत (परलोक) में और वो जगह क्या है जानते हैं ख़ास दाख़िल होने उनमें वो लोग। और दाख़िल होगा वो शख्स जो ईमान और तात से अरास्ता होगा उनके बापों में से और उनकी औरतों में से और उनकी औलाद मे से। और फ़रिश्ते दाख़िल होंगे हर दरवाज़े से उनके मकानों के दरवाज़ों में से। एनुल मुवानी में लिखा है कि दुनिया की रात-दिन की मिकदार (मात्रा) में फ़रिश्ते उनके पास तीन बार आयेगे। खुशख़बरी है तुम्हें हमेशा की सलामती कि बसबब इसके जो सब्र किया तुमने और कुव्वत और क़लूब में लिखा है कि इसके सबब से दुनिया मे फ़कीरी पर तुम है। और फ़कीरी सब सिफ़तो से ज़्यादा ख़ुदा के दोस्त है। इस वास्ते की हदीस में है कि रसूल ने बलालत से फ़रमाया कि ऐसा कर कि ख़ुदा के पास तू फ़कीर जा, पस धनी न जाए। ख़ूब है पीछा उस घर का जो उन्होने पाया। और जो लोग तोड़ते हैं। राह दी पैग़ाम ख़ुदा का जो उन्होंने किया है बाद उसे मज़बूत कर चुकने। इक्रार और कबूल करके और जो लोग कहा करते हैं वो चीज़ को ख़ुदा ने हुक़म फ़रमाया उसके साथ ये के मिलाए यानि रिश्तेदारी का हक़ बजाए या सब किताबों और रसूलों का ईमान। और ख़राबी करते हैं ज़मीन में कुफ़र जुल्म और गुनाह के सबब से वो गिरोह उनके वास्ते दूरी रहमत है और उनके वास्ते है बुराई अन्जान की दुनिया आख़िरत में और अल्लाह की सादा कर देती है राज़ी जिसे कहे बातें चाहता है। (हक़ को आजिज़ी/नम्रता पसंद है)

## सूर: इब्राहिम

प० 482 और वह जो हमने तुझसे बयान किया। उसमें से उस जन्नत की सिफ़्त भी की गई है। जो कल क्रियामत के दिन वायदे किये गये हैं। परहेज़गार तोरा कि इसमें दाख़िल होंगे। जारी है बराबर नीचे से उसके दरख़्तों के या जन्नतों के मकानों के नीचे से नहरें। मेवा उस पर हमेशा रहने वाला है। न ख़िलाफ़ दुनिया के मेवों के कि वह हमेशा नहीं है और इसी तरह साया भी इनका जाया न होगा। इमाम केसरी ने कहा है कि ख़ुदा है कि ईमान वाले आज साया क्रियात में हैं। कल क्रियामत के दिन जल में होंगे और आरिफ़ लोगों पर दुनिया और अक़बा में साया इनायत है और हमेशा जलजलील में है। (परमधाम का वर्णन)

प० 482 नाज़िल किया हमने इस क़ुरान को तेरी तरफ़ किताब मुहक़मः (निर्णय) के मनसूख़ और मुतगय्यर (परिवर्तन) होने को इसमें गुंजाईस नहीं या किताब हुक्म करने वाली हक़ और वातिल के दरमियान जुबान अरबी में अहल-ए-अरब को उसे याद करना और समझना। आसान हो और अगर मुताबियत करेगा तू मुशरिकों की ख़्वाहिश की है, कि तुझे अपने बाप-दादा के दीन के तरफ़ बुलाते हैं। या कि उसके साथ है जिस तरह आदमियों पर करने वाले फ़रिश्ते होते हैं और तक्रदीर फ़रिश्तों का नाज़िल होता है हुक्म इलाही से जिस पर वो चाहता है अपने बन्दों में से कि उसे इस्तेक़ाम साबित हुआ और जो मलाईका व फ़रिश्ता अंबिया पर नाज़िल हुऐ हैं उनकी ज़बानी हम यह कहते हैं कि यह इस्तिदार कर दो और डराओ और आगाह करो यह कि नहीं कोई ख़ुदा बुत है इबादत मगर मैं पैदा करने वाला के सब ख़लक को रोज़ी देने

वाला हूँ तो डरो मुझसे और मेरे सिवाय किसी कि इबादत न करे।  
(पारब्रह्म के सिवा कोई भी पूज्य नहीं)

**प० 483** हर एक के वास्ते हुक्म है लिखा हुआ हर एक अज़ल के वास्ते  
ख़ुदा के पास एक किताब है, कि ख़ुदा के सिवा ख़लक की अज़लो  
से किसी को इतला नहीं मिटा देता है, ख़ुदा जो चाहता है हुक्म  
के साथ और साबित करता है, जो चाहता है हिक्मत के साथ  
और उसके पास असल किताब तो लौहे महफूज़ और जितनी  
चीज़ें होने वाली है उसने लिखी है जो कुछ हो चुका और हो  
रहा है और जो होगा सब उसमें लिखा है। (ब्रह्मवाणी की महत्ता-  
यानि तारतम ज्ञानोदय)

**प० 484** कह मुहम्मद कि अल्लाह बस है ग़वाह दरम्यान मेरे और तुम्हारे  
इस बात पर कि मैं रसूल हूँ और उसके पास है इलम किताब का  
यानि लौह-महफूज़ का इलम और वह हज़रत ज़बराईल  
अलैहिस्सलाम है कि लोहे महफूज़ से वही लेते है या कुरान का  
इलम और वह मुसलमान लोग में। ज़ाद उल मसीर में लिखा है  
कि एलम कुरान हज़रत अली करमअल्लाह वाजिद है मा इलम  
तौरैत और वह अब्दुल बिन सलाम और उनके यार ईमानदार है।  
रजीअल्ला अब हम अजमाईन, तो इमाम माबिदी से मज़कूर है  
कि राफ़ता मोमिन की तसदीक और काफ़िर की तम्ज़ी या कुरान  
के नाम है अलरमानी कुरान किताब है कि भेजी हमने तेरी तरफ़  
ताकि निकाले तू लोगों को उस मज़मून के साथ दावत के सबब  
से तारीकी या कुफ़्र से तरफ़ रोशनी ईमान या क्या सुन्नत के।  
(कुरान ख़ुदाई इल्म है ग़ैब का)

**प० 485** हर क्रौम में उसकी ज़बान में किताब भेजी

**प० 486** फ़िर्ओन को इलहाम हुआ कि बनी इस्राईल से एक लड़का पैदा होगा जो उसे मार डालेगा तो उसने उन लड़कों को जन्मते ही मार देता (श्री जी साहिब जी का औरंगज़ेब से संघर्ष-धर्मयुद्ध)

शुक्र से एहसान फिर मारिफ़त फिर वसलत फिर बुलंद मतर्बा कुरबत (कष्ट) और उस पर शुक्र करने से तुम्हे हम अर्श और मुशाहिद की ख़िलवत गाह मे दाख़िल करेगे। इस कलाम हक्काईक़ इलम से मालूम होता है कि शुक्र दज्जाल (शैतान) आला। पर तरक्की करने का जीना (सीढ़ी) है

**प० 486** अहनान से इब्राहिम तक तीस करन गुजरे अरबो का बड़का करन 30.40

**प० 489** इशारा नई जमाअत के आये का (नाज़ी गिरोब का प्रकट होना)

**प० 482** उस दिन कोई दोस्त न होगा। न ख़रीद फ़रोख़्त कर सकेंगे।

**प० 491** ईमान का दरख़्त कि उसकी जड़ तो मोमिन के दिल में जमी हुई है और उसके अमाल आला इत्तईन की तरफ़ बुलंद है। और उसका सवाब हर वक़्त मोमिन को पहुंचता है। (मोमिन के दिल में ईमान यानि हक़ का स्वरूप का दरख़्त है)

### सूर: हिज़्र

**प० 498** औरत हक़ीक़ कि हमने पैदा किया और ज़ाहिर कर दिये आसमान मे बुर्ज़ बारह और आरास्ता (सुसुज्जित) कर (बारह इमाम बारहवीं सदी हिज़री तक)

**प० 500** आदम ने अपनी रुह का फ़ुंग बुत मिट्टी से बनाने के बाद इबलीस को बहिश्त से निकाला। रोंदा गया क्रियामत के रोज़ तक तुझ पर लानत है। (आदम को बनाया मिट्टी से, शैतान को लानत हुई)



**प० 501** इबलीस 40 वर्ष मुर्दा रहेगा फिर उठाया जाएगा।

दोजख वास्ते सात दरवाजे हैं। हर दरवाजे के वास्ते गुमराह हूँ मैं। एक हिस्सा क्रिस्मत किया गया है। दरवाजों से तब वे मुराद हैं। हर तब के वास्ते एक क़ौम मुर्क़र है और मुतमुईन हो चुकी है। ज़हन्नुम मोहद गुनहगारों की जगह हैं व तीन सार का मकाम है। हब्सा यहूद की जगह है। सईर बेदीना का ठिकाना है। आतिशपरस्तो की करारगाह है। हजीम मुशरिको का महल है। यह जो सब तबकों से नीचे है। किया मुनाफ़िको के लिए मुर्क़र इमाम अबु मसूर ने तावीलात में कहा है कि दरवाजों से तबके मुराद हैं और जब कि मोमिन दोजख़ में न रहेंगे तो उनके वास्ते कोई तबका नहीं पहला तबका दहरियों के नामजद हैं। दूसरा सनोया और अरब के मुशरको के वास्ते। तीसरा अबराइमा के लिए कि मुतकलन रिसालत के मुनकर हैं चौथा यहूद के वास्ते। पांचवा नसारें के लिए। छठा मंजूस। (शैतान इबलीस ने आदमियों को गुमराह किया लेकिन मोमिन को नहीं करेगा गुमराह)

**प० 502** बहिश्तों का वर्णन मोमिन का मोमिन के साथ व्यवहार (सुंदर साथ का व्यवहार एवं परमधाम वर्णन)

### सूर: नहल

**प० 507** और बरतर हैं उससे जो वो शरीक़ (मिश्रित) ठहराते हैं यानि (कारण) इस बात से बहुत बुजुर्ग (महान्) आत्माएँ हैं। उतारता है फ़रिश्ते वही (वाणी) के साथ या क़ुरान के साथ कि वो दिलों की जिंदगी का सबब हैं या मलायका को अरवाह के साथ भेजता है। और वाजों ने कहा है कि सब एक क़ौम है। दरगाहे इलाही के मुर्क़र लोगों में और तिबियान में लिखा है जो फ़रिश्ता नाज़िल

(प्रकट) होता है। सब उसके साथ निगहबान (संरक्षक) है। जिस तरह आदमियों पर हिफाजत (रक्षा) करने वाले फ़रिश्ते होते हैं और बहरे तकदीर फ़रिश्तों का नाज़िल होता है। हुक्मे इलाही से जिस पर वो चाहता है। अपने बन्दों में से कि उसे नबूवत का इस्तेकाम साबित हुआ और जो मलायका (देवता) व फ़रिश्ता अंबिया पर नाज़िल हुए हैं, उनकी ज़बानी हम ये कहते हैं ये इस्तिहार कर दो और डरावों और आगाह करो। ये कि नहीं कोई ख़ुदा बुत हैं, इबादत मगर में पैदा करने वाला के ख़लक को रोज़ी देने वाला हूँ तो डरो मुझसे और मेरे सिवा किसी कि परस्तिस (प्रार्थना) न करो। (मोमिन एक पारब्रह्म के मानने वाले तथा उनके साथ फ़रिश्ते हैं)

**प० 511** और कहते हैं वह जो भेजा है, अगलों के किस्से यानि कुछ भी नहीं भेजा और जो कुछ पढ़ता है अगलों को कहानियां हक़ फ़रमाता है कि मर्दों ने यह काम किया ताकि उठाएं बोझ अपने गुनाह का, (क़ुरान सच्चा ज्ञान है। किस्से-कहानी एक संकेत है। भविष्य का)

**प० 514** तहक़ीक़ कि कि भेजा हमने हर उम्मत और हर ग़िरोह में एक पैग़म्बर जैसे तुम्हें उस उम्मत में हमने भेजा है और सब रसूलों को हमने कह दिया है कि यह, (सभी भाषाओं में अवतार आये हैं)

**प० 515** और नहीं कर के भेजा मलायको का। तुझ से पहले मगर मर्दों को आदमियों को, (हमेशा आदमी ही पयम्बर बने औरत नहीं)

**प० 525** और याद कर एक मुहम्मद सल्ल० वो दिन कि उठाएंगें हम हर ग़िरोह में एक गवाह उनकी अफ़हाल और अक़वाल पर उनके जातों से यानि उस पैग़म्बर को जो उन्हीं में से उन पर माबूद

(नेक) हुआ था। और चाहेंगे हम तुझे भी गवाह उस गिरोह पर यानि तेरी उम्मत पर के मोमिनों की तसदीक ओर मुशरिकों कि तकजीर पर तू गवाह दे, तब में भी शाहिद दूं, और नाज़िल किया है हमने तुम पर क़ुरान बयान साफ सब चीज़ों के वास्ते के दीन दुनिया के इस अम्र इसमें मुफ़स्सिल मुज़ज़मिल (संक्षिप्त) और मुज़ज़मिल बयान में। (क़ुरान में मोमिनों की गवाही)

और खुशख़बरी है ज़न्नत की मुसलमानों के वास्ते ख़ास बेशक रूहअल्लाह हुक़म करता है साथ रास्ते के और हुक़म फ़रमाता है भलाई का, इबादत करने वाला ख़ुदा को देखता है। (नेकी का बदला नेकी)

**प० 529** जो करे काम अच्छा मर्द या औरत में से और वह ईमान वाला हो। इस वास्ते कि जब तक ईमान के साथ अमल न हो तो सबाब का तहक़ीक़ नहीं रखता। यह तो ज़रूरी ज़िंदगी देंगे। हम उसे दुनिया में ज़िंदगी अच्छी यानि रिज़क (रोज़ी-रोटी) हलाल (नेक) हम अता करेंगे ताकि उसके खाने-पीने की चीज़ें पाक हों। एक क़ौल है कि हयाते-तैय्यिब (पवित्र जीवन) बहिश्त में होगी। (नेक रोज़ी हासिल करे)

**प० 530** जब हम बदलते आएत नासिख़ (रद करना) की जगह पर आएत मनसूख़ के और ख़ुदा बड़ा जानने वाला है उस चीज़ को जो नाज़िल करता है। और हिक्मत और मसलिहत की जगह से मनसूख़ कर देता है। कहते हैं काफ़िर सिवा इसके नहीं है मफ़तरी है। ख़ुदा पर इफ़्तिराह (हर्ष) करता है और अपनी तरफ़ बातें बना लेता है। ऐसा नहीं है जो वह कहते हैं बल्कि बहुतेरे उनको नहीं जानते। मनसूख़ करके दूसरे अहक़ाम जारी करने की हिक्मत कह दे कि उतारा है उसे यानि क़ुरान को एक पाक ने कि ज़बराईल

पाक है तेरे रब के पास से साथ हक़ के ताकि साबित रखे उन्हें जो ईमान लाए हैं और उनके सब एतमाद (विश्वास) को इस बात पर मजबूत कर दे कि यह अल्लाह का कलाम यानि आएत मंसूख को सुने, (पुरानी आयत रद करके नयी आयत का अवतरण ज़बराईल द्वारा वही आना)

**प० 531** बदला लेने की बजाए सब्र करो (संतोष का फल अच्छा)

### सूर: बनी इस्राईल

**प० 537** मेराज का बयान दो कमान का फ़र्क नहीं पहुंचाई ज़बराईल रास्ते में रुक गए।

बुराक भी रुका फिर रफ़-रफ़ के तख़्त पर

रफ़-रफ़ नाम मकाम अस्त्राफील का नाम मरकब (सवारी) थोड़ा बहरूल हकाईक नफहात अलांस (अछर धाम ज़बराईल का मुक़ाम है, इश्क़-ए-हकीक़ी केवल परमधाम में)

**प० 536** पाकी और बोए वो उसके वास्ते है, जो बुर्जुगी की ज़हद से ले गया अपने बंदे का मुहम्मद सल्ल० एक मेराज मंजिल से ऐसी मस्जिद की तरफ़ अक्सा मस्जिद जो बहुत दूर है शाम की ज़मीन कि हमने उसे वही उतरने की जगह अंबिया कि इबादतगाह कि जगह वो ज़मीन मुबारिक़ दरख़्तों और नहरों से घिरी हुई है। उस जगह हम मुहम्मद सल्ल० को ले गए ताकि दिखावे हम उन्हें कुछ दलीलें अपने कुदरत की। थोड़ी ही देर में मक्का से मुल्क शाम को पहुँच गए और बैतुल मुक़द्दस को देखा। और अंबिया को मतला: हुए मेराज सिर्फ़ वाअस्त के बारहवें साल हुई। मेराज किस महीने में हुआ इसमें मतभेद है। मक्का से बैतुल मुक़द्दस

मुहम्मद सल्ल० का तशरीफ़ ले जाना नाशुक्रानी से साबित है।  
 उसके मुनकर काफ़िर है। अक्सर अहले इस्लाम का ऐतकाद इस  
 बात पर है कि हज़रत को अर्श में जिस्म और रुह के साथ जगाने  
 में वाक्याफ़ हुआ। जो इसको नहीं मानते वो मुनकर हैं। इस सबब  
 को हज़रत ज़बराईल एक गिरोह के साथ हाज़िर हुए। और रसूल  
 को उनकी बीवी उमहानी के हुज़रे से मस्जिद उल हराम ले गए।  
 सीना मुबारिक़ साफ़ किया दिल हक़ मंजिल धोकर फिर अपनी  
 जगह पर रखा। फिर बुराक़ पर सवार किया और थोड़ी देर में  
 बैतुल मुकद्दस पहुंचा दिया। सही रिवायत यह हैं कि मुहम्मद  
 सल्ल० ने बैतुल मुकद्दस में मलायका और अंबिया को देखा  
 और उनकी इमामत की फिर बैतुल मुकद्दस के पत्थर से मुराद  
 पर या पर ज़बराईल पर सवार होकर मेराज पर गए। पहले  
 आसमान पर हज़रत आदम दूसरे पर, हज़रत याहया और ईसा  
 तीसरे पर, हज़रत युसूफ़ चौथे पर, हज़रत याफिस पांचवें पर  
 हज़रत हासन, छठे पर हज़रत मूसा, सातवें पर हज़रत इब्राहिम  
 को देखा, और उनको सलाम किया। सतकार के साथ सभी ने  
 जवाब दिया सिद्रतुलमुन्हा बैतुल मामूर हौज़ कौसर नहर-उल-  
 रहमत देखी और हज़रत ज़बराईल हिजाब नूर के करीब आप के  
 साथ न जा सका और दुआ (प्रार्थना) की अगर जरा भी में बढ़ूं  
 तो जल जाऊं। वहां से नूर और जुलमत के हिजाब को लांधते  
 हुए ऐसे मकान पर पहुंचे के बुराक़ भी पलने से बाज़ रहा। फिर  
 आप रफ़-रफ़ पर आप सवार हुए और पाया अर्श के करीब पर  
 पहुंचे। और उज़्र बार-ए-इलाही से ख़िताब सुना। करीब हो जा  
 मुझसे और हर बार मुहम्मद सल्ल० को और ही तरक्की हासिल  
 हुई। यहां तक की बिछोने पर क़दम मुबारिक़ रखा और वहां से

पैदल ही नज़रगाह पर पहुंचे। फिर था फ़र्क दो कमान कि ख़िलवतें खास में दाख़िल हुए, फिर वही पहुंचाई अपने बंदे कि तरफ़ जो पहुंचाई फेर मुहम्मद ने इन्हीं फरियाद से मालिक की तस्बीह (स्तुती) की। और सलाम तुझ पर ऐ नबी, और रहमत-अल्लाह की और उसकी बरकतें को ख़िताब से सम्मानित हुए और इस सलाम कि ख़िलवत में अपनी उम्मत को भी दाख़िल फ़रमाया और सलाम हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर और फिरते वक़्त उम्मत और उसके दर्जात के वास्ते मुहाईयन हुआ और आप बैतुल मुकद्दस में फिर आए। और मक्का मुअज्जमा कि तरफ़ मकबूज़ा हुए। राह में कुरैश के काफ़िले देखे, और इस सफ़र मेराज में तीन साईत या चार साईत की देर लगी। लिखा है कि जब रात गुजरी और सुबह हुई तो आपने मेराज का ही क़िस्सा बयान फ़रमाया। मुसलमानों ने तसदीक की और काफ़िरों ने कहा कि ये बात अक्ल से बहुत बड़ी है। बैतुल मुकद्दस की निशानियां पूछो। फ़ौरन वो मस्जिद नजरें अनवर के सामने सूरत पकड़े मौजूद थे। काफ़िरों ने अपने काफ़िलों की खबर पूरी आपने विस्तार से कह दिया तोफ़ीक। हज़रत मुहम्मद सल्ल० को मेराज पर बुलाए ताकि आप खल्क और ख़िलकत की निशानियां देखें और उनका हाल अहले उल्मां से कहे एक क्रौल के मुआफ़िक मुहम्मद सल्ल० को अपना कलाम सुनाया और अपनी कुदरत लाजबाब की निशानियां दिखाई। नफ़गत अल्लास में मज़कूर है कि बेशक मुहम्मद सल्ल० वो किताब सुनते थे, उनके कही और वो चीज़ देखते थे जो उनको दिखाई। जो हमारे जलाल और जमाल के साथ मज़कूर है बेशक सुनता है हमारे सुनाने को देखता है, हमें दिखाने को। (मुहम्मद साहेब द्वारा परमधाम दर्शन का वर्णन)

**प० 545** सलमी ने लिखा है कि खुदा के अहद (क्रम) है। आदमी के हाथ पावों से अदब। जान से फ़राईज (कर्तव्य) अदा करना। दिल से खौफ़ और डर और रूह से यह अहद है कि मकाम क़र्ब से दूर न हो और उसके सिरस (जुड़ना) यह कि मासिवां-अल्लाह के मुशाहदा करें और हर अहद की बाबत (संबंध) आदमी से सवाल किया जाएगा। (इन्सान का दायित्व नेक होना)

**प० 552** यानि या रसूल हमने शब-ए-मेराज में जो कुछ तुम्हें दिखाया और तुमने देखा। वह ख़लक में फ़िल्ता (मतभेद) पड़ने का सबब हुआ। इस वास्ते आपने जब मेराज की ख़बर लोगों को सुनाई तो बाज़े कुछ मुसलमान मुर्तह हो गए और मुनाफ़िको ने ताना देना शुरू किया और क़ादिर का इंकार ज्यादा हुआ और मोमिनों ने तस्दीक की और नहीं बयान किया हम दरअसल लानत किए हुए को क़ुरान में दोज़ख़ में जहन्नुम का दरख़्त उजना और दोज़ख़ की आग पत्थर को जला देती है। ऐसी बातें सुनकर इन बातों पर ईमान न लाते थे। इबलीस का किस्सा आदम को मनदान किया और लानत की थोड़े से लोगों को इब्लीस गुमराह न कर सकेगा। (मोमिनों में मतभेद - अलग फ़िरके बनना)

**प० 556** बुत के पुजने वालों की सिफायत (सिफारिश मोक्ष की) न होगी।

**प० 557** पस जाग वह क़ुरान यानि नमाज़ के साथ ज़्यादती है, (फज़ीलत) है तेरे लिए चाहिए कि रखेगा तेरा खुदा मुकाम पसन्दीदा में मकाम सिफ़ायत वहां सब मुहम्मद सल्ल० की तारीफ़ करेंगे और सब पर मुशर्रफ़ होंगे और जाद उल मसीर में लिखा है कि क्रियामत के दिन हक़ तआला हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अर्श पर बैठा लेगा और लबाब में अमीर-उल-मोमनीन हज़रत उमर फारूक़

से मनकूल है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मकाम  
 महमूद को तफ़सीर में फ़रमाया है कि हक़ तआला मुझे नजदीक  
 करेगा और अर्श पर अपने साथ बिठा लेगा और हदीस शरीफ़ को  
 इबारत यह है, नजदीक बुलाया अल्लाह ने मुझे और फिर बैठा  
 लिया। मुझ को अर्श पर और महीत के माईने वहीं कहते हैं जो  
 अंदीत और मनज़लत ही मंजिल नहीं और मक़सूद मकानत ही  
 मकान नहीं अमसअलज़ीन ने लिखा है कि अर्श पर अलाजलशाना  
 का क्रार पकड़ना इस तरह पर नहीं कि उसे छू जाए ताकि अर्श  
 उस का मकान हो जाए बल्कि वह अब भी उसी सिफ़त पर है  
 जिस पर अर्श पैदा करने के क़ब्ल थे। इस वास्ते कि अज़ल से  
 अब्द तक अपनी जात से कायम है तो हज़रत मुहम्मद सल्ल० को  
 अर्श पर बैठाना, उसे अपने और अर्श पर बैठाने से मक़सूद मुहम्मद  
 सल्ल० की सत्कार एनुल मसली में लिखा है कि मकामे महमूद  
 अर्श में एक मकान है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० की बुर्जुगी उसको  
 सब से ज़्यादा करेंगे और एक क़ौल यह भी है कि मकाम-ए-  
 महमूद वहां है, जहां हज़रत मुहम्मद के वास्ते दस्ते मुबारिक़ में  
 लवाय हम देंगे और कोई पैग़म्बर न होगा। हज़रत आदम हो या  
 उनके सिवाय और कोई हज़रत ही के लिवा यानि झंडे के नीचे  
 होगा। साहिब फंतुआ कुदस सरा ने लिखा है कि मकाम महमूद  
 एक मकाम है, सब मकामों का मुर्ज़ा और तमाम अस्मा इलाही  
 का मंजर कि मकानों में मुरतस है और वो हज़रत मुहम्मद के  
 वास्ते ख़ास है। और दरवाज़ा सिफायत का इसी मुकाम पर खुलता  
 है और बहरुल हकास में लिखा है कि मुकाम महमूद अल्लाह है  
 और हज़रत मुहम्मद का क़यास हक़ के साथ अपने नफ़स के  
 साथ नहीं। जमान ईसारत से मुकाम महमूद है।



**प० 559** रूह के बाब में ये आयत नाज़िल हुई। रूह की कैफियत जिससे इंसान का बदन ज़िंदा है कि ए मुहम्मद सल्ल० ये रूह अम्र परवरदिगार से है। यानि उन मखलूकात में से जो अम्रे कुंन से पैदा हुए और उन चीज़ों में से है जो खुदा के इलम के साथ मकसूस है और अल्लाह जिलशाना के सिवाय उसे कोई न जानता और नहीं दे गए हो तुम इलम में से मगर थोड़ा सा इलम-ए-इलाही की बानिसबत सिवा शेख अबू-मदीन अकमदिन मग़रिबी कुदस सरा में फ़रमाया है कि ये थोड़ा सा इलम जो हक़ तआला ने हम को दिया ये हमारी मलक नहीं। बल्कि हमारे पास रिवायत है। (मांगना ख़ैरात) और हम इसमें से बहुत इलम को नहीं पहुँचे हैं और हम हमेशा ज़ाहिल हैं। और ज़ाहिल को इलम का दावा नहीं पहुँचता और अगर हम चाहे तो अलबत्ता ले जाएं उस चीज़ को क़ुरान में से। वहीं कि है हमने तेरी तरफ़ यानि सीनों आर वकों पर से हमें मिटा दे। फिर न पाएं तू अपने वास्ते साथ इसके यानि रसूल के जाने के बाद तुम न पावोंगे। हम पर कोई वकील कि इसको फेर ले और सीनो और वकों (पन्नों) में फेर लावें मगर रहमत है तेरे रब की तरफ़ से कि उसे बाक़ी रखता है और मिटाता नहीं बेशक उसका फ़ज़ल है तुझ पर बड़ा कि उसने तमाम औलाद-ए-आदम का तुमको सरदार कर दिया और रसूलों का ख़त्म कर दिया और ले आए मुहम्मद सल्ल० और मकाम महमूद तुमकों अता किया और क़ुरान तुम पर भेजा और ए तुम्हारी उम्मत में रहेगा। (मोमिन और जीव का भेद, खुदाई इल्म मोमिन के पास)

**प० 562** मूसा की करामत (चमत्कार) (श्री जी के एक चमत्कार का प्रकरण)

## सूर: कहफ़

प० 566 दो आदमी 309 साल तक सोते रहे।

तफ़्सीर लिखा है कि ने बादशाह के हक़ में दुआ की और अपने ठिकानों पर सोये रहे और उनकी रुहें क़ब्ज़ कर ली गई तफ़्सीर सलावी में मज़कूर है कि मुहम्मद सल्ल० को ये आरज़ू हुई कि असहाब काहफ़ को देखे पस ज़बराईल अमीन नाज़िल हुए और ये बात कहीं या रसूलअल्लाह आप इन्हें दुनिया में न देखेंगे। मगर अपने असहाब में से चार बड़े-बड़े सहाबियों को आप भेजे। उन्हें आपके दीन की दावत करें। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया क्यों कर भेजों और जाने को हुक़म किसे करूं। ज़बराईल ने कहा कि अपनी चादर मुबारिक़ बिछा दीजिए और अमीर-उल-मोमनीन अबु बक्र कामा उमर फ़ारुक़ कामा अली मुर्तज़ा और अबू ज़र से हुक़म कीजिए कि एक कोने पर बैठे और उस हवा को जो हज़रत सुलेमान को मुअस्सर थी, तलब कीजिए। इस वास्ते कि हक़ तआला ने उसको उठाकर उस ग़ोर में ले जाएं हज़रत मुहम्मद ने ऐसा ही किया। ग़ोर (गुफ़ा) के मुंह पर पहुँचे और पत्थर हटाया। असहाब कैफ़ के कुत्ते ने रोशनी देखी तो और झपटा। जब उसकी निगाह सहाबा कवार पर पड़ी तो दुम हिलाने लगा और सिर से इशारा किया कि आइए। सहाबा कवार ने ग़ोर में दाख़िल हो कर कहा सलाम अलेकुम कहा हक़ तआला ने रूहें उन ज़िस्मों में दाख़िल कर दी। असहाब कैफ़ उठ खड़े हुए और सहाबा ने जवाब दिया सहाबा ने कहा के नबी ने तुम को सलाम कहा है। जवाब में कहा मुहम्मद सल्ल० पर सलाम हो फिर सहाबा कवार ने उन्हें दीने इस्लाम को दावत की और उन्होंने क़बूल

की। फिर दुबारा कहा कि मुहम्मद को हमारा सलाम पहुंचाना। फिर अपने मकाम पर सोए रहे। फिर हज़रत ईसा रूहअल्लाह हस्त के करीब ज़िंदा होंगे और अख़रूल इमाम मुंहमद महदी साहिबुज्ज़मा उन पर सलाम करेंगे और वे जबाव देंगे। फिर मर जाएंगे तो क्रिमामत के दिन उठेंगे। गर्ज के जब तन्दुल्ल और उसके साथियों ने ये सब कुछ देख लिया तो बोले कि इन पर एक दीवार बना दो कि लोगों की निगाह से छुपे रहें या इस वास्ते की इस बिना के सबब से। (हज़रत ईसा रूह अल्लाह और आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्ज़मा श्री जी साहिब जी का प्रकट होना)

**प० 569** रसूल आदमी है फ़रिश्ता नहीं।

**प० 571** सोच कर पढ़ना चाहिए। जवाहर उल तफ़सीर

# तफ़सीरे हुसैनी ( कादिरी/हादी )

## जिल्द दोवम ( दूसरा )

### सूर: कहफ़

प० 4 मूसा व ख़िज़ का क्रिस्सा

दीवार जिसको ठीक किया ख़िज़ ने नीचे एक तख़्ती ज़मरूद के पर लिखा था बिसमिल्लाह्रिहमार्निरहीम मुझे उस से तःअज़ुब है कि ख़ुदा के हुक़म और तक्रदीर से क्यों कर ग़मगीन होता है और जो सुख की रजाकी पर ईमान लाया उससे तःअज़ुब करता हूं कि अपने को क्यों तकलीफ़ और मेहनत में डाला है जो ताकि तसदीक़ करते हैं उससे हैरानी है कि उमर ख़ुशी में क्योंकि बसर करता है और जो क्रियामत के हिसाब होने को ईमान रहता है उससे तःअज़ुब है कि क्यों ग़लत करता है और दुनिया दुनी और उसके तगय्यर और दुनियावरों के हालात के इंक़लाब को जानता है। उससे तःअज़ुब है कि दिल दुनिया से क्यों अटकाता है।

जुल कुनेर्न सिकंदर याजूज़े-माजूज़, अष्टधातु की दीवार, सूर: फूकना कायरों के हिसाब मुन्कर और कुरान के दरम्यान हिजाम जन्नतों में सबसे बुलंद दर्जा फिर्दोस का है। इस वास्ते के हज़रत रसूल ने फ़रमाया है। जब तुम ख़ुदा से माँगों तो फिर फ़िर्दोस मांगो और एक क़ौल ये है कि जन्नतों के नामों में एक फ़िर्दोस है कि ईमान वाले वहा उतरेगे हाल ये हैं। कि हमेशा रहेगें उन जन्नतों में से कोई बदला न ढूँढेगे वहा से दूसरे मकान में जाने इस वास्ते कि उनको सब मतलब वहीं मिल जायेगें अहमद अगर सुमुद्र को घेरे हुए इस रोशनाई से,

## सूरा:-मरियम

इलाही में मज़कूर है कि रसूल मुहब्बे सुप्पियान अकरम की तीन सूरते हैं। एक सूरत बसरी जैसा कि हक़ तआला ने फ़र्माया, कि ऐ मुहम्मद सिवाय इसके नहीं की में भी बसर हूँ तुम्हारी तरह। दूसरी मलकी जैसा खुद हज़रत ने फ़र्माया बेशक मैं नहीं हूँ। तुम में से किसी किं मिसल। मैं रहता हूँ अपने रब के पास। वह खिलाता है मुझे और पिलाता है मुझको और तीसरी हकी जैसा कि खुद आपने फ़र्माया मेरे वास्ते अल्लाह के साथ एक वक़्त है के नहीं गुंजाईस रखता। उस वक़्त मेरे साथ कोई मुर्क़रम फ़रिस्ता, न नबी भेजा हुआ और इससे भी खुली हुई ये हदीस है जिसने मुझे देखा उसने हक़ देखा और हज़रत ने हक़ तआला को हर सूरत में जनाब रसूले अकरम सल्ल० के साथ कलाम और है। इबारत में वाक्य हुआ है। सूरत बसरी में मर्तब कलमें जैसे, कुल हूँ अल्लाहु अहद मलक हरूफ़ के निशान ये है कि अल्लाह एक है। हकी फेर वही भेजी अपने वन्दे की तरफ़ वही भेजी। (तीन सूरत से आशय 1. अरब की लीला मुहम्मद सल्ल० के द्वारा 2. ईसा रूह अल्लाह देवचंद्र जी की आड़ीका लीला 3. इमाम महदी साहिबुज्ज़मां की जागनी लीला)

**प० 10** और पैदा करे उस जहांन में जिसे तुम नहीं जानते। ज़िकरिया की पुकार पर याहिया बेटा बख़्शा (प्रदान) जबकि उनकी उमर 100 और उनकी बीवी (पत्नि) 98 वर्ष की थी। शरीर कमज़ोर और सिर के बाल सफ़ेद थे। (देवचंद्र जी का नजरी पुत्र, मेहराज जी)

**प० 15** ईसा के बाब में नसारा के तीन (3) गिरोह हो गए। नस्तूरिया ने ईसा को ख़ुदा का बेटा कहा। याक़ूबिया ने अल्लाह कहा और

मलकानिया ने तीन ख़ुदाओं में से तीसरा ख़ुदा कहा तौबा: बहरहाल उनके जो काफ़िर हुए और तअज्जुब में रहे हाज़िर होने से बड़े दिन में क्रियामत का दिन है। (ईसा के 72 बहत्तर फ़िरके हुए)

**प० 18** और याद कर कुरान में इद्रीस का क्रिस्सा हज़रत इद्रीस हज़रत शीश के पोते और हज़रत नूह के परदादा उनका नाम अखनूह था, आदम का दर्स देने की वजह से इद्रीस लकब हो गया, कलम से पहले ख़त उन्होंने लिखा नजूम का हाल पहले उन्होंने बयान किया (सीना) सिलना पहले उन्होंने सिया उन पर तीस (30) सहीफ़े नाज़िल हुए और जामा रवि अव्वल में लिखा है कि आदम अलै० की वफ़ात के सौ (100) बरस के बाद पैदा हुए। वह था सच्चा ख़ल्क को हक़ तआला की तरफ़ से ख़बर देने वाला (श्री जी साहिब की इमामत व सनंध ग्रंथ का अवतरण)

**प० 20** और जन्नत में अगर ये दिन न होगा। न रात मगर निशानियां होगी। कि उनसे दिन रात की निकार (बैर) पहचानोगे। एनुल मुआनी में लिखा है कि पर्दा छोड़ने और दरवाज़ा बन्द करने से रात का वक़्त मालूम होगा। और पर्दे उठने और दरवाज़े खुलने से दिन और तिबियान में लिखा है सबकी हूरें खिदमत करेगी और दीन की गुलमान: (दास)। (परमधाम वर्णन)

**प० 22** पांचों नमाज़ या चारों कलमें सुब्हानअल्लाह व अलहम्दुलिल्लाह। व ला-इलाह इल्लिल्लाह व अल्लाहु अकबर (तारतम ज्ञान)

**प० 23** कसम ख़ुदा की कल क्रियामत को अलबत्ता दिया जाऊंगा जो इबादतों की सवारियों पर सवार होंगे वह बहिश्त के तालिब (इच्छुक) है। उनको बहिश्त में ले जाएंगे और जो लोग हिम्मतों की सवारियों पर सवार होंगे वह ख़ुदा के तालिब है। उनको

कब्र रहमान में लायेगे, तालिबानें जन्नत और तालिबानें रहमान में बड़ा फ़र्क है। क्रस्फुल असरार में लिखा है कि मंसाद दनिवरी कुदस सरा नज़ा के हाल में थे। एक फ़कीर उनके सामने खड़ा हुआ करता था, कि ऐ अल्लाह इन पर रहमत कर और जन्नत इन्हें रहमत कर फ़रमा। पस रहमतुअल्लाह अलैहु उस पर चीखे कि ओ गाफ़िल तीस वर्ष से शर्त और इज़्ज़त और बुरे कसूर समेत मुझको जलवा देते थे। मैंने अपनी चस्म हिम्मत कि कनखियाँ भी उस पर नहीं डाली। अब दरगाह कर्ब में जाता हूँ। तू अपनी रहमत लाया है और मेरे वास्ते बहिस्त और रहमत।

## सूर: ताहा

प० 26 वह है बड़ी बख़्शीश करने वाला अर्श पर ग़ालिब हुआ। उसका हुक्म और वा वस्फ़ इसके कि हक़ तआला सब मौजूदाद पर ग़ालिब और मुस्तली है फेर अस्तेलाद को इज़ाफ़त। अस्तेलाद (प्रभावित होना)। ख़ास अर्श के साथ इस ज़हद से वो शक्ति है वो सब मखलूकात में बड़ा है। ताबिलात में इमाम माबिदी ने फ़र्माया है कि अर्श मुल्क के मायने में आता है और हक़ तआला अपने मुल्क पर मुस्तवली और ग़ालिब है जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीनों में हैं और जो कुछ दोनों के दरमियान है फ़रिशते और आब और हवा के तबकें जो कुछ गीली मिट्टी के तबकें के नीचे है। सारी ज़मीन, के सब तबकों के नीचे वाला तबक़ा है। तफ़सीर वगैरह में उनकी रिवायत से मज़कूर है कि ज़मीन के सातों तबके एक फ़रिशते के कंधे पर है, और उस फ़रिशते के दोनों पाँव पत्थर पर हैं। और पत्थर एक जन्नत की गाय के सींग पर और गाय के पाँव हौज़ कौसर की एक मछली

की पीठ पर है और मछली दरिया पर साबित है और दरिया जहन्नुम (यमपुर) पर और जहन्नुम हवा पर और हवा एक अज़ाब जुलमत पर और वो अज़ाब सुरैया पर और ज़मीन आसमान वालों का इलम सुरैया (ज्योति स्वरूप) से आगे नहीं पहुँचता और सुरैया के नीचे जो कुछ है उसे हक़ तआला के सिवाय कोई नहीं जानता। (चौदह लोक, पांच तत्व, तीन गुण ज्योति स्वरूप, निराकार का वर्णन)

प० 26 मूसा को मेराज (परमधाम दर्शन श्री जी साहिब जी को)

### सूर: अंबिया

प० 29 हारून, मूसा और फ़िर्ओन, सूर: क्रसस में पूरा मूसा का क्रिस्सा (श्री जी की जागनी लीला छत्रसाल व औरंगज़ेब के साथ युद्ध)

प० 37 और वायदा किया था। हमने तुम्हारे पैग़म्बर को तुम्हारे वास्ते, तौरेत नाज़िल की दाहिनी तरफ़ कोहितूर के और उतारी। हमने सुख़बीन और मुर्ग़ भुना हुआ के डर हो। जिस वक़्त तेह (ड़रावनी जगह) तुम सरकश थे। कहाँ हमने खाओ पाक और हलाल चीज़ें जो रोजी हमने दी है और हद से न गुज़रो। उस चीज़ में यानि जुर्म न करो। (खाना पीना पाक-साफ़ होना चाहिए)

प० 41 और बुरा है उनके वास्ते क्रियामत के दिन कि कुफ़्र और तहज़ीब है जिस दिन कि सूर: फ़ूँका जाएगा। सूर: में यानि इस्त्राफ़ील सूर: फूँकेंगे और हश्न करेंगे गुनाहगारों को, तनयान में लिखा है कि पहाड़ों को पहले जड़ से उखाड़ देंगे और फिर रेत की सूरत रेजा-रेजा (कण-कण) कर देगा। फिर हवा चलाएगा ताकि उसे उड़ा दे। तिबयान में लिखा है कि पहाड़ों को उनकी जगह से उखाड़ कर दरिया में डाल देगा। फिर छोड़ेगा उनकी दक्रार के जगह



बराबर खाली न देखेगा। उसमें तूँ पस्ती और गड़े और न बुलन्दी और पस वे पैरवी करेंगे सब लोग पुकारने वाले की आवाज़ की यानि हज़रत इस्त्राफ़ील की के वो हस्त्र के मकाम (स्थान) पर उन्हें बुलाएंगे। कुछ मोज़िज़ा और कलिमा करेंगे उसके वास्ते यानि कोई पुकारा हुआ कुदरत न रखेगा। के बुलाने के अव्वल करे बल्कि सब पैरवी करेंगे मोमिन लोग तो जल्दी के साथ और काफ़िर देर के साथ। और बाज़ो ने कहा है कि आग आकर मुशिरक्रो को मैदानें हस्त्र तक ले के ले जाएगा और पस्त हो जाएगी आवाज़े ख़ुदा के बाद कहने को या उसकी अज़मत और हैवत ड़र के मारे फ़ेर ना सुनेगा तू उस दिन मगर आवाज़ नरम पानी हस्त्र के वास्ते उन दो पांवों की चाप उस दिन फ़ायदा न देगी दरख़्वास्त किसी की किसी को मगर उसके इज़न दें उसकी सिफ़ायत के वास्ते ख़ुदा और पसन्द करे उसके वास्ते बात सिफ़ायत करने वालें कि जानता है ख़ुदा जो चीज़ आदमियों के आगे है। आख़िरत के अम्र (बातें) और जो कुछ उनके पीछे है दुनिया के काम और फ़ेर नहीं सकते। अहले आलम ख़ुदा की जात की इलम की राह से यानि ख़ुदा की जात मालूम नहीं होती। इस वास्ते की उसका मुफ़तज़ा ये है कि उसे इलम एहाता (गिर्द) न करे और इलम की मालूम हक़ीक़त को एहता करना है। (क्रायमी की लीला)

**प० 42** और ज़लील और कमतर होंगे मुँह वाले। यानि हस्त्र के दिन सब लोग ज़लील (मान्य) होंगे ख़ुदा के वास्ते जो ज़िन्दा और क़ायम रहने वाला है। जैसे कैदी असीर हाकिमों के हाथ में। जो मोमिन नेक काम करे तो न ड़रे क्रियामत के दिन जुल्म और बेदाद से। और जिस तरह हम ने नाज़िल की हमने यह आयतें जिन में वईद (दण्ड) है। इसी तरह नाज़िल की हमने किताब क़ुरान जुबान

अरबी में और मुर्क़र की हमने उसमें वईद की आयतों में जैसे ज़लज़ला (भूकम्प) तूफ़ान, कड़क धंस जाना, सूरतें बिगड़ जाना कि परहेज़ करे मुशरिक और डरे इस बात से। (न्याय दिवस पर सभी शर्मिदा होंगे अपनी करनी पर)

**प० 43** मुसा ने जब इलम की ज़्यादती तलब (इच्छा) की तो हक़ तआला ने हज़रत ख़िज़्र पर हवाला फ़रमाया और हमारे रसूल को बेतलब इलम ज़्यादा होने की दुआ तालीम फ़रमाई। (ज्ञान की श्रेष्ठता)

**प० 44** आदम को शैतान ने कहा कि वह पेड़ खाने से मरेगा नहीं हालांकि ख़ुदा ने मना किया था। इस पाप के कारण मोर, साँप, शैतान और आदम हव्वा, को जन्नत से निकाला। (ज़मीन पर रुहों का आना वायदे अनुसार हुआ)

### सूर: अंबिया

**प० 47** करीब आ गया लोगों के वास्ते उनके अमाल के मुहास्बे के वक़्त। फ़रिश्ता रसूल है। हमारे जैसा खाने-पीने वाला आदमी रसूल न हो। ऐसा लोग कहते हैं। हमने नहीं किया पैग़म्बरों को फ़रिश्ता। (रसूल हमेशा इन्सान ही बने फरिश्ते नहीं)

**प० 48** उन मर्दों को वही भेजी कोई फ़रिश्ता नहीं भेजा। सब आदमी ही है ताकि हम ज़िन्स होने से उनसे और उनकी उम्मतों में पंसईदा लेना और देना ज़ाहिर हो। (पैग़म्बर सभी आये आदमियों में)

**प० 63** ज़िकरिया ने अपने बेटे के लिए ख़ुदा से दुआ मांगी, कि मेरा वारिस हो। मरियम के शादी के बिना बेटा। ज़बराईल को हुक्म किया कि उन्होंने फूँक दी रुह उस पेट में जो हमारे हुक्म में से है। हासिल यह है फ़क्त रुह फूँकने के वायदा पाक दामन औरत से, बेबाप के बेटा पैदा होना। (ईसा का जन्म हक़ की रुह से हुआ)

प० 64 मिल्लत (मोमिन) एक ही है। (सभी मोमिन आपस में भाई-भाई, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब का भेदभाव ठीक नहीं)

प० 64 उन सकियों पर क़ब्रों में अज़ाब होता रहेगा। यहां तक कि खोल दी जाये याजूज़-माजूज़ की आड़ यानि क्रियामत तक इस वास्ते याजूज़-माजूज़ का रफ़ल जाना क्रियामत की अलामत (निशानी) है। और याजूज़-माजूज़ हर बुलंदी से झपटते और दौड़ते हैं ताकि तमाम आलम को ले ले और दरियाओं का पानी पी जाए, और खुशक तर जो कुछ पाए खा जाए। साहेब मोतमिद रहमतुल्लाह अलैह ने ब्यान किया है, वहाँ लिखा है कि जब हज़रत ईसा अलैहुसलाम के हाथ से दज़्ज़ाल और उसके ताबें लोग हलाक हो जाएंगे जो याजूज़ माजूज़ निकल आएंगे और उनकी आड़ गुल जाएगी और ईमान वालों को लेकर ईसा अलैहुसलाम कोहितूर पर लेकर आड़ पकड़ें और बाज़ी हदीसों में वाईद है कि याजूज़-माजूज़ ज़बल और ख़मर तक जाएंगे और ज़बल तथा ख़मर बैतुल मुक़द्दस का पहाड़ है और कहेंगे कि ज़ामिन वालों को तो हम क़त्ल कर चुके अब आगे जो कुछ आसमान पर है उसे क़त्ल कर डाले और आसमान को तरफ़ तीर मारेंगे और तीर ख़ून में डूबे हुये फिरेंगे, हज़रत ईसा अलैहुसलाम और उनके साथियों को दुश्वारी होगी। कि दुआ करेंगे और हक़ तआला दफ़त याजूज़-माजूज़ को हलाक़ (नष्ट) कर देगा। और करीब आ पहुँचा वायदा सच्चा कि क्रियामत परेशानी का आना है तो वहाँ क्रिस्सा ये है कि होंगी धुंधली हौल क्रियामत से आँखें उन लोगों की जो नहीं ईमान लाये और वो कहते होंगे पानी, हवा हम पर कि बेशक थे। हम दुनिया में बेख़बर और उस दिन और उस हाल से बल्कि थे। हम जुल्म करने वाले। अपनी जान पर, के पैग़म्बरों की बात

हमने न सुनी और उनके साथ तक्रबुर और झगड़ा करते रहे बेशक ये मुश्रिको को और के चीज़ जिसको तुम पूजते हो। सिवाय खुदा के बुत और शैतान आग भड़काने वाले दोजख (नर्क) के हैं। तुम बुतों समेत दोजख पर गुजरने वाले और दाखिल होने वाले हो। (क्रियामत की निशानियां जाहेर होना)

**प० 66** और यकीनी हमने लिखा है कि दाऊद की किताब में तौरैत के बाद ये कि ज़मीन बहिस्त की किरास लेंगे। उसे मेरे नेक बन्दे यानि उम्मते मुहम्मदी के लोग और बाज़ों ने कहा है कि नेक बन्दों से आप मुराद वाले हैं बेशक ये ख़बरें जो बयान की इनमें अलबत्ता क़िफ़ायत है। ग़िरोह इबादत करने वाले को इससे महंमद मुराद है। (मोमिन का आराम परमधाम में है।)

### सूर: हज्ज

**प० 67** हक़ तआला फ़रमाता है कि ड़रते रहो अपने रब के अज़ाब से बेशक हिला देना क्रियामत कि ज़मीन को। चीज़ बड़ी हौल वाली है। हिला देने की मिसवत और ये ज़लज़ला क्रियामत के निशाँनियों में से होगा और सूरज निकलने से पहले मग़रिब की तरफ़ से आएगा। जादुल मिस्र में लिखा है कि यही पहले नफ़सा के केवल ज़मीन को ज़लज़ला होगा और आसमान में कोहराम पड़ जाएगा। जिस दिन देखेंगे लोग वो ज़लज़ला ग़ाफ़िल हो जाएंगे और मुन्ने की हर दूध पिलाने वाली मां उस लड़के को जिसे दूध पिलाती है और रख देगी हर हमल वाली और देखेगा तू कमाल। (भुकम्प समुद्री तुफ़ान छोटी क्रियामत की निशानियां खुली हुई)

**प० 68** फिर दूसरी बार क्रियामत के दिन उठने पर दलील पकड़ने वास्ते फ़रमाता है और देखता है तू ऐ आदमी ज़मीन को ख़ुश्क और बे

रौनक्र जैसे मुर्दा फिर नाज़िल (प्रकट) करते हैं। हम और ले उस ज़मीन पर मेंह (वर्षा) का पानी तो वो ज़मीन हिलती है धाँस की सबब से और उगाती है हर क्रिस्म से उगाने वाली चीज़ें तरौताज़ा, क़ादिर मरी हुई ज़मीन को पानी से ज़िन्दा करता है। वो इस बात पर भी क़ादिर है कि मुर्दों के अमालनामा करके उसी हाल पर ले आए जिस हाल पर वो थे। (ज़मीन में उगने वाली चीज़ें खाने-पीने को सही)

**प० 71** अहले किताब मुहम्मद सल्ल० के साथ झगड़ते थे कि हमारा पैग़म्बर मुकद्दम (प्रमुख) और हमारा दीन क़दीम (प्राचीन) है हम तुम से ज्यादा हक़ पर होने लायक हैं। मुसलमान जवाब देते कि हम अपने पैग़म्बर की भी तसबी (प्रशंसा) करते हैं और तुम्हारे पैग़म्बर की भी। अपनी किताब का ईमान और तुम्हारी किताब का भी और तुम बाईस (कारण) इसके कि हमारे पैग़म्बर को पहचानते हो। मगर हस्द (ईर्ष्या) की वज़ह से ईमान नहीं लाते तो हम ही हक़ पर हैं तुम नहीं हो। तो हक़ तआला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई। ये दो गिरोह दुश्मन आपस में लड़े और झगड़े अपने रब के दीन में। (किसी भी धर्म की निन्दा उचित नहीं)

**प० 74** जब खान-ए-क़ाबा: तैयार हुआ तो वही आई कि इस घर की ज़ियारत के वास्ते लोगों को आवाज़ दे इब्राहिम ने अर्ज़ की मेरी आवाज़ कहाँ तक पहुँचेगी। हुक्म पहुँचा कि तेरा काम आवाज़ देना है और हमारा काम आवाज़ पहुँचाना है तो इब्राहिम साहिबे मुक़ाम पर यानि सफ़ा पर आए और पुकार कर कहा, ए मोमिनो ख़ुदा ने अपने घर का हज़ तुम पर फ़र्ज़ कर दिया। तुमको उसकी तरफ़ बुलाता है। हुक्म कबूल करो। हक़ तआला ने उनकी आवाज़ ज़रा और ज़रितों को पहुँचा दी और सब को उनकी

पुकार की आवाज़ सुना दी, जो अल्लाह के इलम से हज़ करने वाला था उसने जवाब में कहा बेशक। (जागनी लीला समयानुसार ही पूरी होगी)

**प० 75** मुस्तक्रों (शब्दों) को दीदारे इलाही की खुशखबरी दो इस बात की कोई खुशखबरी इससे बढ़कर नहीं। फिर आजिज़ों की सिफ़्त में फ़र्माता है वो लोग है, कि जब याद किया जाता है खुदा उनके सामने तो ड़रते है। उनके दिल जलाले-रब्बानी की हैवत और अनवारे जाहवानी की अज़मत से चाहते है कि शमाँ-ए-जमाल के शोले में अपने को परवानें की तरह जला दे और अपनी हिम्मत की आँख हज़रत कुदस के बजाय मुक़दस के सिवा और की तरफ़ से बन्द कर लें। (हमेशा हक़ को याद करो तथा ड़रते रहो पापों से)

**प० 78** खुदा के एक दिन एक हजार साल दुनिया के।

**प० 79** रसूल और नबी में फ़र्क ये है कि रसूल साहिब शरियत है और नबी उसका ताबें है। नबी के ग़ैर रसूल होता है। रसूल वो है जिसके पास फ़रिश्ता वहीं लेकर आए और नबी उन पर रसूल है वो उन्हें जिस पर किताब नाज़िल न हो और नबी वो है जो आवाज़ सुने या उसे इल्हाम हो या ख़्बाब देखे। (वही उतरना अभी ख़त्म नहीं हुआ जारी है)

**प० 80** यहां तक कि आये उन पर क्रियामत या मौत के क्रियामत सुगरा (छोटी) है या आए उनके सामने इल्मायाते क्रियामत यकायक (अचानक)। (हादसा अचानक ही होता है)

**प० 84** लिखा है कि मालिक बिन जदीफ़ और क़ाब बिन अशरफ़ या यहूद की और जमात ने कहा कि हक़ तआला आलम को दिन में

पैदा कर के (मंदा) हो गया तो हफ़्ता के दिन आराम लेने को लेटा रहा। नअज़ूबिल्लाह उनके मुँह में ख़ाक तो यह आयत ख़ुदा ने भेजी कि न पहचाना यहूद ने ख़ुदा को। उसके पहचानने का जो हक़ है, या ख़ुदा की ताज़ीम न की जो उस की ताजीमक्ते हक़ था, कि सादगी और थकान को उसकी तरफ़ मनमूख़ किया और एक क़ौल यह है कि यह आयत मुश्रिकों की शान में फ़रमाता है। मुश्रिकों ने जाना कि उसके साथ दूसरे की शरीक माना और पत्थर का नाम ख़ुदा रख लिया। मुहक़क़ लोग इस बात पर है कि हक़ तआला को पहिचानने का जो हक़ वहनहसित हुआ और मुहक़का ने भी उसकी हक़ीक़त मारिफ़त की तरफ़ राह नहीं पाई। इस वास्ते कि तवाफ़ की दरबारें बारगाह कि बरमा के गिर्द किसी को ठहरने ही नही देती और हैवत के ग़ैब की तरफ़ किसी रहनुमा को राह नहीं देता। शेख़ अबूबक्र ने कहा है कि जो उसके पहचानने का हक़ है उस तरह उसे उसके सिवा और कोई नहीं पहचानता उसमें और उसके मासूई में किसी तरह की किसवत(पेटी) \* नही कि उसकी मारिफ़त की राह चल सके और मारिफ़त बेमुनासबत क़बील महलात से है। (हक़ कभी भी नहीं आराम करता है यानि न सोता है न जागता है)

**प० 85** और ज़िहाद दी है। एक तो ज़ाहिर दुश्मन यानि मुश्रिकों और बग़ियों के साथ और दूसरा बातूनी दुश्मन नफ़स और ख़्वाहिशों के साथ। (असली ज़िहाद जितेन्द्रीय होना यानि अपने बुद्धि मन, अहंकार, शरीर को काबू करना ही सच्चा धर्म युद्ध है)

## सूर: मुअमिनून

प० 86 नमाज़ पढ़ने वाला सिर झुकाए दाए बाएँ नज़र न दौड़ाए। वस्वसा से रोके शहरग के दिया में मुस्कगर्क होकर अनवारें जलाल जमाल आसार ज़हर की मशालों से गदाबत हो। नमाज़ में पहिले तो अपने से बेज़ार फिर कर्ब यार को पहुँचने का ख़्वाहिशगार होना चाहिए। (प्रार्थना के समय मन स्वरूप में लीन रहें तभी ध्यान लगता है तथा साक्षात्कार होता है, हक़ का)

प० 88 फिर उठाए जाओगे हिसाब देने और ज़ज़ा (न्याय) पाने को और बेशक पैदा किये हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान। एक तबक्रा पर दूसरा तबक्रा और उसमें हर तबक्रा तक फ़रिश्तों की राहों में से एक राह है। तिबयान में इबने अब्बास से मनफूल है कि हक़ तआला बहिशत के चश्मों से पानी की नहरें ज़बराईल के बाजूओ पर रखकर आसमान से उतारी। एक जो कि हिंद की नहर है। दूसरी सो है बलख की नहर, तीसरी फ़रात, चौथी दज़ला इराक की दो नहरें, पाँचवी नील की मिस्र और नहरें जो पहाड़ों में अमानत रखी, लिखा है माजूज़ के निकलने के बाद ज़बराईल उतरेंगे और क़ुरान शरीफ़ हिज़्र अस्वद मकामे अब्राहीम ताबूत रुकीना और पांचों नहरें आसमान पर ले जाएंगे और रूए ज़मीन पर कुछ ख़ैर कैफ़ियत न रहेगी। (ज़बराईल दोनों बाजूओं पर छः छः हज़ार मोमिनों को बैठाकर परमधाम के दरवाज़े तक जायेगा)

प० 91 बेशक नूह के किस्से है और उस पेस में जोड़ उनकी क़ौम के साथ किया गया। अलबत्ता निशानियां हैं। इब्रत (सीख) वालों की और बेशक थे हम आजमाने वाले उस क़ौम को। (धर्म की राह में अग्नि परीक्षा होती है)



**प० 93** बाजों ने कहा है कि सब अंबिया की तरह खिताब एक ही दफ़ा नहीं। इस वास्ते कि वह मुरत्तलिफ़ (विभिन्न) जुबानों में थे बल्कि यह मायने है कि अपने अपने ज़माने में हर एक की तरफ़ खिताब किया है। तो सब इस खिताब में शामिल है। और बाजे मुफ़स्सिर इस बात पर है कि हमारे सुल्तान उल-अंबिया मुहम्मद की तरफ़ खिताब है। हक़ ने आप ख़ुद पैग़म्बर कह के पुकारा है। इस वास्ते कि आप पैग़म्बरों के सरदार है और आप में सब क्रमालात जमा है जो तमाम अंबिया में थे। (मुहम्मद सल्ल० की श्रेष्ठता सभी पर)

**प० 89** और सामेन से मुशिरकों के माने है रजअत और उनके दरम्यान यानि क़ब्र जिसमे वह उस दिन तक कि उठाए जाएंगे क़ब्र से फिर जब फ़ुँका जाएगा सूरःमें यानि दूसरा या तीसरा नफ़ः कि उसके सबब से मुर्दे ज़िंदा हो जाएंगे और क्रियामत क़ायम हो जाएगी तो नसीब न होंगे। उनके दरम्यान यानि उस दिन न सबका इलाका मनकता हो जाएगा और किसी ज़िरहम को किसी अपने पर रहम न होगा। उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई अपनी माँ और अपने बाप से या जिसके नसीब के सबब से आज बाहम फ़ख़र करते हैं। कल क्रियामत को उसके सबब से। (महाप्रलय में कोई किसी का मित्र नहीं)

**प० 101** हक़ तआला फ़रमाता है कि ए लोगों मैंने तुम को खेल के तौर पर नहीं पैदा किया बल्कि नूर मुहम्मदी के ज़हूर के वास्ते पैदा किया है। इस वास्ते कि मज़ल में यह बात मुकर्रर हो चुकी थी कि वह नूर इन्सान की ज़िन्स से पैदा होगा तो वह असल है तुम सब फ़र्द हो। बहरूल हक़ाईक में लिखा है कि हक़ तआला फ़रमाता है कि मैंने तुमको इस वास्ते पैदा किया कि तुम मुझ से फ़ायदा

लो। इस वास्ते नही कि मैं तुम से फ़ायदा लूँ। कहो ए मुहम्मद कि ऐ मेरे रब, बख़्श दे मुझे और मेरी उम्मत को और रहम कर मुझ पर और उन पर और तू बेहतर है। सब रहम करने वालों से हदीस में है कि सूरा क्रद्र अफ़लाह का अव्वल और आख़िर ख़जाना है। अर्शे-इलाही के ख़जानों में से। (दिव्यता का प्रसार ज़मीन पर हुआ, वास्ते रुहो के कि वह लज्ज़त ले खेल की)

## सूर: नूर

- प० 108** उम्मुल मोमनीन हज़रत बीबी आयशा की फ़ज़ीलत का ज़िक्र अम्र उल सफ़ा में मुफ़स्सल दर्ज़ है।
- प० 112** हज़रत आयशा का किस्सा हज़रत ईसा मसीह की माँ और हज़रत यूसुफ़ से मिलता है।
- प० 113** अल्लाह का एक नाम नूर है। पर रोशनी न कहना चाहिए कि वह अंधेरे का उलट है। (नूर पवित्र, दिव्य, मधुर हक्र)
- प० 114** हक्र के नूर हक्र ने हमारे वास्ते वह चीज़े बयान फ़रमाई जो दुनिया आख़िरत में हमारे काम आए और हमें वह चीज़ें ख़ुदा ही के सबब से सूझे तो ख़ुदा को नूर कह सकते हैं। आलम नूर से भरा है और नूर पोशीदा है। चीज़ों को खोलने से ज़ाहिर है ख़ुद पोशीदा है। (हक्र का ज़ूहर नूर है)
- प० 115** इमाम फ़ख़रूद्दीन ने इसरार उल तंज़ील में फ़रमाया है कि रस नूर से नूर ईमान मुराद है कि हक्र ने मोमिन के सीना को ताक्र से तर्ब (ख़ुशी) दी है। (हक्र का प्रताप है नूर)
- प० 116** बाक़ी नुक्ते जवाहिर-उल-तफ़सीर में नूर के मजमूँ (विषयमें) है। (नूर एक दिव्यता का अहसास)

**प० 122** यह आएत एजाज कुरान और सेहत नबुवत और अलफ़र्राश दीन की ख़िलाफ़त पर दलील है और फ़रमाया कि और ज़रूर कुव्वत (शक्ति) के साथ मुतकमन और साबित कर देगा। उनके वास्ते उनके दीन को कि पंसदीदा है। उनके वास्ते दीन इस्लाम मुराद यह है कि उस दीन को सब दीनों पर ग़ालिब कर देगा और ज़रूर बदल देगा।

**प० 124** यानि सब ईमान वाले एक जान के मिसल है। (सभी आपस में एक है)

### सूर: फ़ुर्क़ान

**प० 127** बोले काफ़िर कि मुहम्मद अरबी का कलाम तो कहानियाँ है। आली किताबों में लिखा है। लिखवाता है इस वास्ते कि आप तो लिख ही नहीं सकता। जो वह नबिश्ते(अंकित या लिखा हुआ) इमला किये जाते हैं। उस पर सुबह शाम मुहम्मद अरबी के सामने पढ़ते हैं। यहां तक कि वह याद कर लेता है। इस वास्ते कि ख़ुद तो वह पढ़ ही नहीं सकता। और जब याद कर लिया तो पढ़ कर कहता है, कि वही है मुँह में ख़ाक़ इन काफ़िरों के, कह ऐ मुहम्मद उन की बात रद करने को उतारा है कुरान उसने बेशुबहा जानता है पोशीदा आसमानों और ज़मीन में उस पर दलील यह है कि कलाम शामिल है ग़ैब की ख़बरों पर कि इलम ग़ैब हक़ तआला का ही ख़ासा है। (कुरान सच्चा इलम है कुफ़्र को मिटाने के लिये)

**प० 136** ऐ मुहम्मद तुम अपने रब की तरफ़ नहीं देखते। हज़रत मूसा अलैहिसलाम की ज़बान पर जब सवाल अरमी आया तो जवाब सनतरानी (तू मुझे नहीं देख सकेगा) सुन कर दिल पर दाख़

खाया यानि हज़रत मूसा ने अर्ज़ की थी कि ऐ रब मैं तेरी रिवायत और दीद (दर्शन) चाहता हूँ। जवाब मिला की तुम हर्गिज मुझे नहीं देख सकते और हमारे हज़रत मुहम्मद सल्ल० को वे सवाल इस आयत में इर्शाद हुआ कि ए हमारे हबीब तुम मेरी तरफ नहीं देखते और क्या चाहते हो और एकाएक सभी से ऐसा मालूम होता है कि मन्ज़ला से मुहम्मद साहब पर साया अस्मत का फैलाना मुराद है और आफ़ताब मारिफ़त जो आपके दिल मुनव्वरा मुत्बला से तुलू हुआ। वो उसकी दलील है यानि वो पर्दा खेंचने में तुम मेरी तरफ नहीं देखता। (ज़ाहेरी आँखों से ही नहीं मन से भी हक़ का दर्शन मिलता है ज़रूर)

**प० 137** जवाहर-उल-तफ़सीर में बाज़ वातों का मुंतलिक हो सकता है और खुदा वो है जिसने बनाया तुम्हारे वास्ते रात की पोसिस और पर्दा कि उस में आराम लेते हो और नींद रायत और आसाईस और कर दिया उसने दिन को उठने के वास्ते और तलब मासयित में चलने-फ़िरने वास्ते और बाज़ों ने कहा कि नींद मौत के मुसाबा है और नसूर सो कर उठना है। जैसे मुर्दों का मरकर क़ब्र से फ़िर उठना और लुकमान कि हिक़मतों में मज़कूर है कि जिस तरह तू सोता है फ़िर उठता है इस तरह मरकर फ़िर जिएगा और मुनसर होगा। (जागनी लीला यानि मुर्दा तनों से उठना)

**प० 139** सैयद हुसैनी क़दान सराह ने तर्ब उल मज़ालिस में लिखा है कि जब आदम सफ़ीअल्लाह ने हव्वा अलैहुसलाम के साथ अक़द (विवाह) किया तो इबलीस (शैतान) और दुनिया का भी बाहम पैबन्द और जोड़ा हुआ और जिस तरह उनके बाहम (संग) मिलने से आदमी पैदा हुये। इन दोनों के बाहम मिलने से हव्वा हवस पैदा हुई और एख़लात अरबा यानि सुन सीदा सफ़रा के जोश से

नबियत के गैवार में हव्वा ने बख्शीश पाई। जितने बुरे अवसाद बाज़ार दुनिया की रौनक हैं तो सब हव्वा व हैवान से मदद पाते हैं और जो रसमें और आदतें साबूत हैं वो मुस्तलिफ़ दीन और मजाहिब सब उसी कि तासीर से ज़ाहिर होते हैं। (बारह 12 बुर्ज यानि 12वीं सदी तक इमामत)

**प० 139** बुजुर्ग है वो खुदा जिसने अपनी कुदरते नामला से पैदा किए आसमान में बुर्ज बारह या मकान आलीशान की उनकी हक़ीक़त। उसके सिवा और कोई न जानता और पैदा किया आसमानों या बुर्ज में कि वो सूरज चिराग़ है कि वो आफ़ताब रौशन करने वाला और चाँद-रात को दिन बना दिया। तस्म ताहिर (पाक) सातर (ढकने वाला) मजीद (बुज़र्ग) बाज़े कहते हैं। तो भी ताहिर उड़ने वाले अल्लाह के साथ, (बारहवीं सदी तक इमामत ज़ाहेर हुई-तथा बारह हज़ार मोमिनों की जमात)

सैर मारिफ़त की तरफ़ मीम, सर्फ़ सालकान सबील माबूदियत की तरफ़

## सूर: शुअरा

**प० 142** \* मुसा हारून और फ़िर्ओन की कहानी खोल कर लिखी है। फ़िर्ओन और मूसा की बातें। (श्री जी साहिब जी, छत्रसाल जी, औरंगज़ेब का प्रकरण यानि धर्म संघर्ष, कट्टरता के विरुद्ध)

**प० 151** और बाज़ों ने कहा है कि मुराद लसाम सो सिदक से मुराद सादिक़ है, और इस आयत के यह माईने हैं कि ज़ाहिर कर मेरा असल दीन नया करने को एक सच्चा आदमी आख़िर उम्मतों में और इससे मुहम्मद सल्ल० मुराद है। और कर दे मुझे जन्नत के बाग़ों से जो नेमत से भरी है। यानि मुझे उन लोगों में रख जो जन्नत

के मकानों में उतरेंगे और बख्श (प्रदान) दे मेरे बाप को ईमान नसीब करता कि वह बख्श दिया जाए। (परमधाम का खजाना अर्श से फर्श पर आया)

**प० 158** और बेशक़ कुरान उतरा हुआ अहले आलम के रब का है उतरा कुरान समाइत जबराईल अलैहुसलाम तेरे । दिल पर और या रसूलअल्लाह तुम में उनमें कुरान ले लिया तो तुम्हारा दिल जरफ़ उसका रहता है और ये ऐसा है कि वो या तुम्हारे दिल पर उतरा, यानि उतारा कुरान समेत ज़बराईल को तेरे दिल पर यानि ज़बराईल ने तुम को सिखाया और तुमने उनसे सीख लिया और अपने दिल में याद रखा ताकि हो तू देने वालों में से ख़लक को साथ अरबी ज़बान खुली हुई के। और जवाब अरब में ड़राने वाले साहिब और हूद और सालेह । और इस्माईली थे और यकीनी कुरान का ज़िक्र मुंहम्मद की नेमत अगलों की किताबों में थी। (कुरान की श्रेष्ठता-सब किताबों पर)

### सूरः नम्ल

**प० 162** यही बातें हैं (यानि जिसका वायदा किया था) (क़ियामत का वायदा पूरा किया)

**प० 161** पस लवाब तफ़सीर में अपसरां से मनकूल है कि हरुफ़ मुक्तआ इप्तदाए मकतआ इप्तदाए कलाम और इन्तहाए कलाम के वास्ते है। तो यह हरुफ़ शुरू और ख़तम कलाम पर दलीलत करते हैं। जैसे महा तुल सूरा शुअरा का ख़तम और सूरा अमल का शुरू है या तो इशारा तहारत या किं कुद्से इलाही की तरफ़ और सना-ए-अज़नामतनाही की ज़ानिब। (हरुफ़ मुक्तआद क़ुरान के भेद है जो इमाम महदी साहिब ने ज़ाहेर किए हैं)

**प० 162** और बेशक सिखाया जाता है कुरान ज़बराईल के सिखाने से कि वह तो मेरे पास आते हैं। पास से उस ख़ावन्द के जिस के काम वास्ते दुरुस्त है, और जो जानने वाला है दाउद का बेटा सुलेमान उन्नीस बेटों में एक क्यों कि सुलेमान ने सवालियों का जवाब दिया। (नबूवत के लिये दिमाक हाज़िर रहे याद-ए-हक़ में)

**प० 176** दाभ-तुल-अर्ज़ का निकलना क्रियामत की अलामतों में से एक अलामत है। साहिब मोतमिद ने लिखा है कि जब दुनिया का जवाल (अन्त) करीब ही पहुंचेगा तो हक़ तआला दाभा को ज़मीन से निकालेगा जैसे हज़रत सालेह ने ऊँटनी पत्थर से निकाली और वो दाभा बोलेगा और हदीस में है कि ज़मीन से दाभा का निकलना और मगरिब से आफ़ताव निकलना करीब होगा। जो एक इनमे से पहले होगा तो दूसरा उसके पीछे ही ज़ाहिर हो जायेगा। और बाज़े इमामों के किताब से साबित होता है कि क्रियामत की अलामतों में पहली आसमानी अलामत मगरिब की तरफ़ से आफ़ताव निकलना है और ज़मीन की पहली अलामत दाभा का निकलना है। और दाभा एक जानवर है (60) गज़ लम्बा चौपाया और उसके ज़र्द रूएँ होंगे जैसे पर परिन्दे के बँधे होते हैं। उसके दो बाजू होंगे। तेज़ वह ऐसा कि कोई भागने वाला। उससे न छूटे, और कोई तलाश करने वाला उसे न पाये। उसका चेहरा आदमी का सा मगर निहायत रोशन चमकता हुआ और तहसिर में इब्ने ज़ाहिर से मनकूल है कि उसका सिर गाय के सिर सा होगा और एनुल मुआनी में है उसकी आँख सूर के आँखों की मिसाल होगी। कान हाथी के से और सींग पहाड़ी गाय के माफ़क और रंग चीते का जैसा। और गर्दन शुतुरमुर्ग की। उसका सीना शेर का सा और पसलियां चीते की और पाँव ऊँट के मिसाल और दुम मेंड़कों सी

ये दाभ-तुल-अर्ज निकलेगा कि सफ़ा से या सफ़ा मरहू के दरम्यान से या कीअज़िया से या तहामों की जंगलों में किसी जंगल से। या बंहेरे संदुम में से और हदीस में है कि आज़म मस्जिद यानि मस्जिद हराम से निकलेगा और किताब इनामत उल सायत में लिखा है कि ख़ान-ए-क्राबा: के कोने में से निकलेगा। और वो आफ़ताब की तरफ़ सैर करेगा और बुलंद हो जाएगा तीन दिन के बाद एक तिहाई बाहर आयेगा और बाज़े इस बात पर है कि उसका सिर और गर्दन ही केवल ज़मीन से निकलेगी और ये बात है कि तमाम बिल से ज़मीन के बाहर आएगा हज़रत मूसा के आसा: हज़रत सुलेमान की अँगूठी उसके साथ होगी। ईमान वालों के चेहरे में। हज़रत मूसा का आसा: छू देगा। बस चेहरा उनका सफ़ेद हो जाएगा और हज़रत सुलेमान की अँगूठी काफ़िरों के दोनों आँखों के दरम्यान में मल देगा। उनके चेहरे स्याह हो जायेंगे। दुनिया में कोई सफ़ेद-रू-स्याह होने की न बाक़ी रहेगा और लोग एक दूसरे को नाम और लक़ब से न पुकारेंगे बल्कि सफ़ेद मुँह वाले की ज़मती और स्याह मुँह वाले को और यही है कि बाज़े मुफ़स्सिरो ने इस आयत के मायने इस तौर पर कहे हैं कि जब आ पड़ेगी हमारी बात मोमिनों को काफ़िरों से तमीज़ करने की साथ तो हम निकालेंगे दाभ-तुल-अर्ज को व अल्लाह आलम व मोमिने सर और याद करो वो दिन कि हस्त्र करेंगे हरेक उम्मत में से। (क्रियामत की निशानियों का प्रकट होना)

**प० 177** और याद कर वो दिन जब फूँका जायेगा। सूर: में तो डरेगा उसके हौल और हैवत से जो कोई है, आसमानों में और जो कोई है ज़मीनों में। यानि सूर: फूँकने के वक़्त जरूर ज़मीन और आसमान में रहने वाले ख़ौफ़नाक होंगें। मगर जिसे चाहेगा अल्लाह यानि



बहिस्त और दोजख के फरिस्ते या शाहिद लोग या अस्त्राफील के फूँकने वाले हैं, या चारों मुर्करर फरिस्ते ज़बराईल, मैकाईल, अस्त्राफील, इज़राईल या हज़रत मूसा कि उनके तूर पर पस तहसिर में कहा है कि वो इद्रीस है और सब लोग आएंगे मैदाने हस्र में और देखेगा। तू पहाड़ों को उस दिन समझेगा जब जगह पर जमे हुये हाल आँच पहाड़ चलते हुये चाल और की और वो हरक़त हाक में न आएगी।

### सूर: क्रसस

प० 182 मूसे का किस्सा (श्री जी साहिब जी की जागनी लीला का प्रकरण)

प० 190 ज़ाद-उल-मसीर में अबू हरेरा से मनक़ूल है कि निदा की उम्मते मुहम्मद की और नवजाक़ शफ़ऊल असरार में है कि मूसा ने कहा कि इलाही तो रेत में एक उम्मत का सिफ़त और सीरत में पस्त करता हूँ कि नेक ख़सलतो और सिफ़तों में मासूफ़ है। यह किस पैग़म्बर की उम्मत होगी। जवाब ये मिला, ऐ मूसा यह उम्मत ज़ाहिर होने का वक़्त नहीं है। अगर तुम को मंज़ूर हो तो इनकी आवाज़ सुना दू। फिर हक़ ने ख़िताब फ़रमाया ऐ उम्मते मुहम्मद सबने अपने बायों की पुस्त से जवाब दिया। लब्बैक़ (हाज़िर) अल्लाहु लब्बैक़ (हाज़िर) जब हज़रत मूसा की उम्मतें मंहमद की आवाज़ सुनाई तो ये न चाहा कि वे तोहफ़ा दिए फ़ेर दे तो हक़ तआला ने फ़र्माया अता दिया हमने तुमको केवल इसके कि तुम मुझसे माँगो और मैंने तुम को वख़्श दी पहले इससे कि तुम मुझ से चाहो। हक़ तआला फ़र्माता है ए हमारे हबीब तुम कोहितूर पर हाज़िर न थे। जब कि हमने तुम्हारी उम्मत को पुकारा। मगर तुम को हमने ख़बर दी। उस रहमत सबब से। (हक़ की उम्मत का बयान यानि मोमिनों की जमात)

**प० 191** जो वाक़िया है हम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से, और हमने तुम को ये इस वास्ते सिखाए ताकि ड़रावों तुम ए मुंहम्मद उस ग़िरोह को के नहीं आया है। उन पर कोई ड़राने वाला तुम से पहले कि शायद वो नसीयत यानि और अगर न ये होता कि उन्हें पहुंचती मुसीबत व सबब इसके जो आगे भेजा है। उनके हाथों में फिर कहते नज़ूले अज़ाब के वक़्त हुई, हमारे रब क्यों न भेजा तूने हमारी तरफ़ रसूल, जो के तेरा पैग़ाम हमारे पास लाता। फिर हम अता करते तेरी आयतों कि और, तेरे रसूल कि तसदीक़ करते। फिर जब आया उनके पास रसूल मुंहम्मद हमारे पास से कहा काफ़िरों ने क्यों दिया गया मुहम्मद अरबी को मिसल उसके मूसा के मोज़ज़ात में से। (हक़ का सच्चा नबी खुद हक़ स्वरूप)

**प० 192** चालीस नसारा कहते हैं कि ईमान लाए, हम उसका और जान लिया हमने कि ये कलाम खुदा का है। बेशक वो सही और दुरुस्त है। और उतरा है हमारे रब के पास से बेशक। हमसे पहले से उसके उतरने के कि अगली किताबों में उसका ज़िक़्र हमने पाया था और उसकी हक़ीक़त हम पहचाने हुये थे। वो ग़िरोह दोनों किताब वालों का असर दिए जाएंगे। वो लोग दो बार बसबब इसके कि उन्होंने सब्र किया तौरेत अंजील या कुरान शरीफ़ के ईमान पर। (ईमान आसमानी किताबों व रसूलों पर)

### सूर: अंकबूत

**प० 201** अलम हरुफ़ मुक़तआत ख़लक अज़ीज़ जाहिर करने के वास्ते है ताकि बंदे जान ले कि किसी को इस किताब के हक़ाईक़ दरयाफ़्त करने की तरफ़ राह नहीं है और किसी कामिल की अक़ल उसकी कुनहार मारिफ़त से आगाह नही ईसा रूहअल्लाह का तामलतीफ़ की ज़ानिब भी मज़ीद की तरफ़। (बुद्धि की श्रेष्ठता मोमिन को)।

## सूर: रूम

प० 215 अलिफ़, लाम, मीम, हर एक हरूफ़ भी हमारा है, उस सिफ़त की तरफ़, जिसके साथ खुदा कि सना करते हैं। जैसा कि अलिफ़ लाम, मीम में अलिफ़ अल वाहिद से गिनाया है और लाम सुतुफ़ से और मीम मुलफ़ से। और बाजों ने कहा है कि अलिफ़ हमारा है इस्म (नाम) अल्लाह कि तरफ़ और लाम ज़बराईल की जान और इसमें मुहम्मद की तरफ़ यानि अल्लाह ने ज़बराईल की मारफ़त वहीं भेजी मुहम्मद की तरफ़ ज़बराईल की मारफ़त। ऐसे बाग़ में खुश किए गए होंगे कि खुशी का असर उनके चेहरों से ज़ाहिर होगा। ये क़ाफ़ में है कि ताज दिए जाएंगे। एनुलमुआनी में है कि ऐसी आवाज़ सुनाई जाएगी कि उसके सुनने के बराबर किसी चीज़ में लज़ज़त न होगी। हदीस में है कि बहिस्त की कुंवारियाँ ऐसी आवाज़ से गावेगी कि ख़लायक ने वैसी आवाज़ न सुनी होगी। और आवाज़ बहिस्त की सब नेमतों से बेहतर है। हज़रत अबु दर्दा से पूछा कि जन्नत की कुवारियाँ क्या गाएंगी तो उन्होंने फ़र्माया तसबी, कसफ़-उल-असरार में लिखा है कि कहा क्रियामत को खुदा के दोस्त बहिस्त के बाग़ों में चम्मेस्तान (फूलों की घाटी) उल्स के दरिम्पान खुशी के साथ ये शमां करेंगे कि फिर मक़द, सिदकमन्द, मलिक, मुक्तदर और हज़रत दाऊद को हुकम पहुंचेगा कि वो दिल पज़िर न ग़म और शौक़ अंगेज तक आवाज़ जो हमने तुम को अता की है उससे ज़बर पड़ो। ऐ मूसा तुम तौरेत पढ़ो, ऐ ईसा तुम इंजील पढ़ने में मशगूल हो। ऐ तुबि दिल आरस्ता करने वाली आज मेरी तसबी के साथ निकाल ऐ अस्त्राफील क़ुरान शुरू कर। इमाम सालवी से नकल करते हैं कि हज़रत अस्त्राफील से ज्यादा कोई खुश आवाज़ नहीं जब वो खुश आवाज़ करते हैं तो

सब फ़रिस्ते अपने औराद और अफ़कार से बाज़ रहते हैं। (हरुफ़ मुक़तआत तथा अस्त्राफील का सूर: फूंकना तथा क़ुरान पढ़ना)

**प० 220** मुख़ालफ़त तुम्हारी ज़बानों की बात कहने में कोई बुलन्द आवाज़ करके बात करता है कोई आहिस्ते, बहुत कोई फ़साहत के साथ कोई हक़ला कर। मुख़तलिफ़ ज़बानों में अरबी फ़ारसी तुर्की हिंदी वग़ैरह में लबाब में है कि सब मुख़तलिफ़ ज़बानों की असले 72 हैं। 19 औलादे साम में, 17 हाम की औलाद में 36 औलाद याफ़िस की और दूसरे इक़तलाम तुम्हारे रंगों का सुख़ी सफ़ेदी जरदी में वग़ैरह (इत्यादि)।

फ़िर जब पुकारेगा तुम को अस्त्राफील आख़िर कि सूर: फूंक कर पुकारना। इस तरह की ए मुर्दों निकलो ज़मीन से। उस वक़्त तुम निकल आवोगे अपनी क़बों से ख़ल्क की क़बरों से निकलना भी उसकी निशानियां में से एक निशानी है।

**प० 222** ना बदलो ख़लक ख़ुदा की यानि जिस दिन पर हक़ तआला ने ख़लक को पैदा किया और उससे अहदो निसाब लिया। वो है दीन सीधा और मुस्तक़ीम और मगर बहुत लोग नहीं जानते सीधा और मुस्तकीम होना दीन का अपनी तबियत की वजि के सबब से और उसमें ग़ौर न करने की। (दीन धर्म में हेर-फेर उचित नहीं मनमर्जी)

### सूर: लुक्मान

**प० 227** हरुफ़ मुक्ता सूरतों के शुरु और ग़ैब के ख़ज़ानों की कुन्जी है और अलिफ़ लाम, मीम की तफ़सीर में कहा है कि अलिफ़ इशारा है अना की तरफ़ और लाम ली की ज़ानिब और मीम मणि की तरफ़ यानि में माबूद बरहक हूं। मेरे ही वास्ते सब सिफ़ते और

मेरी ही तरफ़ से है क्रशिश देना और एहसान। (इलम, ईमान, मोमिन, फरिश्तों का)

**प० 233** सुंमुद्र पानी स्याही हो जाए तो भी खुदा का इलम नहीं लिखा जाता। (ब्रह्मवाणी की महिमा अपार है। पूरा वर्णन नहीं हो सकता)

**प० 235** लिखा है कि हारस बिन उमर और एक महारब ने मुहम्मद सल्ल० से पूछा कि ए मुहम्मद सल्ल० क्रियामत कब होगी दूसरा मैंने खेत बोया है पानी कब बरसेगा और मेरी औरत हामला (गर्भवती) है उसके पेट में लड़का या लड़की है और बताओ कि मैं कल क्या काम करूंगा और मैं अपने पैदा होने की जगह तो जानता हूँ भला मैं दफन कहाँ हूँगा। तो हक़ तआला ने यह आयत भेजी कि इन पाँचों का इलम खुदा को है। इसके इतला(सूचना) की कुन्ज़ी किसी आदमी के हाथ में उसने नहीं दी। यकीन अल्लाह उसके पास इलम, क्रियामत, मेह बरसाना, लड़का या लड़की है मां के पेट में, नेक या बद करेगा आदमी, कँहा मौत होगी।

**प० 235** अमीरुल मोमनीन हज़रत मुर्तज़ा अली कर्मअल्लाह वज्हा ने फ़रमाया कि हर किताब का एक खुलासा होता है क़ुरान का खुलासा हरूफ़ मुक्ता अलम में है। अलिफ़ हलक़ की इन्तहा से निकलता है। और वह हरूफ़ निकलने की सब जगहों में अव्वल है। जुबान के किनारे से लाम निकलता है। और वह हरूफ़ निकलने की जगहों में औस्त है और मीम होंठ से निकलता है। और वह हरूफ़ निकलने की जगहों में अख़ैर है। तो यह बात इस तरफ़ इशारा है। कि बन्दा को चाहिये कि अपने अक्रवाल, अफ़हाल की इब्तदा और दरम्यान और इंतहा में अल्लाह के ज़िक्र के साथ उनस चाहता रहता है।

## सूर: सज्दा

- प० 237 आखिरत जो दीदार की जगह है। (हक़ का दीदार सभी को होगा)
- प० 238 वायदा की गई मेरे नेक बंदों के वास्ते वह चीज़ जिसने आँख ने देखा, न कान ने सुना, न आदमी के दिल में गुज़री। (परमधाम का आनन्द)
- प० 239 अदना अज़ाब निरख की गिरानी है और आख़रुल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़मा का निकलना है। मैं शमसीर आबदार। मुहम्मद ने ख़ुदा के वाएदे के मुताबिक़ मूसा की मेराज को जाते और वापसी पर भी देखा और ऐसा वायदा ख़ुदा ने किया था। (इमाम महदी साहिब श्री जी का प्रकट होना हिंद में)

## सूर: अहज़ाब

- प० 243 रसूल ने फ़रमाया कि नफ़स की निसबत हज़रत को अपनी जान से ज़्यादा महबूब और अज़ीज़ रखना चाहिए। हदीस में है कि रसूल ने फ़रमाया कि तुममें से कोई मोमिन नहीं होता जब तक उसे मेरे साथ मुहब्बत न हो। अपने मां बाप और औलाद और नफ़स और सब लोगों की मुहब्बत से ज़्यादा। (मोमिन मासूक हक़ आशिक़ हुआ उल्ट आशिक़-मासूक)
- प० 247 लिखा है कि सहाबा रजिअल्लाह में से बाज़ों ने नज़र की थी जैसे हज़रत हमज़ा इत्यादि-ने की जब मैदाने जंग में रसूल साहेब के साथ हो साबित क़दम कुफ़ार से ख़ूब मुकाबला और मुक़तला करेगे और जब तक शर्बत साज़त ना पीए आराम न लेगें, तो हक़ तआला उनकी सिफ़्त में फ़रमाता है मोमिनों में से मर्द है कि सच है उन्होंने वो चीज़ कि अहद वायदा है ख़ुदा के साथ उस

चीज़ कि अहद वायदा है खुदा के साथ उस चीज़ पर कि क़ताल (प्रेमी) पर साबित रहता है। हज़रत मलक की रज़ामंदी के वास्ते तोड़ उनमें से कोई है जिसने गुज़ारा यानि वफ़ा की अपनी नज़र और क़ताल (प्रेमी) किया। यहाँ तक कि साहिबेदीन हो गए। (कुर्बानी की महत्ता)

**प० 254** और चिराग़ रोशन या साहिब चिराग़ रोशन कि वह चिराग़ क़ुरान है। आयत “वा हिरात” में लिखा है कि हक़ तआला ने पैग़म्बर-सल्ल० को चिराग़ कहा। आपने जुलमते दुनिया की रात को दावते इस्लाम के नूर से रोशन कर दिया और क्रियामत के दिन भी मशअल शिफायत से आप रोशन करे देंगे। (मुहम्मद साहेब की शिक़ायत से बहिस्त मिली)

**प० 260** पूछते हैं लोग तुझसे इम्तिहान और हंसी की राह से साईत क्रियामत कहो मुहम्मद, कि नहीं है, इसका इलम मगर अल्लाह के पास और किसी मुलक मुरब्बि पास और नबी मुर्सलीन को उसकी इतला नहीं दी। और किस चीज़ ने जानने वाला किया तुझ को यानि मुतलक़ नहीं जानते। (क्रियामत का ज्ञान केवल हक़ को है)

**प० 261** जिसने इताअत(सेवा) की अल्लाह और उसके रसूल की जिस चीज़ में उसने हुक़म किया तो यकीन छूट गया। वो इताअत करने वाला बुराई से, और पहुँच गया भलाई को और अपने मुराद को। पहुँचना बड़ी मुराद को कि वो खुदा का दीदार है या बहिस्त। (सेवा से पाओगे पार)

### सूर: फ़ातिर

**प० 279** अगर चाहे ले जाए (खुदा) तुम को ए ए ज़मीन और लाए ख़लक नई यानि ऐसी क़ौम जो तुम से ज्यादा फ़रमांबरदार है। या ऐसे

गिरोह पैदा करें कि किसी ने देखा न सुना हो और नहीं है तुम्हारा ले जाना और औरों का लाना अल्लाह पर दुश्वार (कठिन) और न उठाएगा कोई नफ़स गुमराह करने वाला दूसरे के गुनाह का बोझ, (नई उम्मत मुहम्मदी यानि निजानंद संप्रदाय का जाहेर होना)

**प० 281** किताब इलाही कुरान किताबुमुतीर (रोशन किताबें) अंजील तौरैत। मिन किताब कुरान में से हमने अगली किताबें उम्मतों पर भेजी। फिर मीरास दिया हमने कुरान यानि तासीर की हमने उस की नाज़िल करने से ताकि अता करें हम उन लोगों को जिन्हें बरगुंजीदा छाँटा किया है। हमने अपने बंदों में से। यानि खातम-उल-नबी मुहम्मद से की उम्मत को अता की हक़ तआला ने मीरास फ़रमाया। मीरास वह माल होता है जो बिन मेहनत बिन मांगे हाथ आए। इस तरह यह बज़ा अता यानि कुरान ने मोमिनों ने की जुस्तजु के महज़ इनाएत फ़रमाया। जिस तरह बेगाना मीरास में दाख़िल नहीं इसी तरह दुश्मन भी कुरान से बेनसीब है या मीरास के हिस्सों के तफ़ावत है, जैसे आठवां हिस्सा। छठा हिस्सा दो तिहाई, एक तिहाई और कोई पूरी तफ़ावत से लेता है। इसी तरह अहले, कुरान के हिस्से भी मुवाफ़िक़ है। हर एक अपने इस्तेक्राक और इस्तेहदाल के अनुसार कुरान के हक़ाईक़ से बहरामंद होता है। (कुरान का बातून इल्म केवल मोमिनो के पास)

**प० 282** बाज़ बन्दों में से ज़ालिम है अपने नफ़्स पर कुरान के माफ़िक़ अमल करने में कमी करके और बाज़े उनमें से है कि अक्सर आकार कुरान पर अमल करते हैं और एक गिरोह उनमें से पेशी ले जाने वाले है। नेको में से कि हमेशा के एहक्राम पर अमल करते है। खुदा के इज़न से। साहेब फ़तुआत ने फ़रमाया है कि मातिम वो है, जो हमेशा खावे, ग़फ़लत से रहे, और मक़सद वो



है कि खावें, ग़फ़लत भी चौकें भी और सबक वही है जो हमेशा बेहार रहे। हक़ तआला ने अगली उम्मतों में से किसी उम्मत की ये निवाजें नहीं फ़रमाई और ये बुर्जुगी अता नहीं की। हक़ तआला फ़ज़ल की अज़ल से ज्यादा दोस्त रखता है। खुदपसंदगी वो आग है कि जब जलाई जाए तो इबादत की हज़ार धड़िया उससे जल जाती है। (स्वार्थ सिद्धि छोड़कर राह-ए-हक़ पर कुर्बान हो)

**प० 283** सारें सफ़ों पर जहान की उम्मत का बयान, बेशक हमारा रब अलबत्ता बख़्शनें ने वाला है। गुनहगारों को जज़ा देने वाला शुक्रगुजारों को वह खुदा जो उतारेगा अपने फ़ज़लें कर्म से, हमारे अमल के सबब से नहीं। हमको न पहुंचेगा उस अक्रामत के मकाम में कुछ रंज़। (अन्त में सभी को बदला मिलेगा)

**प० 286** क्या सैर नहीं करते अहले मक्का ज़मीन में ताकि देखे शाम और यमन की राह में कि कैसा था, अंजाम उन लोगों का जो उनसे पहले थे। यानि क्रौम आद और क्रौम समूद का और ये वह सख़्त मक्का वालों से कुव्वत की रो से और बावजूद इसके उन्होंने अज़ाब से रिहाई ना पाई और हर क्रौम की हलाक़त (नष्ट) के आसार उनके शहरो दयार में बाक़ी है। (हक़ के इंकार से सिर्फ़ तबाही हाथ लगती है)

### सूर: यासीन

**प० 286** नयाबेह में है कि हरूफ़ मुक़तआत में से हर एक हरूफ़ एक भेद है। ख़ज़ाना ग़ैब के भेदों में से कि हक़ तआला ने अपने हबीब अहले इस्लाम को उस पर इतला दी। बाद उसके ज़बराईल अलैहुसलाम उन पर नाज़िल हुए और खुदा और रसूल के सिवा कोई उस भेद में वाकिफ़ नहीं। बाज़ उल्मां ने पास की तफ़सीर

में कहा है कि कुरान का नाम है और हक्राईक सलमी में है कि अल्लाह के नामों में से एक नाम है और बाजों ने कहा है और ये हदीस कि के आम रस क़ौल की ताईद करती है। और तफ़सीर सावर्दी में है कि हज़रत पैग़म्बर के सात नाम कुरान में मज़कूर हुए। उनमें से एक पास है और वो अहलेबैत को आपास कहते हैं। इसकी ताईद करता है इमाम केसरी कुदस सर ने फ़र्माया है कि ये इशारा है मीमे मिसाक कि तरफ़ और सिन इबारत है उसके सिर से ए शौकं वालो दोस्तों वहरूल हक्राईक में है कि पास के माएने ये है कि कसम है यमन नबीवत हबीब की और उनके सिर मुतस्हक की और बाज़े इस बात पर है कि पास के माइने या इंसान है नबी लू उस में पास असल में या अनिसिन था। (ग़ैर का भेद हरुफ़ मुक्तआत में है जो सिर्फ़ इमाम साहिबुज्ज़मा ने कहा है)

**प० 296** लिखा है कि क़फ़ार मक्का कहते थे कि मुहम्मद अरबी शायर है तो हक़ तआला उनकी बात रद फ़रमाता है और नही सिखाया हमने मुहम्मद को शहर और न चाहिये उनको शायर कहना, (कुरान खुदाई इल्म है उसके इंकारी काफ़िर है)

### सूर: साप्फ़ात

**प० 304** तो हम क़बूल करने वाले हैं कि क़ौम नूह की तूफ़ान के सबब से हमने गर्क कर दिया और निज़ात ही हमने उसकी और उसके लोगों को बड़े ग़म से और पार कर दिया हमने उसके तीन बेटों को कि वह बाक़ी नसल की ज़हत से क्रियामत तक। हदीस में है कि हज़रत नूह की औलाद में हाम, साम और याफ़िस के सिवा और बाक़ी न रहा। और सब लोग उन्हीं के नस्ल से हैं। साम की औलाद में अरब, फ़ारस और रोम के लोग हैं और यासिफ़ की

औलाद में तुर्क खिर्ज और हाम की नसल में हिंदुस्थान और बल्ख (अफ़ग़ानिस्थान) के लोग और बाक़ी छोड़ी हम नूह पर नेकी और ब्यान करना पिछलों में, वासुदेव के तीन पुत्र श्री बलराम, श्री कृष्ण जी तथा कल्याण जी से ही सृष्टि संरचना हुई।

## सूरः साद

**प० 323** याद करो ए मुहम्मद जब कहा था तुम्हारे रब ने फ़रिस्तों में कि मैं पैदा करने वाला हूँ। बसर को मिट्टी से बसर से हज़रत आदम है। फिर जब पूरी करूँ मैं उसकी खिलक़त और सूरत और उनका काल बुत या शरीर बहुत खूब शःख़्स पर। मैं बना चुका और फूँकों में उनमें अपने रूह में से हक़ तआला ने अपनी रूह को अपनी नात की तरफ़ इज़ाफ़त फ़रमाकर मुशरफ़ और मुअज़ज़ फ़रमाया। उनकी नफ़ासत और पाकी जगी की वज़ह से खुलासा ये है कि फ़रिस्तों को हुकुम हुआ कि जब मैं आदम की काल बुत (शरीर) में रूह दाख़िल करूँ और वो ज़िन्दा हो जाये तो मुँह के बल गिर पड़ो तुम सब उसके वास्ते सिज़दा करने वाले ताज़ीम की तहत में से तो सिज़दा किया फ़रिस्तों ने। सब के सब ने उनके रूह फूँकने के बाद मगर इबलीस ने सिज़दा नहीं किया। बड़ा रखा अपने को और हुक़म न माना और हो गया उस नाफ़रमानी की सबब से काफ़िरों में से फ़रमाया हक़ ने ऐ इबलीस किस चीज़ ने बाज़ रखा तुझे। इस बात से की सिज़दा करें तू उसे जिसको पैदा किया। हमने अपने दोनों हाथों से। हाथ का ज़िक़र इस बात की तहकीक़ के वास्ते कि हज़रत आदम को पैदा करना हक़ तआला ही की तरफ़ मनसूब है यानि मैंने अपनी जात से आदम को पैदा किया। बग़ैर इसके कि उसके पैदा होने में मां-बाप या और कोई ग़ैर वास्त हो। अनवार में मज़कूर है कि

वेदी का जिक्र लम्बी है। इस बात पर कि आदम के पैदा करने में मज्जीद (बड़ी) कुदरत है। बाजी तफ्सीर में है दो हाथों से मुराद एक बात कुदरत है। एक बात नेमत फ़तुआत में है कि दस्ते कुदरत और दस्ते नेमत सब मौजूदाद की शामिल है। तो इस ताविल पर आदम के वास्ते कुछ बुर्जुगी साबित नहीं होती तो जरूर है। कि वेदी के लफ़्ज़ में ऐसे मायने हो जो हज़रत आदम की बुजुर्गों पर दलीलत करे, तो जुम्ला का हम्ल दो निसबतो पर मुनासिब (उचित) मालूम होता है। एक आदम की तनज़िया और दूसरा तसविआ। इस वास्ते कि आदम दोनों सिफ़्तों को जामें है और बहरूल हक़ाईक में है कि दो हाथों में दो सिफ़ते मुराद है एक लुत्फ़ दूसरी कैफ़ इस वास्ते ये दो सिफ़तें सब सिफ़ाते इलाही पर शामिल है। इस वास्ते कि कोई सिफ़त नहीं जो लुत्फ और क्रहर से खाली है। बाजी सिफ़ते जलाली है और बाजी जमाली। कोई मख़लूक नहीं जो इन सिफ़्तों में से किसी एक का मंज़र न हो। चुँनाचे मलाईका सिफ़त लुत्फ के मज्जे है और शैतान सिफ़त क्रहर का और आदमी दोनों सिफ़्तों की ख़ूब तज़बली का मंज़र है और इसी ज़मियत के सबब से उसे मसजूद होने के क़ाबिल किया जाये गर्ज है कि हक़ तआला ने इब्लीस से फ़रमाया कि तुमने उसको सिज़्दा क्यों नहीं किया तुने जिसे मैंने अपने दो हाथों से बनाया तक्व्वुर (घंमड) किया तूने बेइस्तेकाफ़ है तू बसरो में से जो बसरी का इत्तेफ़ाक़ रखते है। इब्लीस ने दूसरी शक की आख़्तियार किया, और जवाब में कहा कि मैं बेहतर हूँ इस मख़लूक से पैदा किया तूने मुझे आग से और किया तूने इसे मिट्टी से और इब्लीस ने इस क़यास में ख़ता कि और इसका एक सम्मा सूर एराफ़ में मजकूर हुआ। कस्बुल असरार में है कि आग फुरकत

का सबब है और मिट्टी वसलत का सबब। आग से टूटना होता है और खाक से 'अजतवर रब्बेहूँ' का मिल्लत मिलाया। इबलीस आग से था छूट गया, यहां तक कि काहिद मिसहा के हुकम से मरदूद हो गया। एक रोज़ एक तक सोरिदा सर ने हज़रत सुलतान उल आरिफ़ीन से कहा कि क्या होता है अगर ये खाक बेबाक न होती। हज़रत अबु शातिद ने एक नारा मारा कि अगर ये खाक न होती तो अहाते में इश्क़ रोशन न होती और सिनो कासीज और आँखों का इश्क़ न जाहेर होता। इस वास्ते कि अगर ये खाक न होती तो मेहर अज़ल की वह क्रौम सूँधता और कर वलम यज़ल से आशना क्रौम होता। फ़रमाया हक़ ने इबलीस से जब वो अपने बेहतरी के दावा कर चुका फिर निकल जा तू बहिश्त से यानि तू गंदा हुआ है। रहमत से बेशक तुझ पर है मेरी लानत रोज़े ज़ज़ा तक कहा इबलीस ने ऐ मेरे रब फिर मुझे मोहलत दे, जो तूने मुझे गंदा कहा है। उस दिन तक कि क़बीर से उठाए जाएंगे लोग। फ़रमाया हक़ ने कि पस बेशक तू मोहलत हिम्मत से है। उस दिन तक कि बाबत मालूम है यानि पहले बार सुरः फुंक्रने पर कि इस बाबत सब मर जाएंगे। कहा अबलीस ने फिर कसम है मुझे तेरे ग़ालिब और क़ाहेर होने की कि जिस तरह कर सकूँ ज़रूर गुमराह करूंगा औलादे आदम को सब को मगर तेरे उन बन्दों को उनमें से जो पाक किए गए हैं शिर्क और असियान के लौ से कहा हक़ ने फिर हक़ खूबी से है, और मैं हक़ कहता हूँ। ज़रूर भर दूंगा दोज़ख़ की तुझसे और उन लोगों से जो तेरी पैरवी करेंगे। आदमियों और ज़िन्नो में से उन सब से कहो ए हमारा हबीब नहीं मांगता मैं तुझसे तदबीर आई काम पर कुछ बदला। (श्री जी का इंकार करने वाले नष्ट हो गये एवं शैतान को लानत लगी)

## सूर: जुमर

प० 334 बेशक हमने उतारी तुझ पर किताब कि कुरान है। सब लोगों के वास्ते ब्यान हक़ के साथ। इस वास्ते कुरान शरीफ़ में लोगों की मुआरा व मुनाद की मसलहतें बयान है। तुम्हारे जिम्मा तो फ़क़त पैग़ाम पहुंचा देना है। (मोमिनों का फ़र्ज़ केवल दुनिया में संदेश भेजना मानना या न मानना उनका काम)

प० 335 इमाम महि-उल-रहमतुअल्लाह ने मुसालम में फ़र्माया है कि हर आदमी के दो नफ़्स हैं। एक नफ़से हयात और दूसरा नफ़से तमीज़। नफ़से हयात तो आदमी से मौत हो के बाबत जुदाई करता है और उसके ज़ाहिर होने से नफ़से तमीज़ भी ज़ाहिर हो जाता है और नफ़से तमीज़ सोते वक़्त मुख़ालफ़त करता है। उसके ज़ाहिल होने से नफ़स हैयात नहीं ज़ाहिर होता। अलबत्ता निशानियां हैं क़माल कुदरत पर और वास का हस्त के वास्ते उस गिरोह के वास्ते जो तफ़क्कर करते हैं। मार डालने के अम्र में के नींद के मुसाबा है और ज़िंदा करने के बाद में कि वो जागने की मिसल है, तौरैत में है कि ए नबी आदम जिस तरह तू सोता है इसी तरह मरता है और जिस तरह तू जागता है इसी तरह मरने के बाद उठाया जाएगा। और काफ़िर इममें कुछ ताअमील नहीं करते। (रुहें परमधाम में तुरंत ताली मारकर उठ खड़ी होगी तथा दुनिया में लोग ज़ान से जाग्रत होंगे)

प० 340 और फूँका जाएगा सूर: में पहली बार उनके क़ौल के मुआफ़क़ पर जो दो नफ़से ताबित करती है और इसे तफ़से नफ़स असहक़ा कहते हैं। इस वास्ते फिर सवार जब फूँका जाएगा तो बेहोश होकर गिर पड़ेगा और बहुत सही बात है कि मर जाएगा, फिर

दूसरी बार फूँका जाएगा। दूसरी बार नफ़स बाअस इस नफ़स से सब मुर्दे जिंदा हो जाएंगे उस वक़्त वह खड़े होंगे अपनी क़ब्र के किनारे इस जन्नत जाएंगे कि हमारे साथ क्या होता है और रोशन हो जाएगी ज़मीन महसर अपने रब के नूर से यानि उस नूर से जो नूरे ख़ुदा पैदा कर देगा, बाज़े कहते हैं नूरे अदल की रोशनी कहा है। (अस्त्राफ़ील का दो बार सूरः फूँकना)

## सूरः मुअमिन

**प० 344** आदम का सफ़वत, नूह का दावत, इब्राहीम मिल्लत, मूसा की कुर्बत ईसा की ज़हादत और मुहम्मद की शिफ़ाअत, (हस्स के मैदान में लाईनें लगेंगी)

**प० 342** इलम, हुकम, हक़, और ईमान जो कभी ज़ाया न होगा।

**प० 344** खुदाबंद अर्श है या अर्श का ख़लक और मालिक और डालता है रूह को भेजता ज़बराईल जिस पर चाहता है।

**प० 352** यहूद मुहम्मद सल्ल० से कहते थे कि तुम हमारे मान नहीं बल्कि अबू यूसफ़ बिन मसीह बिन दाऊद है। यानि दज़्ज़ाल कि उसकी सल्तनत ख़ुशकी और तरी में पहुंच जाएगी औप पानी की नहरें उस के साथ जारी होगी और बादशाही हमारी तरफ़ फ़िर आएगी और ख़ुदा की निशानियों में से एक निशानी है। तो यह आयत नाज़िल हुई यानि जो लोग दज़्ज़ाल के बाब में झगड़ा करते हैं और उस आयत, अल्लाह यानि ख़ुदा की निशानी मानते हैं उनके दिलों में कुफ़्र है। यानि हुकुमत और सल्तनत की ख़्वाहिश की उस हुकुमत और सल्तनत को न पहुँचेगे तो तुम ख़ुदा की पनाह मांगो। फ़िल्ना दज़्ज़ाल के सुरे में और ये भी कहते थे। कि दज़्ज़ाल एक दुबला आदमी के हुब से बहुत बड़ा है तो हक़ तआला ने

फ़रमाया था, कि ज़मीन आसमान को पैदा करना इन से पैदा करने से बढ़ कर है और बहुत लोग नहीं जानते कि दज़्जाल भी हमारी मख़्लुकात में से एक मख़लूक है। जानना चाहिए कि दज़्जाल एक आदमी है, और आदमियों के बनिसबत कद में बहुत बुलंद और उसका दुबला (पूँछ या दुम) बहुत बड़ा है और वो कान है कि उसका क्रियामत की निशानियों में से एक निशानी है। और हमारे पैग़म्बर ने उसके निकलने के अलामतें बयान की है कि उसके उरुज़ के केवल लौह गब्लों के हैं, के हैरत में मुब्तला होंगे। पहले वर्ष तो जितना पानी बरसाना था, उसका तिहाई हिस्सा कम बरसेगा और रहिदगी (फ़सल) एक तिहाई कम होगी। दूसरे वर्ष दो तिहाई या तीसरे वर्ष न पानी बरसेगा न ज़मीन पर घास आयेगी फिर दज़्जाल निकलेगा और उसके साथ जादू बगैरा बहुत होगा और बहुत ख़लक इसकी मुताबियत करेगी मगर जो खुदा को मज़बूत पकड़े और उसके साथ बहिस्त और दोज़ख़ भी होगी और ज़िन्न और शैतान उसके साथ होगा। कि वे आदमियों की सूरत पकड़ेगी तो एक से कहेगा अगर मैं तेरे मां बाप को ज़िन्दा कर दू तो मेरी खुदाई का इक्करार करेगा ? वो कहेगा हां। बस फ़ौरन स यातिस उसके मां बाप बन जाएंगे और उससे कहेंगे कि देख इसकी मुताबित कर ये तेरा मुख़ालिक है। गर्ज़ है कि वो सब शहर ले लेगा। मगर मक्का मुअज़्ज़िमा और मदीना मुनव्वरा जादू हुआ अल्लाह सर्फ़न इस वास्ते कि फ़रिस्ते इन दोनों शहरों कि निगहबानी करेंगे और जब मोमिनों पर काम तंग होता तो हक़ तआला हज़रत ईसा अलेहुसलाम को आसमान पर से उतारेगा कि वो दज़्जाल को क़त्ल करेंगे और उसके लश्कर में अक्सर यहूद होंगे। तमाम लश्कर की ईसा अलेहुसलाम क़त्ल करेंगे और हज़रत ईसा के नज़ुल



के एवज़ सूर जखर्फ में मज़कूर होगा। (ईसा दज्जाल को क़त्ल करेंगे होंगे उनके लश्कर में यहूद (हिंदू) ज़्यादा)

**प० 356** दुनिया तकलीफ़ का घर है। जज़ा का घर नहीं। तो दूसरा घर जरूर है जहां जज़ा पाए और वो क्रियामत में होगा। बेशक साएतें क्रियामत अलबत्ता आने वाली है। कुछ शक नही आने में इस वास्ते कि सब रसूलों ने क्रियामत वाक़्या होने का वायदा किया है और मगर बहुत आदमी नही ईमान लाते क्रियामत का और अपनी नज़र के कसूर और महसूलात के उल्फ़त (प्रेम) के सबब से उसकी तसदीक़ (प्रमाणित) नहीं करते। (अखण्ड परमधाम में दिव्य प्रेम)

**प० 356** भेजे हमने रसूल तुझ से पहले बाज़ उनमें से वो है कि उनके किस्से बयान किए हमने तुझ पर कि वो एक सौ बीस पैगम्बर है और बाज़े उनमें से वो है कि नही किस्से बयान कि हमने उनके तुझे मगर उनके नाम तुमने जाने है। नाम मुफ़स्सिरों का एक गिरोह इस बात पर है कि सब अंबिया आठ हजार थे, इस्त्राईल में और चार हजार तमाम ख़लक में और मशहूर बात ये है कि एक लाख चौबीस हज़ार थे, और उन पर ईमान लाते है और उनकी तफ़सील और गिनती जानना शर्त नही है। (बारह हज़ार ब्रह्मसृष्टियाँ कुल नबी एक लाख बीस हज़ार)

### सूर: हामीम अससज्दा

**प० 358** अल्लाह का इसमें अज़ीम हरूफ़ नुक्ता में पोशिदा है। हर एक को उससे निकलने में। साहेब बहरूल हक़ाईक़ में फ़रमाया है, कि हर उस चीज़ की तरफ़ इशारा है जो हक़ तआला और उसके हबीब के दरमियान राज़ और नियाज़ है कि कोई मुर्कर फ़रिस्ता

और नबी मुरसल उससे अगाह नही। इस वास्ते है और मीम दो हरुफ़ इलम रहमान के दरम्यान में है और यही दो हर्फ़ इसमें मुहम्मद के दरम्यान है जो ये दोनों तरफ़ है, उनके मेरे की कसम खाकर हक़ तआला फ़रमाता है। खुदा बख़्शीश करने वाले मेहरबान की तरफ़ से। उस हाल ने क़ुरान अरबी ताकि सहूलत के साथ पढ़े। (परमधाम के भेद है। हरुफ़ मुक्तआत में)

**पं 366** खुदा की तरफ़ फ़ेरा जाता है। जानना क्रियामत का यानि जब क्रियामत को पूछे तो उसका इलम खुदा पर ही हवाला करना चाहिए कि उसके सिवाए कोई नहीं जानता मुहम्मद बिन काअब से मनक़ूल है कि आशिकी दीने इस्लाम का ग़लबा है इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्ज़मां के ज़हूर के वक़्त। आगाह हो जाओ कि क़ाफ़िर शक़ में है अपने रब की मुलाकात से बाईस और ज़ज़ा के साथ। (क्रियामत का इल्म केवल हक़ को है)

## सूर: शूरा

**पं 379** हाम, ऐन, सीन, क़ाफ़, हरुफ़ मुक्तआत इशारा है, होने वाले फ़ितनें और वाक़्यात की तरफ़ इमाम सालवी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत इब्ने अब्बास नक़ल करते है कि हज़रत अली हम एक से कितनो को पहचानते थे। बाज़ो ने कहा है कि हरुफ़ है मीम महल का ऐन अज़ाब और सीन मसूख़ और काफ़ कज़ा और एक हदीस मारुफ़ है कि हरुफ़ नाज़ल होने के बाद हज़रत मुहम्मद साहिब के पेशानी से रंज का असर ज़ाहेर हुआ। सहाबा ने सब पूछा तो आपने फ़रमाया कि मुझे उन चीज़ों की ख़बर ही है जो मेरी उम्मत पर नाज़िस होगी। फिर कज़फ़ मसफ़ खसफ़ वगैरह दज़्ज़ाल के ख़र्ज और हज़रत ईसा के नज़ूला तक का किया। कसफ़ूल असरार

में है कि ये हरूफ़ उन अताओं की तरफ़ इशारा है जो खुदा हज़रत मुहम्मद को बख़्शे है इशारा है हौज़ कौसर उस हौज़ से उसमें उम्मत के प्यासों की आप सरोबार कर देगे। मीम मुल्क मग़दूर की तरफ़ और ऐन आब के उज़ब वजू के तरफ़ और सीन सना-ए-मशगूद की जानब की तरफ़ के आपके मुर्तबा के बुलंदी को कोई नहीं पहुँचता और क़ाफ़ मक़ाम मुहम्मद की तरफ़ कि शबे मेराज में दर्ज़ा और अदना है और क्रियामत के दिन सिफ़ात किया है।

**प० 380** मुहम्मद सल्ल० को दो पर्दों से इल्हाम हुआ। (हक़ तआला और रसूल सल्ल० में बातें हुई पर्दों में एक जर सुर्ख़ दूसरा सफ़ेद दोनों के बीच (70) सत्तर बरस की राह का फ़र्क़।

### सूर: जुख़ूफ़

**प० 381** हा म का अर्थ बयान किया

**प० 387** मुआलम ने फ़रमाया है कि शबे मेराज में मुहम्मद स० के वास्ते सब रसूलो को हक़ तआला ने जमा किया और आप को हुक्म दिया कि इन को पूछो आपने मज़मून में शक़ नहीं किया और किसी से नहीं पूछा साहिब ऐनुल मुआनी में लिखा है कि आसार में आया है कि हज़रत ज़बराईल ने हज़रत मैकाईल को पूछा कि मुहम्मद ने अंबिया से यह सवाल पूछा है। मैकाईल ने कहा आप बहुत कामिल और इमाम बहुत मिले और ईमान बहुत कम है या कि आप इस बात से

**प० 390** ईसा रूहअल्लाह के आने की निशानियाँ (देवचंद्र जी का प्रगटन)

**प० 390** बेशक़ ईसा अलै० इलम है साईत के वास्ते यानि उनके सबब से जानोगे कि क्रियामत नज़दीक़ है। इस वास्ते कि क्रियामत की

अलामत से मैं से एक हज़रत ईसा का उतरना है। कि जब अहले ज़मीन पर दज़्ज़ाल का तसद्दुत हो जायेगा, तो वह दमिश्क के पूरब तरफ़ के किनारे मुनादे बेज़ा के क़रीब उतरगेगे, और रंगीन कपड़े पहने हुए, अपनी दोनों हथेलियाँ दो फ़रिस्तों के बाजूओं पर रखे हुए, और उनके रुख़सार-ए-मुबारिक पर पसीना आया होगा, जब सिर आगे झुकायेंगे तो क़तरे उनके चेहरे मोती की तरह रवा होंगे और जिन काफ़िरों पर उनकी सांस पहुंचेगी वह मर जायेगा, और जहाँ तक उनकी निगाह पड़ेगी वहाँ तक उनकी सांस भी पहुंचेगी, फ़ि वह दज़्ज़ाल की तलाश में चलेंगे, और बाबुल दजू एक मौज़ है। विलायते शाम में जब वहाँ पहुंचेगे तो उस वक़्त याजूज़-माजूज़ निकलेंगे, और ईसा अलै० मोमिनो को कोहितूर पर ले जायेंगे, और वहाँ पनाह और आड़ पकड़ेंगे, गर्ज़ कि मालूम हुआ कि ईसा अलै० क़रीब क्रियामत की एक निशानी है।

**प० 392** लज़्ज़त दीदार इश्तियाक़ को जिस क़द्र रोके ज़्यादा होता है उसी क़द्र लज़्ज़त दीदार भी ज़्यादा होती है। (हक़ का दीदार मोमिन का होगा)

तुम्हारे वास्ते जन्नत में मेवे बहुत हैं। कमी नहीं तोड़ने पर कभी नहीं तबदीली नहीं। (परमधाम वर्णन किया गया)

### सूर: दुखान

**प० 394** ह, म और कसम किताब ज़ाहिर कि वह क़ुरान है कि महज़ अपने कर्म से बेशक हमने नाज़िल किया। बुर्जुग रात में बेक़द्र रात के बराबर और क्या बरक़त हो सकती है कि उस रात में किताबों की जो दीनी-दुनियावी पाईदों और ज़ाहिरी वाली वास्तों की सबसे लौहे महफूज़ से आसमान दुनिया पर नाज़िल हुई। बेशक

हम में दम है डराने वाले रात में शबे बारात उन बुजुर्ग रातों में से है जो उस उम्मत की अता हुई हदीस में है। (शबे बारात मोमिनो को नेमतें मिली)

**प० 396** या भेजने वाली है हम ज़बराईल की कुरान के साथ अपने हबीब पर उस रात हमने फ़रिस्तों को भेजा मोमिनों पर सलाम के साथ शराईत-उल-साईत हदीस में है कि फिर कर अल दुखाम व अल दज़्ज़ाल यानि फिर ज़िक्रर किया धुएँ और दज़्ज़ाल का। धुआँ मार करे दीवाना और वह धुआँ होगा मुशरिक़ से मग़रिब तक धेर लेगा लोगों को और चालीस दिन के बाद मोकूफ़ होगा।

**प० 399** जन्नत में जिन्दगी है उसके बाद मौत नहीं (अखंड शाश्वत जीवन परमधाम में ही है)

### सूर: जासिया

**प० 400** बहिस्त में हैयाते आब ही वह है, छुटकारा और मुराद पाना।

ह, म दे हुकम अज़ली, मीम मुल्क अब ही

**प० 402** तौरैत में मुहम्मद के आने की निशानी, बाज़ को हमने पैंगम्बर किया और किसी कबीलें में इस तरह पैंगम्बर नहीं हुए जितने बनी इस्राईल में हुए यूसुफ़ से ईसा तक। (यानि यहूदी (हिंदूओं में नबूवत ज्यादा आई है) बनी ईसाई पर तमाम

### सूर: अहक्राफ़

**प० 406** हम हुक्म कामिल और माज़िद है अहले तौहीद मीम मुर्ज़ा दे हक्र, (एक पार ब्रह्म की इबादत करनी चाहिये)

**प० 414** और यहाँ फ़रमाता है कि सब्र कर और जल्दी ना कर कुफ़ार कुरैश के वास्ते अज़ाब नाज़िल होने में कि बेशक अपने वक़्त पर

नाज़िल होगा गोया कि वह दिन देखेंगे तो उन्हें ऐसा मालूम होना।  
(सब्र करना जरूरी, जल्दबाजी नहीं करनी चाहिये)

### सूर: मुहम्मद

प० 415 हदीस में आया है कि मेरी उम्मत का आखिरी ज़िहाद दज्जाल पर होगा इमाम शाफ़ई इस बात पर है कि इमाम को अख़्तियार है कि काफ़िरों को क़त्ल करे लौड़ी गुलाम बनाए, या छोड़ दे माल असबाब के बदले या मुसलमान को बदले। (मन रूपी दज्जाल पर विजय प्राप्त करना जरूरी है ध्यान लगाने के लिये)

प० 417 जन्नत में चार नहरें, पानी, दूध, शराब, गुस्ले मुहब्बत की (परमधाम के आठ सागर में से चार सागर का वर्णन)

### सूर: फ़तह

प० 426 यकीनी जिन लोगों ने बात की तेरी हबीबी या में सिवाय इसके नहीं कि उन्होंने बैअत की है। अल्लाह की इस वास्ते कि बैअत से मक़सूद रही है और उसकी रज़ामंदी ढूँढने को है। इसी बैअत से रजवा मुराद है। (हक़ की रज़ा में मोमिन की रज़ा है)

### सूर: हज़ुरात

प० 430 जो लोग उनके साथ है, मोमिन सख़्त दिल और कड़े है काफ़िरो पर मेहरबान है। आपस में देखता है तू उसको रक्स करने वाले सिज़दा करने वाले। मौज़ा में है कि यह सब सिफ़्ते सहाबा की है। मगर इन अल्फाज़ में इशारा ख़ास असहाब के साथ है। हर एक सिफ़्त ख़ास होने का हज़रत अबूबक्र उमर फ़ारुक रहमतुल्लाह अलैह उस्मान, अली,

यह सिफ़्त जो मज़कूर हुए उनकी सिफ़्त मूसा की किताब तौरैत में, ईसा की इंजील में, (चार सहाबा, लालदास, केशोदास, मुकंद दास और महाराजा छत्रसाल जी का वर्णन)

## सूर: क्राफ़

**प० 440** और जानना चाहिए कि हक़ तआला कब बेचून बेचगून होता है, ऐ अज़ीज़े जान, जो जान इनसान से मिली हुई है उसके करीब की कैफ़ियत नही दरयाफ़्त हो सकती। तो हक़ तआला का कर्ब जो कैफ़ियत से पाक और जनज़ा है क्यों कर दरयाफ़्त हो सकता है।

हक़ तआला का कर्ब बंदे की दो क्रिस्म पर है। एक तो तमाम खल्क की इलम और कुदरत के सबब से दूसरे ख़ास दरगाह की ख़ास ने कियो और फ़रिश्ते तो इस तरह निगाहबान है और उसका नेकबाद लिख रहे है कि नागाह अज़ल आप पहुँचगे और आएगी ग़शी मौत की ख़ुदा के हुक़म से कि वह हुक़म हक़ है और उस अज़ल रसीदा बंदे से फ़रिश्ते कहेंगे कि मौत है वह चीज़ जिस से, (हक़ की सूरत के बेचून, बेचगून होने की हक़ीक़त)

**प० 443** और रात में से पस नमाज़ पढ़ और कान लगाए रहियो और सुनियो जिस दिन कि सदा करने वाला यानि अस्त्राफ़ील नज़दीक जगह से आसमान के करीब है यानि बैतुल मुक़द्दस के सुख़रा परसे के तमाम ज़मीन की मिलकत (स्वामित्व) आसमान से 18 मील करीब है या अस्त्राफ़ील की आवाज़ सब जगह बराबर पहुँचेगी। हदीस में है कि अस्त्राफ़ील सुख़रा पर खड़े होकर कानों में अँगुली दे के पुकारेंगे ऐ, चूर-चूर हड्डियों, ऐ छूटे हुए गोस्त और ए परेशान बाल हक़ तआला फ़र्माता है, सब जमा हो जावे जज़ा और फैसले वास्ते जिस दिन सुनेंगे चिंघाड़ वास कों कि वो

दूसरी बार सूर: फूँकना है। उस चीज़ के साथ जो हक़ है यानि वास और कहेंगे सुनने वालों से कि ये दिन है कब्रों से निकलने का। बेशक हम ज़िन्दा करते हैं, हम मुर्दों को और मार डालते हैं हम दुनिया में और हमारी तरफ़ फ़िरना उनको हिसाब के वास्ते। याद कर वो दिन जब छूटेगी ज़मीन और दूर हो जाएगी से आदमी दौड़ते हुए पुकारने वाले के तरफ़ जमा करना और उठाना है हम पर आसान। (अस्त्राफील का दो बार सूर: फूँकना)

## सूर: ज़ारियात

प० 444 उनसे वो मुर्क़रर फ़रिस्ते मुराद है जिनके नामजद एक एक बड़ी काम है ज़बराईल से वही मैकाईल से रहमत और रोज़ी इज़राईल से मौत और अस्त्राफील से सूर: फूँकने पर मुर्क़रर है। हक़ तआला इन मज़ीद और बड़ी चीज़ों कि कसम याद करके फ़रमाता है, सिवा इसके नहीं कि वो चीज़ जिसका तू वायदा दिए गये हो हस्र-नस्र सबाब, और अज़ाबानी ज़रूर होना। उसमें कुछ शक़ शुबह: नहीं और कसम आसमान की जो सख़्ती और मज़बूती वाला है। बड़ी जीनत या बड़ी सूरतवाला और अच्छा मालूम होने वाला या दावों-रावों वाला। और तिबियान में है कि हज़रत अब्दुल्लाह-बिन-उमर नकल करते की इससे सातवां आसमान मुराद है हक़ तआला उसकी कसम ख़ाकर फ़रमाता है कि बेशक तुम ऐ मक्क्रा वालों अलबत्ता मुख़ालिफ़ बातों में हो, मेरे पैग़म्बर के साथ यानि उनको कभी साहिर (जादूगर) कहते हो, कभी शायर कभी काहन, कभी मंजून या क़ुरान की शान में तुम्हारी बातें मुस्तलिफ़ है जो उसे शायर कहते और शेर और कहानी और इफ़तरा किया हुआ और अगलों कि कहानियाँ फेरा जाता है।



मुहम्मद पर ईमान लाये या कुरान से वो मारूफ है (चार बड़े फरिश्तों के काम अलग-अलग है)

**प० 446** तिबियान में कहा है कि जो चौथे आसमान में है, और आसमान में वो भी है जिस चीज़ का तुम को वायदा किया यानि सबाब इस वास्ते कि जन्नत और उसकी नेमते सातवें आसमान में है। सिद्र-तुल-मुंतहा के करीब। (बैकुंठ, अछरधाम, परमधाम का वर्णन किया गया है)

### सूर: नज़्म

**प० 456** ज़बराईल उस काम पर सख्ती के साथ क़ायम हो गये जिस पर मामूर थे या अपनी असली सूरत पर ठहरे और वो आसमान के ऊँचे किनारे पर था, यानि मतला-ए-आफ़ताव के करीब यहाँ तक की रसूल ने उनको देखा और रसूल मक़बूल के सिवा हज़रत ज़बराईल को किसी ने सूरत महक़ी पर नहीं देखा और आपने उनको दो बार देखा है पहली बार असली सूरत पर देखा तो बेहोश हो गये और जब आप होश में आये तो हज़रत ज़बराईल को अपने करीब देखा, कि एक हाथ आप सीना-ए-मुबारिक़ पर, और दूसरा आपके सीना पर रखे हुये थे। हक़ तआला इसी बात से ख़बर देता है कि फिर नज़दीक़ आए ज़बराईल पैग़म्बर के बाद इसके के आप ज़बराईल को देखकर बेहोश हो गये फिर सिर झुकाया हज़रत से बात करने को तो था फ़र्क़ ज़बराईल और मुहम्मद के दरमियान दो कमानों के दरमियान का था कि उससे भी बहुत कम फिर वही चीज़ ज़बराईल ने और ज़ाहेर कर दिया ख़ुदा के बन्दे की तरफ़ की मुहम्मद सल्ल० है जो कुछ वही की ख़ुदा ने यानि ज़बराईल से कहा और बाज़ों के क़ौल पर बाज़ी

जमीरें हक़ तआला की तरफ़ फ़िरती है, और बाजी मुहम्मद सल्ल० के तरफ़ इस तरह पर कि नज़दीक़ हुए मुहम्मद साहिब के साथ यानि कुमुक दरगाहें इलाही तह मर्तबा में मकान में नहीं। फ़िर फ़िरोतनी की यानि ख़िदमत का सिज़्दा सिखाया था, तो दोबारा ज़्यादा ख़िदमत अदा की, और सिज़्दें में कर्ब का वायदा भी है कि और मकान का बकोशिन जो अदना बनाया है ताक़ीद कुर्बत और तक़रीरं मुहब्बत से पेश से करीब तो जाने के वास्ते तमसिल की सूरत में अदा हुआ इस वास्ते। (ज़बराईल मेराज़ के लिये ले चले मुहम्मद स० को पाक-साफ़ करके)

**प० 456** अब्बुल हसन से इस आयत के मायने पूछे जवाब दिया, कि जहां ज़बराईल की गुँजाईश नहीं नूरी कौन है, कि उसकी बात कह सके। (परमधाम में जहां ज़बराईल नहीं जा सकता तो बाकी की क्या कहे)

**प० 456** उन्होंने कहा कि पैग़म्बरे ख़ुदा ने शबें मेराज़ में दिल की आंखों से दो बार ख़ुदा को देखा। (दो बार हक़ का दीदार किया हज़रत मुहम्मद ने)

### सूर: क्रमर

**प० 461** यह पैग़म्बर एक पैग़म्बर है। ड़राने वाला अगले पैग़म्बरों की जिन्स से। यह पैग़म्बर वही फ़रमाते हैं जो अगले पैग़म्बरों की जिन्स से। यह पैग़म्बर वही फ़रमाते हैं जो अगले पैग़म्बरों ने फ़रमाया। करीब हुई करीब होने वाली यानि क्रियामत जो करीब और नज़दीकी के साथ की गई है। (क्रियामत का डर)

**प० 464** तहक़ीक़ फ़िर कर दिया आसान हमने क़ुरान को अरबी ज़बान में भेजा नसीहत पकड़ने को

## सूर: रहमान

प० 472 बाज्रों ने कहा है कि जो शख्स तकिया लगाए बैठा होगा जिस फ़ल की ख्वाहिश (इच्छा) होगी वही उसके मुँह में आ जाएगा।

## सूर: वाकिया

प० 474 और होंगे तुम ऐ मुक़लफ़ (सुसज्जित) लोगों उस वक़्त अफ़साना तीन यानि तुम सब तीन मर्तबा पर तीन ग़िरोह होंगे तो दाहिने हाथ वाले क्या है दाहिने हाथ वाले हक़ तआला उनकी ताज़ीम करता है, जैसा कि तू यूँ कहे कि फ़लानी क़ौम के लोग बुजुर्ग़ है और क्या बुजुर्ग़ है। इस इस्तेआफ़ाम में तअजुब की माईने भी है और असहाब यमन वह लोग है, आदम के दाहिने हाथ की तरफ़, जिनके हाथ से नामा-ए-माल देंगे या जो लोग ज़न्नत में जाएंगे- ज़न्नत अर्श के दाहिने हाथ है और बाएं हाथ वाले यह लोग ज़रीयत निकालने वक़्त हज़रत आदम के बाएँ हाथ की तरफ़ थे, या इन के नामा ए माल बाएँ हाथ में होंगे। यह लोग दोज़ख़ में जाएंगे। दोज़ख़ अर्श के बाईं तरफ़ है और शफ़क़त ले जाने वाले ज़न्नत वाले ज़न्नत में जाने के लिए है ईमान के साथ। (दो उम्मेते ब्रह्मसृष्टि जीव सृष्टि का वर्णन है)

प० 476 एक सो बीस उमते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की (यानि ब्रह्मसृष्टि सिरदार)

प० 476 असहाबे यमीन के वास्ते (यानि जो दाहिने हाथ वाले है) कि असहाब ज़मीन कौन लोग है, तो हक़ तआला फ़रमाता है एक ग़िरोह है अगली में से और एक ग़िरोह है पहले में से। इसके असबाव नज़िल में लिखा है कि जब ये आयत नज़िल हुई तो

हज़रत फ़ारुक् हम पर ईमान लाए और हमने आप की तस्दीक की तो हममे से थोड़े आदमी निज़ात पाएंगे तो ये आयत नाज़िल हुई कि और हज़रत ने ये आयत फ़ारुक् सामने पढ़ी हज़रत फ़ारुक् ने कहा यानि हम राज़ी हुए अपने रब से और पैग़म्बर ने फ़रमाया कि आदम से मुझ तक एक गिरोह और मुझ से क्रियामत तक एक गिरोह और मुछ से क्रियामत तक एक गिरोह, और हदीस में आया है कि यानि में आरजू करता हूँ कि अहले जन्नत में से आधे तुम लोग होंगे और अनकरीब ये बात बयान हुई है कि जन्नती लोग, 120 सफ़ होंगे उनमें 80 मेरी उम्मत की होगी और बायें हाथ वाले क्या है ज़लील और बेक़द्र

**प० 479** पाक हुए बिना क़ुरान को न छुओ। (जिस्म व रुह की पवित्रता ज़रूरी)

**प० 480** असहाब समीन में से और बहुत मशहूर ये तफ़सीर है। कि सलाम तुझ पर ऐ मुहम्मद असहाब समीन की तरफ़ से कि वह तेरे भाई है। या उनसे तुमको सलामती की खुशख़बरी पहुंचे, यानि तुम खुश हो कि वह सब आप्तों से सही सालम है। (मोमिन मुहम्मद स० के भाई हैं)

## सूर: हदीद

**प० 482** वह है जिसने पैदा किये आसमान और ज़मीन अपनी कामला कुदरत छः रोज़ की मुद्दत में ताकि फ़रिश्ते देख ले एक के बाद एक पैदा होना। फिर उसने कस्द किया अर्श की तदबीर का और अपने इरादे के मुआफ़िक् उसके मुतलक् अम्र जारी करने का जानता है वह चीज़ अंदर आई है। (छः दिन में सृष्टि संरचना की गई)

## सूर: हश्र

प० 497 या यह लोगों का पहिला हस्त्र है मुलकें शाम की तरफ़। इस वास्ते कि आखिर ज़माना एक आग मशरिक़ की तरफ़ से आएगी और लोगों को मुल्क शाम की तरफ़ लगाएगी और वही क्रियामत होगी और वह दूसरा हस्त्र क़ायम होगा। (पूर्व से क्रियामती आंधी चलेगी पश्चिम की तरफ़)

## सूर: सफ़फ़

प० 500 हक़ तआला ने मुसलमानों के तीन मर्तबा किये हैं, मुहाज़िर हिज़रत करने वाले, ताबर्हन् हुक्म मानने वाले, अन्सार मदद करने वाले।

प० 509 और अल्लाह राह नहीं दिखाता अपनी मारिफ़्त की राह दायरा ए फ़रमान से बाहर निकलने वालो को याद कर उसे भी कि कहा ईसा बिन मरियम ने अपनी क़ौम को कि बनी ईस्त्राईल बेशक मैं रसूल हूं। अल्लाह की तुम्हारी तरफ़ खुली दलील और रहमत के साथ हालांकि तसदीक़ करने वाला हूं उस चीज़ को जो मुझ से पहले है, किताब तौरत और मैं खुशख़बरी देने वाला हूं। एक रसूल की, वह आएंगे दीन कामिल और शरा-शामिल के साथ मेरे ज़माना के बाद कि नाम उनका अहमद है यानि बड़ी तारीफ़ करने वाले और हज़रत ईसा के कलाम का तर्जुमा यह है, - के मायने अहमद है यानि हज़रत ईसा ने कहा कि यकीनी में जानने वाला हूं अपने रब और तुम्हारे रब की तरफ़ और अहमद मेरे बाद। तिबयान में है कि ज़बान सीरयानी में हज़रत मुहम्मद का नाम मतहमया है और उसके मायने है कि खुदा भेजेगा तुम्हारे पास मसीह के बाद। (श्री जी साहिब जी आख़रुल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़मा व ईसा रुह अल्लाह का ज़ाहेर होना)

**प० 510** अल्लाह पूरा करने वाला है नूरे दीन और रोशनी शरः रसूल की क्रियामत होने के क्रिब्ल। सब दीन और मिल्लत पर हज़रत ईसा अलैहिसलाम के उतरने के वक़्त सब ज़मीन के लोग दीने इस्लाम कबूल कर लेंगे। (दुनिया में एक दीन निजानंद संप्रदाय ही रहेगा)

### सूरः जुमुअ

**प० 512** और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है और उसके फ़ज़ल के सामने दुनिया और आख़िरत की सब निआमते हक़ीर और नाचीज़ है मिसल उन लोगों को जो तहमाल किये गये तौरेत का यानि जिनको हुक़म हुआ कि अहक़ाम तौरेत का भार उठाए फिर न उठाया उन्होंने वह भार और फ़क़्त जुबानी पढ़ते रहे तौरेत और उसके अहक़ाम पर अमल न किया उनकी मिसल गधे की सी है कि उठाता है किताबें इल्म की यानि उठाने में रंज उठाता है और उससे कुछ फ़ायदा नहीं उठाता। यही हाल यहूद का है कि तौरेत पढ़ते हैं पर फ़ायदा नहीं उठाते। (इल्म पढ़कर उस पर अम्ल करना ज़रूरी है। नहीं तो ज़हालत ही ठीक है।)

### सूरः तहरीम

**प० 526** और रूस्वा (बदनाम) न करेगा उन लोगों को भी जो रसूल के साथ ईमान लाये, यानि उनकी शिफ़ायत भी उन के दोस्तों के बाद क़बूल फ़रमाएगा। नूर उनका यानि वह नूर जो अल्लाह ने मोमिनों को दिया है, दौड़ता और चलता होगा, उनके आगे और उनके दाहिने उस वक़्त जब सात पर गुज़रेंगे, उस वक़्त मुनाफ़िकों का नूर बुझ जाएगा। कहेंगे मोमन को, ऐ मेरे रब पूरा कर दे हमारे वास्ते नूर हमारे यानि हमारा नूर बाक़ी रख ताकि मेराज़

पर से हम सलामत गुज़र आएँ। बख़्श देने पर क़ादिर है। (एक निजानंद संप्रदाय के अलावा कहीं भी नूर-ए-हक नहीं)

### सूर: मुल्क

**प० 528** हक्र तआला ने मौत को एक सीरी मेड़ की सूरत पर पैदा किया जिस पर उसका गुज़र होता है या बू पहुँचती है। वह मर जाता है और ज़िन्दगी को एक घोड़ी की शक़ल पर पैदा किया वह जिस पर गुज़रती है वह जिंदा हो जाता है। आसमान दुनिया एक मौज़ मज़बूत हो गई है। दूसरा आसमां भर भर सफ़ेद है तीसरा लौहा, चौथा शीशा या तांबा पांचवा चांदी, छठा सोना, सातवां याकूत सूख़, (ज़िंदगी मौत रब की कुदरत है)

**प० 531** सिवाये ख़ुदा के नहीं इलम यानि उसके आने का इलम जानना ज़ाहिर यानि क्रियामत आने से तुम को ड़राता है। मगर उसके आने का वक़्त में नहीं जानता। (क्रियामत का सही समय रब के हाथ में)

### सूर: नूह

**प० 534** ऐसे शख़्स की इतायत न करो कि जब उस पर पढ़ी जाती है हमारी आयतें हमारे कलाम की उसको नाक पर या उसको हम स्याह कर दे या हम उसका ऐसा ऐब खोल दे कि फ़िर वह न छुपा सके, अनवार में है कि ज़ंगे बद्र के दिन उसकी नाक पर जख़्म (घाव) लगा और उसका असर बाक़ी रहा बेशक हमने आज़माया। (संयमी रहो ऐबों से दूर रहो ताकि शर्मिदा न होना पड़े)

**प० 536** रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि हमारे रब साफ़ अर्क़ से नूर खोल देगा और हर मर्द औरत उसको सिज़दा करेगी। दिखाकर ज़ाहिरी

सिज़्दा करने वालों की पीठ सख़्त हो जायेगी और वह सज़्दा न कर सकेगी और हदीस में है कि मुनाफ़िक़ और काफ़िर की पीठ एक ढाल हो जायेगी। (काफ़िरों की पीठ सख़्त हो जायेगी तथा मोमिन सिज़्दा करेगे सारी दुनिया भी बाद में सिज़्दा करेगी)

## सूर: हाक्का

**प० 538** वह हालत जिसका वाक़िया होना हक़ है-क्या हालत है और क्या साईत है, जिसमें अमलों की मकाफ़ात। (बराबर खड़ा होना) और ज़ज़ा (बदला) होगी, इससे क्रियामत का दिन मुराद है और हाका(क्रियामत) भी उस का एक नाम है।

पस हलाक किये गये तू और सर्द हवा हद से गुजरी हुई से यानि जो फ़रिश्ते उस पर मुर्क़र है उनका हुक़म न मानने वाले हदीस में है कि एक बर्षा हवा और पानी का कतरा दुनिया में भेजा जाता मगर एक वजन और मिक़दार मालूम के साथ लेकिन क़ौम हूद जिस हवा और पानी ने यानि की वह उन फ़रिस्तों के हुक्म में न रहीं और जो उस पर मुसल्लत और मवक्कल है, तफ़सीरे क़बीर में है कि फ़रिश्ते हवा को ना रोक सके और ख़ुदा ने मुसल्लत कर दी वह हवा क़ौम आदम पर सात रात और आठ दिन बुध की फ़ज्र से अगले बुध की शाम तक दिन रात चलता रहा।

फ़िर गुनहगार होंगे हर क़ौम के लोग अपने रब्ब के रसूल के तो पकड़ा ख़ुदा ने उनकी सख़्त पकड़ना और उम्मतों से ज़्यादा उन पर अज़ाब किया पकड़ना और बचाया हमने तुम्हारे बाप-दादा को उस क्रिश्ती पर जो पानी पर रवा थी यानि सफ़ीना नूह में ताकि कर दे हम उस क्रिश्ती को तुम्हारे वास्ते एक नसीहत और इबरत मोमिनों की निज़ात और काफ़िरों की हलाक़त के नाम में



और निगाहबान रखने वाला जो बात सुन कर फ़ायदा उठाता है।  
(नूह नबी के यहाँ सात दिन-आठ रात लगातार पानी बरसता  
रहा मोमिन बचाये किशती पर काफ़िर डूब मरे अन्दर पानी में)

**प० 539** फिर जब फूँकी जाएगी सूरः में एक फूँक कि वह एक नफ़्सा  
असहक्रा है और उठाई जाएगी ज़मीन और उठा लिये जाएंगे  
पहाड़ राई के गोलों की तरह उस वक़्त वाकिआ होगी वाक्रिया  
होने वाली यानि क्रियामत क़ायम हो जाएगी और फट जायेगा  
आसमान और फ़रिश्ते आसमानों के किनारे होंगे कि ख़ुदा का  
हुक्म हो और नीचे उतर आएँ और उठाएंगे अर्श तेरे रब का  
उन फ़रिश्तों पर जो आसमान के किनारे आराम एमाल-नामः  
पेश किया जायेगा। (अस्त्राफील के सूरः से ज्ञानियों का अहंकार  
उड़ जायेगा)

अच्छे कर्मों की ज़ज़ा जन्नत के आराम रोज़ा निमाज हज़ कलमा  
सब गुनहगारों के लिये सज़ा (बंदगी दिल से कीजिए तो सिला  
(फल) मिलता है अन्यथा नहीं)

**प० 540** सब गुनाह कबीरा का सिरदार शिर्क है। पस न ऐसा है जो क़ाफ़िर  
करते हैं कि क़ुरान मुहम्मद का बनाया हुआ है। कसम खाता हूँ  
उस चीज़ की जो तुम देखते हो और जो तुम नहीं देखते ग़ायब  
चीज़ें बेशक क़ुरान पढ़ना है एक रसूल का कि ख़ुदा के नज़दीक  
बुर्जुग है- बाज़े ने कहा है कि ज़बराईल है और नही है कलाम  
शायर-न क़ुरान है, काहन का कुर्म उतरा है रब अहले आलम  
को रब के पास से।

हसरत है काफ़िरो पर क्रियामत के दिन कि क़ुरान का ख़्वाब देखेंगे  
और ख़ुद उससे महरूम होंगे और तहक़ीक़ सही है यकीन है

खुदा से आया है। (यहूदी (हिंदू) कुरान को मानेंगे तथा कुछ मुस्लिम उल्ट काम करेंगे तथा सजावार हो जायेंगे।

## सूर: मुआरिज़

**प० 541** मेराज सीढ़ी ऊपर चढ़ने की खुदावंद बुलंद दरवाजों (जन्नत) में ऊँचे-ऊँचे महल इत्यादि अपने दोस्तों के वास्ते मुहैया किये हैं या बुलंद मुकामात कलमात, त यबात के बुलंद होने की मुकर्रर फ़रमाए हैं ऊपर जाते हैं फ़रिश्ते और ज़बराईल या गिरोह जो फ़रिश्तों में बड़ा है हुकमे इलाही के अनुसार उस दिन में की है मिकदार पच्चास हजार वर्ष दुनिया के वर्षों से एक दिन रब का अलबत्ता यह दिन हजार साल का है।

सनीन अबदी और सरमदी के आयाम का बयान इन औराक में नहीं समाता कहते हैं क्रियामत दूर है। नहीं है और न होगी क्रियामत को पहाड़ रूई की तरह रेज़ा-रेज़ा हो जाएगा। तब पूछा जाएगा कोई बेगाना अपने बेगाने के गुनाह से यानि हर एक से उसी के गुनाह और अफ़आल पूछे जाएंगे। (रब का एक दिन दुनिया के हजार)

**प० 539** बाज़ो ने कहा है कि फ़रिश्तों की आठ सफ़ैअर्श को उठाएंगी कि उन को खुदा को सिवा कोई नहीं जानता। (मुक्ति पीठ धाम परना की आठ मीनारें आठ बहिश्तों की पहचान जो कि जागनी के मूल मिलावे की शोभा है)

**प० 542** लबाब में मकातूल, से मनकूल है कि एक जानवर है। कौह काफ़ के पीछे एक हर रोज़ सात मैदान घास खाली और साफ़ कर जाता है और सात दरियाओं का पानी पी जाता है, और न गर्मी में सब्र करता है। न सर्दी में और हर रात इसी बयास और अंदेशा में रहता

है कि कल मैं क्या खाऊंगा जो हक़ तआला आदमी की बेख़बरी और रोज़ों की फ़िक्क़ में इस चारपाया से हशबीह देता है। (मोमिन की पहचान आधा पेट खाना जबकि मुनाफ़िक्क़ सिर्फ़ खाने-पीने को ही असल मक़सद समझते हैं)

## सूर: नूह

**प० 545** पैदा किये अल्लाह ने सात आसमान तबका बर्तब का और चाँद को उनमें से एक में रोशनी और एक की या उसने आफ़ताब को चिराग़ अहले ज़मीन का हज़रत रसूल को इस ज़ाहत से चिराग़ फ़रमाया कि आपकी नूर ने कुफ़्र और निफ़ाक़ का नूर आलम से जाहल कर दिया।

और ख़ुदा ने उठाया तुम को यानि तुम्हारे बाप आदम को खाक़ से पैदा किया, फिर फ़ेर लिया जाएगा तुम को ज़मीन में और फिर निकालेगा हिसाब के वास्ते और ज़ज़ा के लिये। (सबका इंसफ़ हक़ के हाथ में है)

## सूर: ज़िन्न

**प० 549** यानि कर दी गई। मेरे वास्ते तमाम ज़मीन मस्जिद और पाक तो ज़मीन के किसी कितःऔर किसी वाक्यः मैं ख़ुदा की याद के साथ किसी दूसरे की याद ख़ूब (अच्छी) नहीं। (ध्यान चितवन के समय धनी के अलावा किसी का स्मरण करना ठीक नहीं है)

**प० 550** करीब है कि जाने जब वायदा किया हुआ, क्रियामत के दिन का इलम मुझे नहीं वह जानने वाला है पोशीदा चीज़ों का तो जाहिर नहीं करता और मुतब्ला नहीं करता उस ग़ैब पर जो महसूस है उसी के इलम के साथ मगर जिसे पसंद कर लेता है अपने रसूल

में से कि उसे उनमें से बाज़ पर इतला देता है ताकि उस रसूल का मौज़िज़ा हो और यहाँ रसूल से मुराद मुहम्मद सल्ल० है। पस तबकीक कि दर लाता है यानि करता है उस पसंदीदा रसूल के सामने से और उसके पीछे से निगेहबान फ़रिश्ते कि उसे बचाए रखते हैं, ताकि जान ले नबी जिसकी तरफ़ वही आई है यह कि पहुँचा दिये ज़बराईल और भलाई करने जो नज़ूल वहीं ये वक़्त उसके पीछे से निगाहबान फ़रिश्ते कि उसे बनाए रखते हैं ताकि जान ले नबी जिस की तरफ़ आई है यह कि पहुँचा दिये ज़बराईल और भलाई करने जो नज़ूल वहीं के वक़्त उस के साथ रहते हैं। पैग़ाम भेजे हुये अपने रब के वे बग़ैय्यर और बेतबदील और घेर लिया ख़ुदा के इलम ने और शामिल हुआ उस चीज़ के साथ दो रसूलों और फ़रिश्तों के पास है और गिन लिया है ज़मीन के रेत के दाने और पानी, (छिपी बातों का भेद केवल हक़ को ही है)

### सूर: मुज़म्मिल

**प० 552** रात को उठकर इबादत करने के दिन की बनिस्बत ज्यादा फ़ायदेमंद है, बेशक हमारे पास है आख़िरत में दीन के दुश्मनों के वास्ते बेड़ी या भारी कि उनमें मुक़ैयद होंगे और बड़ी आग दहक़ती हुई कि उसमें जल जाएँगे और ख़ाना गले में अटकता हुआ जैसे ज़री और ज़कुम (वृक्ष) और अज़ाब दर्दनाक सिवाय इसके बहुत सी सख़्त्तियाँ कि ख़ुदा के सिवाय उसकी हक़ीक़त नहीं पहचानता सबाब में है यह आएत नाज़िल होने कब। (रात में की गई इबादत का सिला तुरंत मिलता है तहज़ज़ुज नमाज़ की तरह)

**प० 553** मुहम्मद सल्ल० बेहोश होकर गिर पड़े और फ़रमाया यह वायदे सच होंगे जिस दिन थर्राएगी ज़मीन और जुंबस में आएँगे पहाड़

और हो जाएंगे बड़े-बड़े पहाड़, टीला रेत का प्रागंदा यानि सख्त पहाड़ रेगरवां की तरह हो जाएंगे, उस रोज़ की हैबत से बेशक भेजा हमने तुम्हारी तरफ़ ऐ मक्का वालों एक पैग़म्बर यानि मुहम्मद सल्ल० को तुम्हारे अक्रवाल पर यानि क्रियामत के दिन गवाही देंगे दावते इस्लाम कबूल न कबूल करने पर जैसे मूसा फिर्ऑन पर (मुहम्मद सल्ल० आये लोगों को क़ायम कराने के लिये)

### सूर: मुददस्सिर

**प० 554** और अपने रब की ताजीम के साथ याद करे और अपने कपड़े पाक कर मैल से और सब गुनाहों से किनारा कर यानि जिस तक़्वा पर तू है उस पर तू रह और देकर एहसान रख और अपने ख़ुदा के राह पर साबिर रह। फिर जब सूर: फूँका जाएगा सूर: यानि इस्त्राफ़ील का तो यह फूँकना निशानी उस दिन की सख्त की काफ़िरों पर हिसाब में उनके साथ तंगी करेंगे और उनका मुंह स्याह हो जाएगा और नामा एमाल उनके बाएँ हाथ में होगा और हक़ तआला ने आयत भेजी कि छोड़ मुझे और उसको जिसे मैंने पैदा किया है। अकेला बेआत औलाद बेयार मददगार और एक एक क़ौल यह है कि उसे वहीद-उल-क़ौम कहते थे यानि अपनी क़ौम में एक और दिया मैंने उसे माल खेंचा हुआ यानि बहुत राह, सीधा रास्ता नाम एक पुल का जो दोज़ख़ पर होगा। बाल से ज्यादा बारीक और तलवार की धार से भी तेज। (कर्मकांड दोधारी तलवार के समान कष्टप्रद है)

**प० 555** हक़ तआला ने तुझे पांच ख़िलअत पहनाये हैं। ख़िलअत (1) मुहबत (2) मारिफ़त (3) तौहीद (4) ईमान (5) इस्लाम और जो कोई ख़ुदा को दोस्त रखता है। उस पर हर चीज़ आसान हो

जाती है और जो खुदा को पहचानता है। उसकी निगाह में सब चीजें झूठी मालूम हो जाती है। और जो कोई खुदा को वहदानियत और बगांगी के साथ जानता है। वह उसके साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करता और जो खुदा पर ईमान लाता है। वह हर चीज़ से ईमान हो जाता है। (मोमिनों की पहचान मुहब्बत, मारफत, तौहीद, ईमान, इस्लाम)

**प० 557** ऐ गिरोह कुरैश दोज़ख के फ़रिश्ते उन्नीस से ज्यादा नहीं

### सूर: क्रियाम

**प० 559** कसम खाता हूं क्रियामत के दिन की पूछता है हंसी के कब होगा क्रियामत का दिन पस जब पथरा जाएगी आँख,

**प० 560** फिर जब पढ़े हम उसे ज़बराईल की जुबानी तुम पर, तो पैरवी कर उसके पढ़ने की और उसमें गौर औ फ़िक्र कर (यानि पढ़कर अमल कर रहनी)

उस दिन कि रोज़ क्रियामत है ताज़े और चमकते होंगे यानि अंबिया औलिया मोमिनों के चेहरे अपने रब की तरफ़ देखने वाले होंगे ज़ाहिर में ने हिजान इब्ने उमर, ने कहा है कि हज़रत पैग़म्बर ने फ़रमाया कि कम से कम रुतबा का जन्नती अपने बाग़ों नेमतों, औरतों, खिदमतगारों पर नज़र करेगा और हजार बरस की राह से उसे देखेगा और बहुत बुर्जुग़ खुदा के नजदीक वह है जो वज़ह इलाही पर नज़र करे सुबह शाम फिर येआयत पढ़ी कि लिखा है कि औलाद में से हर एक के औलाद में से यह कलमात है कि और चेहरे उस दिन तारीक़ और तुरश होंगे यानि मुनाफ़िकी और हश्र की के चेहरे,

## सूरः दहर

**प० 563** और जज़ा देगा उनको दूसरी बहिश्त जो नजदीक होगी उन पर होंगे साए उस दरख्त के और मसख़र कर दिया होगा उसका मेवा मसख़र करके कि उस मेवा तोड़ना आसान होगा और मेवा तोड़ने वालों को कोई तोड़ने से मना नहीं करेगा और दौर में लाये जाएंगे उन पर छोटे-छोटे ज़ाम चाँदी के और बड़े-बड़े कि जोकि होंगे शीशों के मानिंद शीशे चाँदी के हर एक को ज़ाम उसके हौसले को मुवाफ़िक़ ज़ाम देंगे कि उसमें वह शराब हो जाएंगी और उस दौरा में आदती कमी न होगी

चार नहरें पानी, दूध, शराब, शहद शराब तहूर भी उन्हीं के वास्ते है और मुहक़क लोग उसे शराब शहवद कहते है।

**प० 566** कसम फ़रिश्तों भेजे हुआ की नेकी के साथ, फिर कसम उन फ़रिश्तों की जो तेज सख़्त और जल्द जाते हैं तेज जाना हुक्मे इलाही बज़ा लाते हैं या अहक़ाम कलाम अल्लाह की कसम जो और अहक़ाम की महव कर देने वाले है यानि अगली शरीयतों और दीनों को मनसूख़ कर देने वाले है या उन हवाओं की कसम जो सख़्ती के साथ किसी क़ौम पर अज़ाब लिये चलने वाली है और कसम उन फ़रिश्तों की जो ज़ाहिर करने वाले है शरियतों और किताबों का ज़ाहिर करना या क़ुरान की जो आयते ख़ास और अवाम के वास्ते हिदायत के आसार मुनतिशर करती है कसम आराम देने वाली हवाओं की, फिर उन फ़रिश्तों की कसम जो हक़ को बातिल से जुदा करने वाले है जुदा करके या क़ुरान की आएते कि ख़ैर को शर से जुदा करती है,

यह कसम खाकर फ़रमाया कि सिवा इसके वही कि जो कुछ वायदे दिये गये हो क्रियामत और उसके मुतलकात के आने को

ज़रूर होना है फिर सितारें मिटा दिये जाएंगे यानि उनका नूर ले लेंगे और जब आसमान फ़ाड़ा जाएगा और जब पहाड़ परागंदा किये जाएंगे अपनी जगहों को और जब रसूल जमा किये जाएंगे उस वक़्त और जगह जहां अपनी उम्मतों पर उनका गवाही देना मुक़र्रर होगा फिर कहेंगे किस रोज़ के वास्ते।

**प० 566** बेशक उतारा हमने कुरान तुझ पर उतारना बतदरीज़ सूरत के सूरत आयत के बाद आए हिक़मत के मुवाफ़िक़ पस सब कर अपने रब के हुक्म पर उन चीज़ में जो उसने तुझ को हुक़म पहुंचाने को फ़रमाया। (महाप्रलय का वर्णन)

### सूर: नबा

**प० 567** के हालात वह किस बात पर ईमान लाएंगे कुरान के बाद अगर कुरान पर ईमान नहीं लाते कि एक मोज़िज़ा है। क्या चीज़ पूछते हैं काफ़िर बड़ी ख़बर यानि कुरान की वह चीज़ की वह लोग उस चीज़ में इख़लाफ़ करने वाले हैं। यानि उसे शेअर या कहानी की बनिस्बत देते हैं और पैदा किया हुआ और इफ़तरा किया हुआ और कहानियाँ कहते हैं।

**प० 569** साहिर, शायर, मजनूँ, क्रियामत में शक़ करते थे कि होंगी या न होगी। हक़ा (कसम ख़ुदा की) करीब है कि जाने नज़ा, के वक़्त (कि जिस चीज़ में इख़लाफ़ करते हैं।

फ़िर हवा कि जल्दी जानेंगे क्रियामत के दिन अपने क़ौल के बातिल होना और अपने सपीदे का ख़बीस होना (पलीदनापाक)

तहक़ीक़ कि फैसले का दिन यानि क्रियामत का दिन है। ख़ुदा के हुक्म के हाथ ने एक वक़्त मुक़र्रर लोगों के हिसाब लेने औप उन के ज़ज़ा देने को जिस दिन फ़ूँका जाएगा सूर: में दूसरा नफ़ा



तो आओगे तुम गिरोह-गिरोह अपनी कब्रों से मैदाने हस्त में इमाम सालवी ने लिखा है कि रसूल ने अप्पाज से पूछा। फ़रमाया मेरी उम्मत से दस किस में परस्पर होगा (1) बंदरों की सिफ़त पर, (2) सूरों की हैवत, (3) टेढ़े मुंह, (4) अंधे (5) गूंगे (6) बदी लोग जो जुबान चबाते होंगे, वह उनके सीने पर पड़ी होगी और मुंहों से पीप बहती होगी और अहले महशर को उससे वदाहत होगी, (7) हाथ पांव कटे होंगे (8) आग की सूलियों पर लटके हुए, (9) किस्म लोगों में लड़े, बदबू आती होगी। मुर्दार से बेहतर, (10) किस्म के लोग आग के ज़ब्बे, पहनाए होंगे कतरान से एक काली दरा (जो ऊंटों की मलते हैं। उन की खालों में चिपके हुए बंदर सुखनचीन होंगे, सूर लेने वाले हराम खाने वाले अंधे, सूद और अंधे हुकम में जुलम करने वाले गूंगे बहरे वह जो अपने कामों पर उजू करते या और इतराते, (दस प्रकार के नर्क का वर्णन)

**प० 570** अजाब और सुख का नक्शा वह दिन कि खड़ा होगा रूह फ़रिश्ता और खड़े होंगे, फ़रिश्ते सफ़ बांधे हुए। रूह एक फ़रिश्ता है, रूहों पर मख़्लूक और मुतअयन-मुआलम में लिखा है कि क्रियामत के दिन कोई मख़्लूक उसे बड़ा न होगा। वह तन्हा एक सफ़ होगा और सब फ़रिश्ते बादाम कसरत अदद और अज़मत जसद के चंद सफ़े और वह बड़ाई में सबके बराबर होगा। ऐनल मुआनी में इब्ने मसऊद से रिवायत है, कि रूह फ़रिश्तों का मकान चौथा आसमान है और हर रोज़ बारह हजार बार तस्बीह कहती है और उसकी हर तस्बीह से एक फ़रिश्ता पैदा होता है और बाज़ों ने कहा है कि रूह एक गिरोह है, आदमियों की सूरत और आदमियों में से नहीं, क्रियामत को उनकी एक सफ़ खड़ी होगी

और एक सफ़ सब फ़रिश्तों की और यह भी कहते हैं कि रूह ज़बराईल है कि फ़रिश्तों के साथ सफ़ बांधेंगे बात न करेंगे। शिफायत के बाद में मगर वह कि इज़न दे उसको अल्लाह कि शिफायत करो या किसी की शिफायत न करेंगे मगर उसको कि खुदा जिसकी शिफायत के बाद में इज़न दे और कहा उसने दुनिया कलमा ए तौहीद यानि मोमिनो के सिवा किसी की तौहीद न करेंगे वह दिन होना है ज़रूर होगा। फिर जो शख्स चाहे तो अपने रब के सबाब की तरफ़ फिरना ईमान और ताहत के सबब से। (महाप्रलय में मुहम्मद साहेब शिफायत करेंगे मोमिनो की)

### सूर: तक्वीर

प० 571 मुतईन मुआलम में लिखा है क्रियामत के दिन कोई मख़लूक उससे बड़ा न होगा, वह तन्हा एक सफ़ होगा, और सब फ़रिश्ते बाद सफ़ कशरत अदद और अजमत जस्द के चंद सफ़े और वह बड़ाई में सबके बराबरहोगा, एनुल मुआनी में इब्ने मसरूद रजि० से रिवायत की है, की रूह फ़रिश्ते का मुकाम चौथा आसमान है। और हर रोज़ बारह हजार बार तस्बीह कहता है। और उसकी हर तस्बीह से एक फरिश्ता पैदा होता है और बाज़ों ने कहा कि रूह एक गिरोह है। आदमियों की सूरत और आदमियों में से नहीं क्रियामत को एक सफ़ उनकी खड़ी होगी, और एक सफ़ फ़रिश्तों की, और यह भी कहते हैं कि ज़बराईल अलै० है। (महाप्रलय के बाद रुहें परमधाम तथा बाकी को बहिश्तें मिलेगी)

प० 578 बेशक कुरान अलबत्ता पढ़ना भेजे हुए का है, जो बुर्जुग है, खुदा के नजदीक यानि ज़बराईल तिबयान में है कि रसूल सल्ल० मुराद है। पहले क़ौल के मुआफ़क ज़बराईल की सिफ़त है यानि वह

कुब्बत वाले हैं मौत वफ़ात उखाड़ने वाले और क्रौम समूद को अपनी आवाज़ से हलाक़ करने में नजदीक साहिब अर्श के जाहव मंजलात करने वाला हुक़म माना गया फ़रिशतों के दरम्यान यानि जो कुछ वह अमानतदार वही पहुँचाने में और अगर मुहम्मद सल्ल० मुराद हो तो वह ताअत में साहिबे कुब्बत के ख़ुदा के नजदीक, और नहीं है तुम्हारा साहिब यानि मुहम्मद सल्ल० दीवाना जैसा कि तुम गुमान करते हो और तहक़ीक़ कि यक़ीनी देखा रसूल ने ज़बराईल की असली सूरत पर। रोशन किनारा पर सूरज तलूः होने की जगह पर और नहीं है पैग़म्बर पोशीदा चीज़ पर जो कुछ उसे वही पहंचे बरवील (कंजूस) कि तुम को तालीम न दे, और तुम से छुपाए नहीं है क़ुरान की बात, कि शैतान राहें कि फिर कहां तुम जाते हो और जो कलाम जो सही और दुरुस्त है उससे क्यों मुँह मोड़ते हैं। नहीं है क़ुरान मगर नसीहत अहले आलम के वास्ते बदल है। आसमान से यानि क़ुरान नसीहत है उसके वास्ते जो चाहे तुमसे यह कि मुस्तकीम हो जाए राहे ख़ुदा में और हक़ की पैरवी करे, अस्बाब नज़ूल में लिखा है कि ज़बराईल यह आएत लाए अबू ज़हल ने सुनी तो बोला यह काम हमारे वास्ते है और हमारी ख़्वाहिश से इसाका रखता है अगर हम चाहे तो मुस्तकीम हो जाए न चाहे तो न हो तो यह आयत नाज़िल हुई और नहीं चाहते दो अस्तकाल और हिदाएत की,

## सूरः इन्फ़ितार

प० 579 चेहरे होंगे उस रोज़ ताबा और दरख़्शान नूरे ईमान से सदान और शादमान दोज़ख़ निजात पाने और जन्नत में पहुंचने की वज़्हा से और चेहरे होंगे उस रोज़ गुबार आलूद व तरोतार कुफ़्र और अनाद

के सबब से धेर लेगी। उन्हें तारीक़ी और स्याही इन्कार और गुनाह की वज़ह से वह लोग जिनके चेहरे गर्द और स्याह आलूद होंगे वह है कि काफ़िर झुठे जिनाकार, तबाहकार, बदकार। (मोमिनो के मुँह उजले काफ़िरो के मुह स्यात होंगे हस्त्र के दिन)

**प० 582** हक़ कि वह करामत और रहमत से और बहुत सही यह है कि दीदार इलाही से आड़ में किये गये होंगे यानि उस से मना जुदा हिज़ाब किये होंगे। इमाम मालिक से इस आयत के मायने पूछे फ़रमाया कि हक़ तआला अपने दुश्मनों की आड़ में रखेगा ताकि उसका दीदार न देखे और कहा जाएगा यानि दोज़ख़ के फ़रिश्ते उनसे कहेंगे यह अज़ाब वह अज़ाब है कि ये तुम उसकी तकज़ीव करते हक़ बात हक़ीक़ कि किताब नेकों के अमाल की में होगी। सातवें आसमान पर अर्श के नीचे और बाज़े कहते हैं। कि वह अर्श का दाहिना पाया है। बाज़ों ने कहा है कि वह सिद्र-तुल-मुंतहा है और किस चीज़ ने इलम दिया तुमको कि क्या चीज़ है यानि एक बुलुंद मकान या मकान है या नेकों की किताब है लिखी हुई, और निशानी की हुई ऐसी निशानी कि जो कोई देखे वह जान ले कि इसमें न किया है हाज़िर होते हैं उस किताब पर भलाई का मुर्करब जो अलीयतीन में रहते हैं यानि उस के इख़्ताक़लाब को जाते हैं और उसकी रवा करते हैं तहक़ीक़ कि पाक लोग बहिश्त में है। आराख़्ता देखेंगे पर देखते है ऐसी चीज़ को, कि उससे ख़ुश होते हैं, पहिचानगे ऐ देखने वाले उन के चेहरे ताजगी बहिश्त की नेमतों की और लज़ज़तो की तरावत पिलाये जाते हैं। शराब ख़ालिस सफ़ेद ख़ुशबु मुहर उसकी लाख की जगह मुश्क की है कि उस शराब की मुंह किये हुए उसके बर्तन मुहर रगबत करें या न करें उसके लेने की, (परमधाम की लज़ज़तो के सुखों का विवरण)

## सूर: इन्शिकाक

पं 584 पस तु मुलाकात करने वाला है अपने अमल की यानि अपने आमाल के जज्जा की दाहिने हाथ में हक़ काम और बुरे बाएँ हाथ में।

## सूर: बुर्ज

पं 585 कसम आसमान की कि बुर्जों वाला है इस से बारह बुर्ज मुराद है या कमर की मंजिले या आसमानो के दरवाज़े और कसम वायदे किये हुए की यानि रोज़ क्रियामत की और कसम गवाह की कि अल्लाह है सबको देखता है और जानता है और कसम उसकी जिस पर ग्वाही दी गई है कि वह बंदा है बाजों के नज़दीक शाहिद पैग़म्बर सल्ल० और मशहूर उम्मत है या गवाह आपकी उम्मत है और मशहूद अगली उम्मत है या शाहिद हिफ़्जा फ़रिश्ते और मशहूद अगली उम्मत है या शाहिद हिफ़्जा फ़रिश्ते और मशहूद बनी आदम, ये ईसा अलैहसलाम और उनकी उम्मत,

## सूर: नबा

पं 568 हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने कुरान के द्वारा क्रियामत के दिन से डराया तो काफ़िरों ने हज़रत की नबुवत और कुरान के उतरने और हस्र होने में इस्ख़लाफ़ किया। तो हक़ तआला ने फ़रमाया क्या चीज़ पूछते हैं काफ़िर ? बड़ी ख़बर यानि कुरान को ? वो चीज़ कि वो लोग उस चीज़ में इस्ख़लाफ़ करने वाले हैं। यानि उसे साहिर या शेर कहानक या कहानक से रिश्वत लेते हैं। बाज़ कहते हैं कि वो पैग़म्बर है या नहीं, और साहिर है, या शायर या मजनूँ। बाज़े कहते हैं, कि क्रियामत है और बुत हमारी सिफ़ायत करेंगे, और बाज़े उससे बिलकुल मुनकिर (इंकार) थे। और बाज़े शक़ रखते थे कि क्रियामत होगी या न होगी हक़ का करीब है कि जाने नज़ा के वक़्त कि किस चीज़ में इस्ख़लाफ़ करते थे।

हक्र है। हका ज़र्दी जाने के क्रियामत के दिन अपने क़ौल का मुवाफ़िक़ होना। और अपने अकीदे का सबीस होना।

जुबान चबाने वाले दो आलम जिनकी बात मुख़ालफ़त (विरूद्ध) होती है। हाथ पांव कटे हुए, पड़ोसियो को नाहक्र सताने वाले, सूली पर लटके हुए चुगलख़ोर और हाकिमों व बादशाहो की बात पर नाहक्र-दुरुस्त और वज़्ह कहने वाले। और वो जिनसे बहुत बदबू आती होगी वो शौबतपरस्त और ख़ुदा का हक्र रोकने वाले और आग के चौंगे पहने हुए तकव्वुर और नाज वाले होंगे। और फाड़ा जाएगा आसमान उस रोज़ तो हो जाएंगे। दरवाजों की सर कसर से दरवाज़े। और जन्नत के फ़रिश्ते मोमिनों की निगहबानी करते होंगे ताकि पुलसरात पर गुजरते वक़्त आग के ताँई ताबज़ से महफूज़ रहे और ये जहन्नुम होगी काफ़िरों के वास्ते। बाज़गस्त यानि आराम की जगह ठहरने वाले उस रोज़ बड़ी मुद्दतों तक मुज़ाहिद से मीआकलम में मनकूल है कि ये ऐकाब जो हक्र तआला ने ज़िक्र किए 43 हक्रबे है। हर हक्बा 70 खरीफ़, हर खरीफ़ 100 वर्ष का हर वर्ष 360 दिन का, हर दिन हज़ार वर्ष का होता है। (क्रियामत का नाज़िल होना अपने समय पर तय है)

**प० 571** तहक़ीक़ के परहेजगारों के वास्ते छुटकारा है अज़ाब से बाग़ है मेवादार। दरख़्तों और अंगूर के दरख़्तों के और उनके वास्ते लड़कियां हैं औरतें 16 वर्ष की और मर्द 33 वर्ष की उम्र के होंगे और अक्सर तफ़सीरों में है कि औरतें और मर्द 33-33 वर्ष के होंगे। (परमधाम में किशोर स्वरूप रूहों के वर्णन किये हैं)

वो दिन के खड़ा होगा रूह फ़रिश्ता, और खड़े होंगे फ़रिश्ते सफ़ (लाइन) बाँधो हुए। रूह एक फ़रिश्ता है। (रूहों पर मुर्क़रर)

मोआलिम में लिखा है कि क्रियामत के दिन कोई मकलख उससे बड़ा न होगा। वो तनहा एक सफ़ होगा। और सब फ़रिशते बाकसरत अदब और अदमत बस्द के चंद सफ़ और बड़ाई में सबके बराबर होगा। (हस्त्र के मैदान का वर्णन हुआ)

## सूर: नाज़िआत

प० 572 याद कर वो दिन कि हिलेगा हिलने वाला यानि उस दिन की हैबत से पहाड़ और ज़मीन सब थर्रायेगें जैसा कि हक़ तआला ने फ़रमाया है और ये हाल नफ़ज़ा अक्ली के वक़्त होगा। यानि जब पहली बार सूर: फूँका जाएगा तो सब थर्राएंगे और ज़िन्दे हौल के मारे मर जाएंगे। पीछे आएगा उसके पीछे आने वाला यानि नफ़का सानियत की उसके शबाब से मश्क़ जिंदा होगा। दिल उस रोज़ थर्राते और डरते होंगे। आंखे उन दिल वालों की नीची बंद होगी। जो बाज़ बाईस या के आज दुनिया में मुंनतर है। क्या हम फेरे हुए होंगे पहली हालत पर यानि हमको क्या मरने के बाद उसी हालत पर करेंगे जो हम रखते हैं। क्या जब हम हो जाएंगे हड्डियां पुरानी। खाक हो जाने के करीब तो क्या हमको फिर जिंदा करके उठाएंगे। हक़ तआला फ़रमाता है कि तुम दुश्वार पकड़ते हो अम्र क्रियामत को। पस सिवाय इसके नही कि वो एक चीख है। यानि अस्त्राफ़ील की एक फूँक। कि सब ख़लायक उसके सबब से जिंदा हो जाएंगी। फिर उस वक़्त रुए ज़मीन में होंगे और वो ज़मीन सफ़ेद होगी। और बाज़ों ने कहा है कि सहरा एक ज़मीन का नाम है। बैतुल मुक़द्दस के करीब। ज़बल अरीहा के गिर्द के मेहशर उस जगह हो। हक़ तआला जिस तरफ़ चाहेगा उसे कुशादा (विस्तृत) कर देगा। (क्रियामत में सिर्फ़ मुर्दा तन यानि भूले हुए तन ही जागृत होंगे।

## सूर: तकवीर

**प० 579** वो कुव्वत वाले है। मोतफ़कात उखाड़ने और कौन समूद को अपनी सख़्त आवाज़ से हलाक करने में। और अगर रसूल करीम के मुराद है तो वो तायत में शाहिद कुव्वत है ख़ुदा के नज़ीक। शबेकद्र नामांजिलित है। मता यानि मसजाक उल दावात है। अमीन यानि असराँरै ग़ैब के अमानतदार और नहीं है तुम्हारा मुहम्मद दीवाना जैसा कि तुम गुमान करते हो और तहक़ीक़ कि यकीनी देखा रसूल ने ज़बराईल को अपनी असली सूरत पर रोशन किनारा कर। और नहीं हैं पैग़म्बर पोशीदा चीज़ पर जो कुछ उसे वहीं पहुँचे वकील कि तुमको तालीम न दे और तुमसे छुपाए। और नहीं है कुरान बात शैतान रोंदे गए तो। (पैग़म्बर सल्ल० की हिदायत सभी समुदायों को है)

**प० 581** जब नापते है या तोलते है लोगों के वास्ते तो उनके हक़ मिटाते है और उनको नुक़सान पहुँचाते है फ़सूल सबीन में है कि जो कोई तौल-नाप में कमी करता है कल क्रियामत के दिन उसे दोजख़ के बेड़े में डालकर आग के दो पहाड़ों के बीच बैठाएंगे। और हुक़म देंगे कि इन दोनों को तोल और नाप। पस उनको तोलेगा और जलेगा। बंदा जब गुनाह करता है तो एक स्याह नुक़्ता उसके दिल में पड़ता है यहां तक कि नोबत पहुँचती है कि उसका तमाम दिल स्याह हो जाता है। (कम नाप-तौल का अंजाम बुरा)

## सूर: मुतफ़िफ़ीन

**प० 582** इमाम साफी ने फ़रमाया है कुफ़ार की शान में व रद हुआ इस बात पर दलालत करता है कि मोमिनों को दौलते दीदार बहुत सी होगी और दोस्त बेजुबान न होंगे। कि उस बक्त दोस्त और दुश्मन



के दरम्यान फर्क जाहिर होगा। (मोमिनो को हस्त के मैदान में फायदा)

### सूर: इन्शिकाक़

**प० 583** बैतुल हक्राईक में है कि रहीक उस शराब की तरफ़ इशारा है जो ख़ालिस है। कुनीन की ख़ुमारो की कुदरत से और उनके ज़रफ़ सिर-बा-मोहर औलिया और अंबिया के दिन है। और उन पर मोहर मुश्क़ मुहब्बत है और तसमी आला मरातब मुहब्बत है। यानि मुहब्बत जातियां। और मुकर्रर वो लोग है जिनको फ़नाउल्लाह और बकाउल्लाह का मर्तबा हासिल है और जब तक फ़र्श कर्ब पर मजलिस उन्स और रियाज़ क़द्र में साकी रज़ा के हाथ से कोई इस शराबे नाब का एक ज़र्रा न चखे इन बातों के भेद की बू उसके मशाम जान से नहीं पहुंचती। हम शराबे ऐश के ख़्वाह है जिसमें दर्देगम नहीं। शराब-ए-मुहब्बत पीने वाले और है और तलछट पीने वाले और है। (परमधाम के इश्क़ की लज़्ज़त ले ज़मीन पर)

### सूर: बुरुज़

**प० 587** ख़ुदा बंदे अर्श का या मालिक मुश्क़ का बुजुर्ग। अपनी जात और सिफ़ात में करने वाला वो जो कुछ चाहे कहे। क्या आई तेरे पास बात। यानि ऐ हमारे हबीब। हमने तुम्हारी तसल्ली के वास्ते कुफ़्र के लश्क़रों की बात भेजी, जिन्होंने अंबिया अलैहुसलाम पर कज़ा किया था। फ़िर्ओन और उसकी क़ौम और समूद और क़बीला समूद की हां, ये बाते नाज़िल हो गई। और मुनक़रों ने ना मानी। बल्कि वो लोग जो ना ईमान लाए वो बाराबर न रखने में है। कुरान शरीफ़ बुजुर्ग है लिखा हुआ, लौहे महफ़ूज़ है। तफ़ैयर और तारीक़ से वाजम में है कि लौह एक सफ़ेद मोती के दाने की है। उसका

तूल आसमान से ज़मीन तक और उसका अर्ज मशरिक़ से मगरिब तक। और उसके किनारे जाबूत के हैं और वो एक फ़रिश्ते की गोद में हैं। अर्श के दाहिने पर। और वो फ़रिश्ता उसका वाकिफ़ नहीं रसूल साहब अपने चचा के पास बैठे थे, कि एक तारा टूटा। उसका मतलब रसूल ने फ़रमाया कि ये सितारा है कि शैतानों को आसमान कैसे हँकाता है, और ये कुदरतें इलाही की निशानी हैं। उसी वक़्त ज़बराईल नाज़िल हुए कि और कसम आसमान की और तारों की जो रात को ज़ाहिर होने वाले हैं। और किस चीज़ में तुझको जानने वाला किया ताकि तू जाने कि क्या है तारे। सितारा है चमकने वाला, रोशन आग के शोलों की तरह। (रब का क्रहर हक से इंकार करने वालों पर होता है)

### सूर: अअला

**प० 588** ये कसम खाकर फ़रमाया कि नहीं है कोई भी। मगर उस पर एक निगेहबां है, कि उसके क़ौल और अमल निगाह रखता है, और शुमार करता है।

अलबत्ता क़ादिर है यानि मौत के बाद बास और रियादा पर क़ादिर है जिस दिन कि ज़ाहिर हो जाएगी छुपी बातें जो बाते दूँ मैं। छुपी है वो ज़ाहिर कर देगी। ताकि पाकीज़ा तबीस मतीज़ हो जाए। या उसके फ़र्ज काम पेश करेंगे। जैसे रोज़ा, नमाज़, गुस्ल, ज़नाबत, वजू के कोई उस पर इत्ला नहीं रखता। और आदमी इसके करने पर क़ादिर था पर्दा उठा देंगे। और जिस वक़्त छुपी बातें खोली जाएगी तो नहीं है इंसान को आपनी जात पर कि अपने से अज़ाब को रोक रखे। और न कोई यार किल उसकी मददगारी से बला रफ़ा-दफ़ा हो कसम आसमान में वाले की। या रज्जत वाले की। बेशक क़ुरान अलबत्ता कलाम है सही और हरुफ़ जुदा करने

वाला हक्र और बातिल के दरम्यान। और नहीं है वो बातिल और बेहूदा मसखरापन (मजाकिया) (रब अपना वायदा पूरा करता है, यदि हम कुर्बान हो)

**प० 589** फिर तू न भूले उसको उस यादास्त की क़बूल से जो हमने अता की तुझे, करीब है कि पढ़े हम क़ुरान तुझ पर यानि ज़बराईल अमीन उसको हमारे हुकम से तुझ पर पढ़े। फिर तू न भूले उसको उस यादास्त की कुवत से जो हमने तुझको अता फ़रमाई है। या ये कि आप हमारे हबीब उम्मी है, तू इन सब सूरीयों और मुतशाहबा आयतों को याद रखना। इस वास्ते है कि तेरी रिसालत पर ये दूसरी निशानी हो। इस आयत में हज़रत को इस बात की बसारत है कि जो कुछ हम तुझ पर पढ़ते हैं तू उसे न भूलेगा। इस वास्ते कि ज़बराईल अमीन हमारे हुक्म से तेरे दर्श में रहेंगे। चुँनाचे अबवार में आया है कि माहें मुबारिक रमजान में हर साल जब हज़रत ज़बराईल नाज़िल और रसूल सल्ल० के साथ शरीफ़ तिलावत करते आख़िरी साल जब हज़रत ने दुनिया से ग़ैबत फ़रमाई तो हज़रत ज़बराईल दो बार आए और आपके साथ क़ुरान शरीफ़ का दौरा किया। (उतरता है ज़बराईल फ़रिश्ता रमजान माह में)

**प० 591** उस बहिश्त में चश्मा ज़ारी होगा कि उसका पानी मनकता न होगा। उस जन्नत में तख़्त बुलंद उठाए हुए होंगे। उनकी असल सोने की ज़मरूद या याक़ूब मोती से जड़ाऊं। मुआलम में कहा है कि वो तख़्त हवा में बुलंद होंगे। जब साहिर चाहेगा कि उस पर बैठे तो वह तख़्त ज़मीन पर उतर आएंगे और जब उस पर बैठेगा, वह फिर बुलंदी पर चला जाएगा। उस जन्नत में आब ख़ोरे होंगे जन्नतियों के सामने रखे हुए तक़िए बराबर रखे हुए होंगे। (परमधाम का वर्णन किया है)

## सूरः फ़ज़्र

प० 592 क़सम फ़ज़्र की जो दोस्तों की मुनाजात का वक़्त और साईत है या नमाज़ फ़ज़्र की कसम जिसके सबब से बेदिलों की जान को आराम है। और एक क़ौल के मुआफ़िक़ फ़ज़्र से मुहर्रम का पहला रोज़ा मुराद है कि साल उससे शुरू होता है। या जो उस हज़ का पहला रोज़ा मुराद है कि लिया ले हम उसे मिली हुई है। या जुमा की फ़ज़्र है या रोज़े अरफ़ा की सुबह कि उसमें हादियों की दुआ कबूल होती है। या ईदे-ए-जुहा की फ़ज़्र की क़ुरबानी का रोज़ा है। या सुबह क्रियामत का अव्वल। और तिबयान में कहा है कि हज़ूर रसूल की मुबारिक़ उंगलियों से पानी ज़ारी होने की तरफ़ भी इशारा है बाज़ों ने कहा है कि चश्मा बग़ैरह से पानी ज़ारी होने का इशारा है। और सालेह की ऊंटनी या हज़रत मूसा की दुआ से पत्थर फ़टकर जो नहर ज़ारी हुई। और कसम दस रातों की यानि ज़िलहज़ के पहले इशारा की। कि अरफ़ा उसी में है या मुहर्रम के पहले असरा की। कि उसमें से आसूरा है। या रमजान के आख़िर असरा की। कि उसमें शबे कद्र है। या शावान के बीच वाले असरा की। जो उसमें शबे-बारात है। और क़सम जुप्त और ताक की से वो तजाद और मुख़ालफ़त मुराद है जो मख़सूकों के अवसाफ़ में होती है। जैसे इज़ज़त और ज़िल्लत कुदरत और आजिज़ी, इल्म और ज़हल और कुव्वत में ख़ौफ़ और हैयात में मौत या सफ़क़त है। कि और फ़र्द से ख़ालिक मुराद है। कुलहु अल्लाहु अहद और वास्ते क़ौल पर जुप्त और ताक अनाशर और इख़्लाह है। या बुर्ज़ और सैर करने वाले सितारे। या नमाज़-ए-फ़ज़्र और नमाज़-ए-मगरिब या जन्नत के दरवाज़े। और दोज़ख़ के दर के या बकरीद और अरफ़ा का दिन। या

मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा की दो मस्जिदे और एक मस्जिद अकसाफ़ या सफ़ा और अरवा दो पहाड़ और बैतुल हराम वा लैल ए-इजा ऐ एसीर और क्रसम रात के जिस वक़्त के गुजरे यानि शबे-कद्र की। ऐनुल मुआनी में है कि शबे मजलूफ़ा और बहुत सही यह बात है कि रात को आराम ले क्या है इस कसम में जो मैंने याद की। क्रसम पसंदीदा अक़ल वालों के वास्ते ताकि इबरत ले और जाने कि कसम है तहक़ीक़, और ताकीद की हुई और कसम का जवाब यह है कि हम तकज़ील करने वालों की अज़ाब करेंगे। क्या नहीं देखा और नहीं जाना तूने कि क्या किया तेरे रब ने। क़ौम आद के साथ। यानि आद-ए-अला के साथ। उसे आद बिन अरम कहते थे। और इरम उनके ज़द का नाम है। इस वास्ते कि आद औस का बेटा था, और वो इरम था और वो शाम बिन नूह अलैहिसलाम और बाज़ों ने कहा है कि अरम उनके शहर का नाम है और इस तक़दीर पर अहले अरम मुराद होगा। फिर आदियों की कैफ़ियत ध्यान फरमाता है बड़े-बड़े कदों वाले या खेमों वाले। ऐसा क़बीला कि नहीं पैदा किया गया उसके सिवा कद की दराज़ी और जिस्म की बड़ाई में शहरों में और बहुत मशहूर बात है कि अरम आदियों के शहर का नाम है। और जात-उल-हमाद उसकी सिफ़त है। यानि शहर अरम बड़े मकान वाला शहर है जिसके मिसल तमाम शहरों में नहीं। और उस मकान का किस्सा मुअमलन यह है कि अब्दुलाह बिन कहाबा खोए हुए ऊंट को शहरा-ए-अदन में ढूँढते फिरते थे, कि एक बियाबान में एक शहर के अंदर पहुँचे। तो देखा फाटक, डयोढ़ी में क़ीमती जवाहर जड़े हैं और किसी को वहाँ न पाया। मतहेयर हुए कि जब शहर के अंदर पहुँचे तो उनको और ज़्यादा हैरत हुई। इस

वास्ते कि ऊँचे-ऊँचे ममानात देखे कि उनमे याकूब और मजर्द के सतून है। दीवारों मे एक ईंट सोने की और एक चांदी की। तमाम दीवारें सोने-चांदी की है। खेमों में इसी अंदाज पर फर्श, संगरेजों की जगह पर। आबदार मोती पड़े हुए। हर महल के गिर्द नहरें जारी, मोती, मूंगे बहते दरख्त बहुत उनके तने सोने थे, पत्ते मर्जद के, कड़ियाँ चांदी की। अब्दुल्ला ने यह खुदा की कुदरत देखकर अपने जी में कहा कि यानि ये वो ही जन्मत है जिसका वायदा है मुत्तकियों से। पस थोड़ा जवाहर उठाकर पुस्त पर बांधा और यमन में फिर आए। लोगों ने वो जवाहरात उनके हाथ में देखे गुमान किया कि उन्हें गुप्त खजाना मिल गया। (परमधाम के बेमिसाल खजानों की लज्जतें लेंगे मोमिन)

**प० 594** पस मगर आदमी मुब्तला करता है, उसे उसका रब यानि तबांगरी और खुशहाली के सबब से आजमाता है और फिर इज्जत देता है। उसको जाद ओ इक़तदार के सबब से। तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे मुजरक़ किया और मुझ पर ये इनायतें और करामाते फ़रमाईं। और मगर जब आजमाता है, मुफ़्लिसी और सख़्ती के साथ फिर तंग कर देता है उसकी रोज़ी तो कहता है कि मेरे रब ने मुझको ज़लील व ख़ाक कर दिया। क़ाफ़िर अपनी इज्जत और ज़र्बुदी तवांदरी के सबब जानता है और अपनी जिल्लत और सवारी मुफ़लिसी की वजह से।

जब तोड़ी जाएगी ज़मीन वो तोड़-तोड़ कर यानि रेज़ा-रेज़ा उठ जाएगी और आएगी तेरे परवरदिगार की कुदरत और हैबत की निशानियां। यानि ज़ाहिर होगी और आएंगे फ़रिश्ते मैदान-ए-हस्त में। एक के पीछे एक इमाम अब्दुल, लेस की तस्वीर में मज़कूर है कि हर आसमान के फ़रिश्तों की सफ़्र अलहदा (अलग) होगी।

और लाई जाएगी उस दिन जहन्नम। हदीस में है कि 70000 लगामें जहन्नम पर चढ़ी होगी। और 70-70 हजार फ़रिश्ते हर लगाम को पकड़े हुए खींचते होंगे। और दोज़ख काफ़िरों पर गुस्सा में जोश-ख़रोश करती होगी। यहां तक कि मैदान-ए-हस्त में लाएंगे और अर्स के बाएँ पर रखेंगे। उस महल पर कोई मुल्क मुकर्रब और बनी मरसल ना बाक़ी रहेगा कि उसके हौल के मारे जानुओ के बल न गिर पड़े। और उस वक़्त सब कहेंगे “या रब नफ़सी-नफ़सी।” और हमारे रसूल फ़रमाएँगे उम्मती-उम्मती। और है, जहन्नुम कहेगी माली वा मालिक या मुहम्मद। यानि आपको मुझसे और मुझको आपसे क्या काम है उस रोज़ याद करेगा इंसान अपने गुनाह या नसीहत पकड़ेगा और कहां होगा उसके वास्ते फ़ायदा याद करने का या नसीहत पकड़ने का। इस वास्ते कि याद करने का महल दुनिया है अक्रबा नहीं और जब बंदा देखेगा कि अब नसीहत मानना कुछ फ़ायदा नहीं देता तो हसरत के मुंह से कहेगा कि काश कि आगे भेजता मैं अपने नेक काम अपने जिंदगी के वास्ते। इस आलम में, (महाप्रलय का विवरण)

### सूर: ब-लद

प० 595 पस उस दिन अज़ाब न करेगा किसी को ख़ुदा के हिज़ाब के मिशन। और न क़ैद करेगा जंजीरों और तोपों में किसी को मिसल ख़ुदा के क़ैद करने के। हक़ तआला मौत के करीब मोमिन से कहता है ऐ जान-ए-आराम पकड़ने वाले मेरे ज़िक्र के साथ तू नेमत में शक करती है। और मेहनत में साजर की। फिर दुनिया से अपने रब के वायदागाह के जानिब उस हाल में के पसंद करने वाली है तो वो जो तुझको दिया है, पसंद की गई है, तू ख़ुदा के नजदीक। और जब क्रियामत का दिन होगा तो हक़

तआला फ़रमाएगा पस दाख़िल हो मेरे नेक बंदों में। और दाख़िल हो मेरी जन्नत में। इससे जन्नतें मुराद है। यानि जन्नतों में मेरे मुकरब्बि और ख़ास लोगों के साथ दाख़िल हो।

कसम खाता हूं उस शहर की। हाल यह है कि तू ऐ हमारे हबीब उतरा है। इस शहर में बावजूद उसके कि मक्का मुअज्जमा अमन की जगह, ख़ल्क के सबाब, हासिल करने का मुक़ाम, हज़ का महल, बैतुल हराम का मुक़ाम है। उसकी कसम कि उसने हज़रत मुहम्मद के नज़ूल के साथ मुकीब किया ताकि मालूम हो जाए कि मक़ाम का सर्फ़ कमी से है। और बाज़ो ने ने कहा है कि तू हलाल है उस शहर मक्का में यानि जो तू चाहे कताल या और जो कुछ औरों पर हराम है। एक वक़्त तुम पर हलाल हो जाएगा। और मक्का मुअिज्जमा फ़तह होने और उसमें बाज़ के क़त्ल होने का वायदा है। और ये कि फ़िर के पहले हुक़म का ना रद होना और क़सम बाप की यानि हज़रत आदम या इब्राहिम और उस की क़सम जो पैदा हो यानि जरियते आदम या हज़रत मुहम्मद। बाज़ो ने कहा है कि वालिद मुहम्मद और मां वहद आपकी उम्मत। और हक़ तआला अपने हबीब और उसकी उम्मत की कसम खाकर फ़रमाता है कि तहक़ीक़ हमने पैदा किया इंसान को स़ख़्ती और रंज़ में। वो जो पैदा होने और दूध गिराने और मुआस और जिंदगी और मौत में उसको रंज़ पहुंचाता है। या अबुल अदीम की कमाल कुव्वत में हमने पैदा किया। उसकी कुव्वत ऐसी थी कि एक चरसा पाँव के नीचे रखता और दस पहलवान उसे खींचते। वो टुकड़े-टुकड़े हो जाते और उसके पांव के नीचे से न निकलता और वो दावा करता कि किसी को मुझ पर क़ाबू नहीं है। (परना धाम का महत्त्व वर्णन किया है)



## सूर: शम्स

प० 596 और नसीहत की उन्होंने बाहम मसाहत और मेहरबानी करने की, खुदा के बंदों पर। वो ईमान वाले, साबिर मेहरबान, दाहिनी तरफ वाले की अर्श की दाहिनी तरफ से बहिश्त में जाएंगे। या बरक़त वाले लोग है। और जो लोग ना ईमान लाए हमारी निशानियों पर किताब और दलीलों पर जो लोग ईमान ना लाए वो बाई तरफ वाले है कि जो उनको बाई तरफ से अर्श की दोज़ख में से जाएंगे। और उन पर है दोज़ख में आग छुपी हुई। (मोमिन और काफ़िर की पहचान दी गई है)

## सूर: लैल

प० 597 ये कसमें खाकर फ़रमाता है कि तहक़ीक़ के कामयाब हुआ जिसने नफ़स को पाक किया। बुराईयों के महलों से या उसको नशो-नुबा दी। बुर्जुगियों के अनवा और इंसान के साथ। और तहक़ीक़ के बेबरा रहा जिसने गुम किया अपने नफ़स को। पस और ज़हालत के सबब से या उसकी क्रद्र व मंज़िलत गुम की मसहत और ज़लालत के सबब से। इब्ने अब्बास रिवायत करते है कि रसूल इस आयत की तिलावत के करीब ही दुआ फ़रमाते थे, मुआफ़िक़ लोग इस बात पर है कि नफ़स को पाक करना दिल साफ़ होने का सवाब है। जिस वक़्त नफ़स ख़्वाहिश के ऐबों से पाक हो जाता है। फ़िलहाल दिल भी ताल्लत मासवां के लौ से साफ़ हो जाता है। (इंद्रियों पर नियंत्रण करना आवश्यक है)

## सूर: जुहा

प० 599 लिखा है कि जब ज़बराईल कई रोज़ मुहम्मद के पास नहीं आए तो काफ़िरो ने ताना करना शुरु किया कि मुहम्मद के खुदा ने उसे

छोड़ दिया। तो ये सूरत भेजी। कसम है चाश्त के वक़्त की कि आप़ताब उस वक़्त बुलंद होता है और बाज़ कहते हैं कि वो ख़ुदा वो वक़्त था जिस वक़्त हज़रत मूसा से ख़ुदा ने कलाम किया। और कसम रात की जिस वक़्त वो तारीक़ (अंधेरा) हो और तारीकी चीज़ों को छुपा ले। इमाम केसरी ने फ़रमाया कि शबें मेराज की कसम है। साहिब क़सम उल असरार ने फ़रमाया कि दिन रात से क़सफ़ और हज़ाफ़ मुराद है। एक लुत्फ़ और कहद की निशानी या अनवारे ज़माल और आसारे जलाल की अलामत दीन। या दीन मुहम्मद के चेहरे नूर की तरफ़ इशारा है और रात आपके रुअें मुबारिक़ की स्याही से बनाया है। ये ख़बरे जो मज़कूर हुई हक़ तआला इनकी कसमें खाकर फरमाता है, ना छोड़ दिया तुझको तेरे रब ने, और न दुश्मन कर लिया। इन्हें अब्बास ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने रसूल को खुशख़बरी दी उस वक़्त की जो आपकी उम्मत की दुनियां में होगी और अक्सर शहर उनकी हुकुमत में आएंगे। और मुत्बर हो जाएंगे। उस खुशख़बरी से खुश हुए तो ये आयत नाज़िल हुई और अलबत्ता आख़िरत यानि जो बुर्जुगी आख़िरत में हक़ तआला तुझको अता फ़रमाएगा, ऐ हमारे हबीब और वो ऊँचे और हज़ार महल हैं जन्नत में। मोती के और उसका ख़ाक़ मुश्क है और हर महल में ख़ादिम और हूरें (अप्सरायें) और सामन हैं जो उसके लायक़ हैं। बेहतर हैं तेरे वास्ते पहली बुर्जुगी से कि शहरों का फ़तह होना या आपके काम की निहायत बेहतर है दफ़्तदाह से। इस वास्ते कि आप दम-ब-दम बुलंदी के दर्जे पर बुलंद होने वाले और रूतबा कमाल पर तरक्की करने वाले हैं। और क़रीब है कि अता फ़रमाए तुझको तेरा रब यानि गुनाहगारों के बाब में आयत का मर्तबा।

और पाया तुझको तेरे खुदा ने राह भूला हुआ। मक्का के दरवाजे पर जिस वक्त हलीमा जो तेरी दाई थी, तेरे दादा और तेरी मां को तुझको सुपुर्द करने लाई। फिर राह दिखा दी तुझको इस तरह पर के तुझको, तेरे दादा को तेरे पास पहुंचा दिया या शाम की राह में जबकि मुजस्सरा के साथ ऐ हमारे हबीब तू तिज्जारत को गया। और तेरा ऊंट राह से बेराह हो गया। मैंने ज़बराईल को भेजा तो तेरे ऊंट की नकेल पकड़कर राह पर लेकर आया। या ऐ हमारे हबीब तूने इलम और एहक़ाम की राह न पाई थी तेरे रब्ब ने तुझ को राह बता दी। हक़ाईक़ सलीम में मज़कूर है कि तेरे रब ने तुझको दोस्त पाया। मारिफ़त और मुहब्बत के दरिया में डूबा हुआ तेरे ऊपर एहसान रखा और तुझको मकाने क़र्ब में पहुंचा दिया। और पाया तुझको दरवेश। वहरहाल पस मालदार का कर दिया तुझको खदीज़ा के माल की वजह से कि तूने तिज्जारत की या ग़नीमतों के सबब से जो तूने काफ़िरों से ली। हक़ायतुल्लाह क़ुरान में आया है कि ऐ हमारे हबीब तू फ़कीर था, खल्क के मुआयरे की वजह से तुझको यानि कर दिया अपने अनवारे ज़माल के मकासवा से।

और जो नेमत है तेरे रब की। कि वो नबूवत है। पस बयान कर यानि उसके एहक़ाम तक को पहुंचा। इस वास्ते कि नेमत का बयान करना। नेमत देने वालों का शुक्र। राइद पक़वाद ने फ़रमाया है, नेमत एक चीज़ मेहबूब मिल जाता है। और नेमत देने वाला अकसर खुश किया गया होता है। तो हक़ तआला ने अपने हबीब को फ़रमाया कि मेरी नेमत बयान कर। इस वास्ते कि खल्क मोहताज़ है और मोहताज़ जब नेमत देने वाले का ज़िक़्र सुनता है, तो उसकी तरफ़ रखवत करता है और उम्र दोस्त रखता है।

पस मेरी नेमत ब्यान करके खल्क को मेरा दोस्त कर दे और मैं खल्क को दोस्त कहता हूँ। (रब जिसको चाहता है, देता है, नेकी की नेमतें खजाने और दोस्ती हक़ की)

### सूर: अलम नस्र

**प० 601** क्या हमने कुशादा नहीं कर दिया तेरे वास्ते तेरा सीना कि हक़ बात की गुनाह जात और खल्क की दावत और उम्मत का नाम उसमें समाए। ऐसा मालूम होता है कि आपका सीना शख्स सद्र कई बार हुआ है। एक ज़माना अतफूलियत में जब आप कबीला बनी साद में हज़रत हलीमा के घर तशरीफ़ रखते थे। पहली मर्तबा जब हज़रत हलीमा आपको दूध पिलाती थी। या दूसरी बार जब दूध छुड़ाने के बाद आपको ले गई थी और एक क़ौम में है कि नबूवत होने के छठें या ग्यारहवें वर्ष दूसरी बार यह सूरत वाक्य हुई। हदीस में है कि मेराज की रात ज़बराईल ने मुझको तकिया लगा दिया और मेरे सीना के ऊपर से नाफ़ तक चाक कर दिया। और नताही एक तशत में आबे ज़मज़म लाए। मेरे सीने के अंदर और मेरी रंगें और मेरा सीना उस पानी से धोया और ज़बराईल ने मेरा दिल निकालकर चाक किया आख़िर को एक सोना का तशत हिक़मत और ईमान से भरा हुआ लाए और मेरे दिल को उससे भरा। और फिर अपनी जगह पर उसे रख दिया। मनकूल है कि आपने फ़रमाया कि मेरे दिल पर नूह की एक अंगूठी से मोहर कर दिया। चुँनाचे उनकी राहत और लज्ज़त का असर अब तक अपनी रंगों में और जोड़ों में मैं करता हूँ और नीचे रख दिया तो इसे तेरे पर गिरा। वो बोझ जिसने भारी कर दी थी तेरी पीठ कि वो काफ़िरों का बहम था। और कुफ़्र पर उनका इसरार, बाज़ो ने कहा है कि गुनाह का ग़म है कि ऐ हमारे

हबीब तू उससे गिराबार था वो तुझ पर से हमने उठा लिया और तेरी सिफ़ायत कबूल फ़रमाई और बुलंद किया हमने तेरी क़द्र जाहिर करने को तेरा जिक्र नबूवत और रिसालत और ख़तम होने के साथ या इस तौर पर कि अज़ां हिक्कामत तसहद ख़ुतबा में तेरा नाम अपने नाम से हमने मिला रखा। ताकि बंदे जब मुझको याद करे तो तुझको भी याद करें। या खुद मैंने तुझ पर सलाम भेजा। और औरों को भी तुझ पर दरूद भेजने का हुक्म दिया। जिल्ला नून मिस्त्री ने फ़रमाया रफ़ते जिक्र इस तरफ़ इशारा है कि सब अंबिया अर्श के गिर्द फिरते थे। और आपकी हिम्मत अर्श के ऊपर थी। पस तहक़ीक़ कि दुनिया में दुश्वारी के साथ आख़िरत में आसानी है। यकीनी इस दुश्वारी के साथ जो मक्का में तुझ पर है। मदीना तेरे वास्ते आसानी है।

कसम अंजीर की और जैतून की अनवार में है कि इन दोनों नेमों की तक़सीर इस ज़हद से है कि अंजीर पाक मेवा, बेफूदला, लतीफ़, ख़िजाब हज्म होने वाली जल्द दवा तबियत को नर्म करने वाली, बल्लाम को दूर, गुर्दों को पाक, रंग-रिशाना। को दूर करती है, ज़िगर और तिल्ली के सुरों को खोल देती है और जैतून मेवा भी और रोटी के साथ खाने की चीज़ भी और दवा भी इसमें रगून होता है। बहुत फ़ायदे वाला। बाज़ो ने कहा है कि अंजीर और जैतून मेवा भी उनके उगने की जगह मुराद है और ज़मीन मुक़द्दस में वो दो पहाड़ है। एक तूर-जैता और दूसरा तूर-ख़ैनाक कि हर एक उनमें से अंबिया में से एक-एक की इबादतगाह थी या दो मस्जिदे मुराद है। एक दमिस्क की, एक बैतुल मुक़द्दस की। और कसम सुरः सिनाई की यानि उस ज़मीन की जो हज़रत मुहम्मद का क़सम शज़रा जैतूना मुबारता

सीरिया की कि मसबा दिल को रोशनी बख़्शने वाला है और तूर सैनीन रुह मुअल्ला है कि तज्जली इलाही से रोशन और मुजल्ला है। और बलाद ज़मीन सफ़ी है।

तहक़ीक़ किया हमने आदमी को अच्छी तस्वीर तरक़ीब में यानि हैवानात में से कद मुनासिब, सूरत अच्छी, मिजाज़ मोहितदिल, ख़ास मख़लूकात को जमा करने लेने के साथ हमने उसको पैदा किया। (मेराज का वर्णन किया है विस्तार पूर्वक जिससे मोमिन चितवन करे तथा परमधाम का सुख ले यहां)

### सूर: बरियन:

**प० 606** जम्हूर उलमां इस बात पर है कि क़ुरान से पहले जो ख़बर नाज़िल हुआ वो इस सूरत के इस्तदाह की पांच आयते हैं। और इस हाल का बयान मज़मून यह है कि हज़रत ज़बराईल अमीन आप पर ज़ाहिर हुए। और कहा कि ऐ मुहम्मद ख़ुदा ने मुझको तेरे पास भेजा है और तू ख़ुदा का रसूल है। इस उम्मत में और फिर कहा कि इक्रर:। आपने फ़रमाया कि मा अना इक्ररी। पस हज़रत ज़बराईल ने आप से लिपट कर जोर से मुआनका किया। कि आप बेताक़त हो गए, फिर आपको छोड़ दिया और कहा कि पढ़। आपने वही जवाब दिया। फिर हज़रत ज़बराईल आपसे मिले और जोर किया और छोड़ दिया। और कहा कि “इक्रर: बा इस्मी रब्बिक अल्लजी ख़ल्क।” और एक क़ौल यह है कि ज़बराईल ने अपने पर के नीचे से एक नामा हरेरू बहिश्त पर लिखा हुआ कि उसमें याक़ूत और मोती लगे हुए थे, निकाला और हज़रत मुहम्मद के सामने रख दिया और कहा कि पढ़िए आपने फ़रमाया कि मैं पढ़ा नहीं हूँ। इस नाम में कुछ लिखा नहीं दिखता। इस

तरह ज़बराईल ने जोर देकर बेहोश कर दिया और छोड़ दिया। और ये कुरान की आयतें पढ़ीं। पढ़ कुरान शुरू कर अपने रब्ब के नाम के साथ जिसने पैदा की सब चीज़ें या आदम को खाक से पैदा किया। पैदा किया आदमी को ज़मे हुए खून से पर तकरार मुबालगा के वास्ते हैं और तेरा रब्ब बहुत बुर्जुग है। वो खुदा जिसने सिखाया कलम को ताकि इलम के खातमे मुकीद करे। और दूसरों को नामा से आगाही दे। तिबयान में है कि हक़ तआला ने हज़रत आदम को लिखना सिखाया और बहुत मशहूर बात है कि इद्रीस को पहले लिखना सिखाया। खुदा ने इलम दिया आदमी को जो वो नहीं जानता था। या मुहम्मद को अहक़ामे शरियत दिए जो आप नहीं जानते थे। (मेराज का वर्णन, रब की महिमा से वर्णन किया है)

**प० 604** अबू ज़हल ने ये बात कही कि अगर मैं मुहम्मद को सिज़दा में देखू तो उसकी गर्दन पर लात मारुं। जब वो करने दौड़ा तो अपने और मुहम्मद के दरम्यान आग की एक खंदक देखी और एक अज़हा मुंह फैलाए हुऐ और परिंदे पर जानवर से ये मिलाए हुऐ। (ध्यान में तल्लीन होना आवश्यक है)

### सूर: क़द्र

**प० 605** बेशक हमने भेजा कुरान बेफ़िक़्र किए हुऐ। कुरान की तरफ़ किनारा फ़रमाया। शबें क़द्र में यानि उसके उतरने की इंतज़ार उस शब में थी। या तमाम कुरान लौहे महफूज़ से आसमान दुनिया पर इस शब में उतरा और हज़रत ज़बराईल तेईस वर्ष में आयत-आयत और सूरत-सूरत वक़्त की मसलियत के मुवाफ़िक़ दुनिया में लाए। और कि चीज़ ने इल्म दिया तुझको कि तू जाने कि क्या है शबें क़द्र

यानि शःफ और इल्लत वाली रात। और उसमें जो कोई इबादत करता है वो मोअज्जिज और मुशरफ हो जाता है। वो खुदा के नजदीक क्रद्र वाला है। और बाजो ने कहा है कि शबे-क्रद्र हुकम के मायने में है। यानि उस रात में हर एक काम की तफसीस करते हैं हिकमत के साथ कि उसमें नुक्सरां नहीं पाता। या क्रद्र तंगी के मायने में है। इस वास्ते कि उस रात फरिश्ते इस क्रद्र क्रसरत से उतरते हैं कि उन पर जमीन तंग हो जाती है। शबे क्रद्र बेहतर है हजार महीने से कि बनी अस्त्राईल के गाजी ने हजार महीने विहार किया। उस शख्स के वास्ते बेहतर है जो उस शब को पाए। और इबादत में फज्र कर दे। हजरत इमाम के कौल पर शबें क्रद्र तमाम साल में दौरा करती रहती हैं और हजरत शेख कुदस सरा ने फतवात में फरमाया है कि मैंने इस रात को शाबान और रबी-उल-अव्वल में देखा है और अक्सर रमजान में पाया है और अक्सर उल्मा इस बात पर हैं कि शबे क्रद्र माह रमजान में है। आखिर अस्त्रा में, गालबन ताक सकी में। असहाब इमाम साफी 21वीं और 23वीं शब की अख्तियार करते हैं और 27वीं शब (रात) का। हासिल यह कि लैल-तुल-क्रद्र में नौ हरुफ हैं और ये कलमा इस सूरत में तीन बार मुकरर है। तो नौ तिया सत्ताईस और लफज है जो इस सूरत के आखिर में है। यानि ये तो बात आखिर कौल की ताईद करती है, कि शबे-क्रद्र सत्ताईसवीं शब है और शबे-क्रद्र पौशीदा रखने में हिकमत यह है कि सब शबों की ताज्जीम की जाए और उनमें बंदे इबादत करते रहें। उतरते हैं फरिश्ते जमीन पर या आसमान दुनिया पर और ज़बराईल उनके साथ इस मुबारिक शब होते हैं। और हदीस में है कि फरिश्तों के साथ एक बड़ा फरिश्ता उतरता है कि रुह उसका नाम है। या फरिश्तों की



एक किस्म कि उसे रूह कहते हैं। या बनी आदम की रूह या ईसा रूहअल्लाह। फ़रिश्तों के साथ उतरते हैं।

हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद पारसा की तफ़सीर में है कि हमारे मुहम्मद सल्ल० की रूह उतरती है। (शबें क़द्र की रात यानि रुहें उतरी दुनिया में ग्यारवी सदी में तथा तीन तनों की एक सौ बीस बरस की लीला का रहस्य वर्णन किया है)

**प० 606** बसायर में फ़रमाया है कि ज़बराईल उन फ़रिश्तों के साथ ज़मीन पर आते हैं जिनकी अहले ज़मीन से इलाका और आशनाई है। और मोमिनों के घरों में जाते हैं। और ज़बराईल मोमिनों से मुसाफ़ा करते हैं। और उनके मुसाफ़ा की अलामत यह है कि झिझक उठना, बदन पर रूअें खड़े हो जाना, क़लब की रक्त, आंखों से आंसू और उस रात के सफ़ के वास्ते है कि मलायका रूह समेत ज़मीन पर आते हैं। ख़ुदा के हुकम से एक बड़े काम को जिसका ख़ुदा ने हुकम फ़रमाया है या हर काम ख़ैरो बरक़त वाले के लिए सलामती। सब आफ़तों से शबें क़द्र की सुफ़ेदा सुबह नमूद होने तक औलिमों और आरिफ़ो को इस सूरत से असरार खुले है कि उनका एक शमां जवाहर-उल-तफ़सीर में हैं।

**प० 606** तहक़ीक़ के वो लोग जो ईमान लाए और काम किए अच्छे और पाक वो लोग तो बेहतर है सब मख़्लूक़ात से। या जो उनकी बेहतरीन ख़लक़ है, उसके रब के पास। बाग़ है क्रियाम करने के जारी है उनके दरख़्तों के नीचे नहरें। रहने वाले है जन्नतों में हमेशा। राज़ी होगा उनसे और उनकी इबादतों से और राज़ी होंगे वो ख़ुदा से। सबाब बेहिसाब पाने के सबब से और यानि दौलत-ए-दीदार। कि मतलब आल्हा और मक़सद आफ़सा है वो उनको अता फ़रमाएंगे। जब हिलाई जाऐ ज़मीन, हिलाया जाना अपना कि

नफ़सा अमला या सानिया (पल) के करीब मुक़र्रर है तो उसके सबब से ज़मीन टूट जायेगी और निकाले जायेगी ज़मीन अपने भारी बोझ के मुर्दों के जिस्म और दफ़ीने और ख़जाने है यानि अपने अंदर से निकालकर डाल देगी। और कहेगा इंसान यानि काफ़िर क्या है ज़मीन को कि उसमें जो कुछ पोशीदा था उसे बाहर किए देती है। और बाज़ों ने कहा है कि इंसाने आम है। यानि सब आदमी यही बात कहेंगे। सही बात यह है कि हक़ तआला ज़मीन की गोलाई अता फरमाएगा। और वो ख़बरें ब्यान करेगी वो अपना हिलना। (मोमिन परमधाम में जाएंगे तथा लज़्ज़त लेंगे फिर से)

### सूर: अस्त्र

**प० 610** करीब है कि जानोगे तफ़ाख़र (गर्व) और तक्राशर का अंजाम। फिर हक़ा के जल्दी जानोगे और क़ब्रों से उठकर। मुंसेर होते वक्त। ऐसा न चाहिए कि जिंदा और मुर्दा पर फ़स और मुहब्बत करो। (गर्व नहीं करना चाहिये)

कसम जमाने के ख़ुदा की या जमाना की कि बहुत अजीब बातों को शामिल है या नमाज़ अस्त्र की या हर पैग़म्बर के हम्न की कसम। या तुम्हारे हम्न की क़सम। ऐ मुहम्मद जो सब अस्त्रों या ज़मानों से अफ़जल है।

### सूर: फ़ील

**प० 612** क्या नहीं जाना तूने कि कैसा किया तेरे रब्ब ने हाथी वालों के साथ। यानि अबराह और उसके लश्कर के साथ। क्या नहीं किया और नहीं डाल दिया उनके मकर को जो कायबा सहीर ख़राब करने के वास्ते उन्होंने किया। तबाही और बतलान में। और भेजा उन पर दरिया हिंद के किनारे की तरफ़ से, चिड़िया अबावीर,

उनकी चोंचे चिड़ियों की और पंजे कुत्ते के थे, और सिर दरिंदों के मिस्र और बाज़ ने कहा है कि चिड़िया सब्ज़ थी और उनके चोंच ज़र्द। डालती थी उस लश्कर पर पत्थर कंकरी। तो कर दिया खुदा ने उन लश्करियों को उन कंकरियों के सबब से मिस्र घास खाई हुई के। यानि वो मुर्दा अफ़मुर्दा, नेस्तोनाबूद पड़े थे। लिखा है कि हर चिड़िया तीन कंकरिया लिए हुए थी। एक चोंच में, दो दोनों पंजों में। काफ़िर के जिस उजु पर कंकरी पड़ती दूसरी तरफ़ पार हो जाती। और हर कंकरी पर उन संगदिलो से एक-एक का नाम लिखा था। जिन्होंने क़ाबा: शरीफ़ को ख़राब करने का इरादा किया था। अबराह सिख़वत जाकर तनहा भागा और नज़ासी के सामने जाकर गिर पड़ा। जिस चिड़िया की चोंच में अबराह के नाम का पत्थर था उसे मारने को मक्क्रा से हब्शा तक उसके साथ थी। (खुदा का क्रहर काफ़िरो को ख़ाक कर देता है)

## सूर: कुरैश

प० 613 इमाम ज़ाहिदी ने लिखा है कि कुरैश तिजारत के वास्ते दो सफ़र करते थे। जाड़े में यमन की तरफ़, और गर्मी में शाम की तरफ़। लोग उनको अहले-हरम कहते थे और उनकी हु़रमत करते थे। और सही रिवायत है कि नज़र बिन क्रनाना का लक़ब कुरैश है। अरब में जिसका नस्ल नज़र से मिलता है वो कुरैश है। और अरबों के बाज़े आलिम इस बात पर कि फ़हर बिन मालिक का लक़ब कुरैश है। कि नज़र के पोते होते हैं। तो हक़ तआला ने उन पर नेमत साबित करने को ये सूरत नाज़िल की और कहा कि ताज्जुब करो वास्ते मिलने कुरैश के एक दूसरे से उनका मिलना। सफ़र में जाड़े या गर्मी के और उनके पूजे कि वास्ते कि वो बुत

(मुर्ति) पूजते हैं। यानि ताज्जुब का माहौल है कि मैंने तो इनको नेमत और हुस्मत दी और वो मेरी इबादत छोड़कर बुतों की परस्तिश (पूजा) में मशगूल (लिप्त) है। पस चाहिए कि इबादत करें इसी घर के रब वो रब जिसने खाना दिया उनको इन दो सफ़रो की बदौलत-भूख से बचा बेखौफ़ कर दिया की तो ये भर ताजीम किया गया है और कुरैश की तज़ीम भी इसी घर की बदौलत है। उनके खौफ़ से जो मक्का मुअज़्ज़मा के गिर्द है और एक दूसरे को लूटते-मारते हैं। (मुर्तिपूजा निषेद)

## सूर: कौसर

प० 614 एक शख्स ने मुहम्मद साहब के विषय में एक शब्द अबतर कहा। यानि उसकी नसल न बाक़ी रहेगी। उन्हीं दिनों उनके बेटे का इंतकाल (मृत्यु) हुआ था, ये सूरत नाज़िल हुई, हमने अता कि तुझको क़सरत और ये लफ़्ज फ़ुहल के वजन पर है। और कसरत से किनारा है। यानि हमने तुझको बहुत ख़ैर अता की मैंने उस नहर के किनारे देखी ज़बराईल से मैंने पूछा कि ये नहर क्या है। फ़र्जद अता फ़रमाए और बहुत हमल और अमल इनायत किया है और तफ़सीर-ए-एनुल मुआनी में है कि उम्मत की क़सरत और बाज़ ने कहा कि ज़मीन आसमान में तेरे जिकर की कसरत या कसरत मोलजाक या दोस्तों की कसरत और बहुत मशहूर यह बात है कि कौसर एक नहर है जन्नत में मेराज के एबाल में। जो हदीसे है उनमें से एक हदीश में वाक़्या है के सातवें आसमान पर मैंने एक नहर देखी। उस नहर के किनारे याक़ूत मोती, जमरंद के खेमे थे। और सब चिड़ियाँ मैंने उस नहर के किनारे देखी ज़बराईल से मैंने पूछा कि ये नहर क्या है। कहा कि नहर कौसर है। हक़ तआला ने आपको अता फरमाई। मौअल्लम-उल-

तमज़ील में हज़रत मुहम्मद से नक्ल की है कि आपने फ़रमाया कि कौसर एक नहर है जन्नत में। उसके किनारे स्रोते के हैं और उसके स्रोते मोती, और याकूत के। उसकी खाक़ में मुश्क से ज्यादा ख़ुशबू और बर्फ़ से ज्यादा सफ़ेदी है। दूसरी में है कि मेरा हौज़ यानि हौज़-ए-कौशर उसकी सैर महीना भर की राह है। उसका पानी दूध से ज्यादा सफ़ेद, उसकी बू मुश्क से बेहतर है। उसके आब- खोरे और कटोरे आसमान के तारों की तरह रोशन हैं। जो उस हौज़ से पानी पिएगा फिर कभी प्यासा न होगा। सैर ताबिलात में फ़रमाया है कि कौसर कसरत की मारिफ़त है वहदत में। और वहदत का सबूद एक कसरत में है। और यह एक नहर है, बोस्तों मारिफ़त की। कि जो कोई उससे सरोबार हुआ वो हमेशा की क्रियामत की प्यास से बेख़ोफ़ है। (परमधाम का हौज़ कौसर का वर्णन किया गया है)

## सूर: अख़लास

**प० 617** कुरैश के एक गिरोह ने कहा ऐ, मुहम्मद हमारे सामने उस ख़ुदा की सिफ़त बयान करो जिसकी इबादत को तरफ़ तुम हमको बुलाते हो। एक गिरोह ने कहा ए अबू क़ासिम ख़ुदा का बक्रत ब्यान करो ताकि तुम पर ईमान लाए। इस वास्ते कि हमने तौरैत में उसकी सिफ़त लिखी देखी है और हम जानते हैं कि कहीं तो ख़ुदा क्या खाता है क्या पीता है किसकी मिरास (दाम) उसने ली है। उसकी मिरास कौन लेगा। तो ये सूरत नाज़िल हुई कि कहो ऐ मुहम्मद उससे जो ख़ुदा को पूजता है वो है ख़ुदा एक जात में। मुतवैद सिफ़ात में। मुतफ़र्द ख़ुदा के बेनियाज़ है। सबसे और वो मियाद (समय) बंदों की पनाह (संरक्षण) है। न खाता है ना पीता है बाक़ी है कि हर्गिज़ फ़ना और नेस्त न होगा। मावर्दी

ने कहा है कि समद वो है कि जो कुछ कहे करे। ऐल उल मुआली में हज़रत इमाम अली बिन मूसी से नक़ल किया है। कि समद वो है जिसकी तहकियत पर इतला (सूचना) पाने से अक़ले ना उम्मीद हो। (रब ना खाता, ना पीता ना जगह लेता है। यानि वह दिखावे से अलग है)

**प० 618** लिखा है कि एक यहूदी का लड़का रसूल साहेब की ख़िदमत में मशगूल था। लवेध बिन आसम यहूदी की लड़कियां उससे इसरार (विनती) और मुबालका करके रसूल साहेब के बाल मुबारिक़ मांग ले गई। और हज़रत का नाम लेकर एक रस्सी पर जादू फूंक के चाह-ज़रबान में एक पत्थर के नीचे दबा दिया। ज़बराईल ने हज़रत सैयद को ख़बर की। हज़रत ने अली से कहा तो कुंअे में जाकर देखा कि उसमें 11 गिरहें लगी थी। तो हक़ तआला भेजी आयतें और ज़बराईल ने ये सूरते पढ़ीं तो हर आयत के साथ उस रस्सी की एक गिरह खुल गई। अक़बा-बिन-आमर ने हज़रत मुहम्मद से रिवायत की है। (ग्यारवीं सदी में हक़ का जाहेर होने का वर्णन किया है)

यानि पनाह मांगने वालों के वास्ते इन दो सूरतों के मिसल कोई पनाह नहीं। कुछ पनाह लेता हूं मैं सुबह पैदा करने वाले की। और बाज़ ने कहा है कि फ़लक वो चीज़ है जो फटे। जैसे गुठली दरख़्त उगने की जगह से फट जाती है। और जैसे पत्थर और ज़मीन पानी निकलने से राख़ हो जाती है। या दोज़ख़ में एक कैदख़ाना है और बाहर तक्रदीर उसके ख़ुदा की पनाह मांगना चाहिए। बुराई से चीज़ की जो पैदा हुई है।

और बुराई से अंधेरी रात के जब उसका अंधेरा आए सब चीज़ों पर या आप़ताब (सूर्य) की बुराई से जब वो ग़रूब (छिपा)

करे या चांद की बुराई से जब निकले और ग्रहण बैठे या सुरिया (सुरैया) की बुराई से जब गिरे तो वो बीमारियों की कसरत और इददत का महल है और उसका तलूफ रंजों और बीमारियों की किल्लत का वक़्त है। और सर से फूंकने वालियों को यानि उन औरतों की बुराई से जो जादू के कलमें कहती है। और फूंकती है गिरोहों में और बुराई से हस्द करने वालों के जब वो अपना हस्द ज़ाहिर करे, उसके मुआफ़िक़ अमल करे। इस वास्ते कि अगर छुपाए तू उसके हस्द का गर्द उसी पर फिर आए इससे यहूद मुराद है कि हज़रत मुहम्मद पर हस्द रखते थे। और हक़ तआला ने इस सूरत की बुराइयां हस्द पर ख़त्म की। जो सबसे बुरी सिफ़त है। (दुनिया की हद निराकार तक जबकि मोमिन का घर परमधाम है)

## सूरा नास

प० 619 के पनाह लेता हूं आदमियों के रब के साथ। पातसाह लोगों का। माबूद बनी आदम का। सर से बसवसा देने वाले छुपे रहने वाले के किस वक़्त यादे इलाही करते हैं शैतान की आदत यह है कि जब बंदा हक़ तआला को याद करता है तो शैतान भागता है, जब यादे इलाही से बंदा ग़ाफ़िल होता है, तो शैतान बसवसा देता है। वो जो बसवसा ड़ालता है लोगों के सीनों में ज़िन्नो और आदमियों के लगाव में है, कि इस सूरत में लफ़ज नास पांच मुकाम पर वाक़या हुआ, और उसके मायने एक ही है। (मोमिन के दिल में ख़ुदा की सूरत है। तो शैतान बहम नहीं डाल पाता, जबकि काफ़िर में दुनिया की ख़्वाहिश रहती है। इसीलिये वह शैतान के बहकावे में आ जाते हैं।)

## “दज़्जालनामा” ( कलयुग के लक्षण )

### बिस्मिल्लाहिर्हरहमानिर्रहीम

**किस्सा शैतान लानती का—** कि एक दिन रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम. बीच घर बीबी आयशा रज़िअल्लाह अन्हां के बैठे थे, कि एक तरफ़ से आवाज़ उठी, तब रसूल अल्लाह ने फ़रमाया कि, ऐ यारो जानते हो, ये आवाज़ किसकी है। यारो ने कहा हम नहीं जानते हैं। तब कहा कि यह आवाज़ शैतान की है। बस, रुअें में शैतान हाज़िर हुआ और सलाम कहा, जवाब किसी ने नहीं दिया, पर रसूल अल्लाह ने कहा कि ऐ शैतान किस काम को आया है। और बाल दाढ़ी से किस वास्ते दूर किए हैं। तब कहा कि आज के रोज़ दरगाह ख़ुदा से एक फ़रिश्ता मेरे पास आया और कहा कि ऐ शैतान लानती हुक्म है, कि पास के जा मुहम्मद सल्ल० के जा और जो कुछ पूछे सो सांच कहिए, नहीं तो तुमको मारूंगा, इस वास्ते आया हूँ। तब रसूल ने कहा कि दुश्मन तेरा कौन है ? कहा कि तुम हो, जो दीन शरियत का ज़ाहिर किए हो और कहा कि जो कुछ मुझे प्यारा है बीच ख़लक के, सो तुम बंद किए हैं पैग़म्बर अलैहिस्सलाम खुश हुए और कहा कि जो कोई नजीक ख़ुदा के दोस्त होवे सो नजीक तेरे दुश्मन है, फिर पूछा कि दुश्मन तेरा कौन है ? कहा कि बादशाह आदिल (न्यायी) किस वास्ते कि जो कोई के अदल करे सो साठ बरस की बंदगी का सबाब एक साईत (पल) में पावे, फिर पूछा और दुश्मन तेरा कौन है ? कहा कि फ़कीर साबिर (संतोष रखने वाला) के रात दिन (जो) फ़ाके से रहे और किसी से कहे नहीं, फेर पूछा और, और दुश्मन तेरा कौन है, कहा कि दौलतमंद, जो माल हलाल का इकट्ठा करे और सच बोले, फिर पूछा कि और दुश्मन तेरा कौन है ? कहा जो कोई ऊपर इल्म के काम करे और जो कुछ चीज़ ख़ुदा तआला ने मना किया है। उससे दूर रहे, फिर



शैतान ने कहा कि ऐ मुहम्मद ज्यों कर बीच दुनिया और बहिश्त (स्वर्ग) के इल्म न होता, तो तमाम (दुनिया) को गुमराह करता मैं, फिर हज़रत ने पूछा कि और दुश्मन तेरा कौन है ? कहा जो कोई हमेशा साथ बजू (पवित्र) के रहे वही मेरा दुश्मन है। नजदीक उसके नहीं जाता हूँ मैं, फिर पैग़म्बर ने फ़रमाया के जब उम्मत मेरी बीच नमाज़ के होती है। तब तुझे कैसा होता है ? कहा बीच उस साईत के मेरे ताई ताप होता है। फिर हज़रत ने फ़रमाया के ज्योंकर (जो) उम्मत क़ुरान पढ़ती है। उस वक़्त कैसा होता है। कहा कि ऐ रसूलअल्लाह जैसे किसी के ताई, बीच आग के डारे और खाक होवे, और जो मोमिन नियत हज़ (तीर्थ) की करे तो मेरे तेरे बहुत ग़म होता है, फिर कहा कि ऐ लानती मैं, और उम्मत मेरी जब ख़ैरात देती है। तब उस बक़्त तेरे ताई कैसा होता है। तब कहा कि ऐ रसूलअल्लाह दिल मेरा टुकड़े-टुकड़े होता है। किस वास्ते दूसरे बीच माल और रिज़क (रोजी-रोटी) उसके बरक़त होती है। तीसरे बीच अमलनामों उसके नक़ी लिखते हैं। चौथे दरवाज़े बहिश्त के खुलते हैं। पाँचवें दरवाज़े दोज़ख के बंद होते हैं। छठें उम्मत उसकी बढ़ती है। पैग़म्बर अलैहिस्सलाम ने कहा कि, ऐ लानती साथी चारों मेरे के किस तरह है। कहा अबुबक्र ने चालीस बरस मेरा हुक्म नहीं माना है ? आज क्यों कर मानता है, और उमर ख़िताब से भागता है। और उस्मान से शर्म रखता हूँ मैं, और अली तो शेर दरगाहे ख़ुदा का है। उनके नज़दीक नहीं आता हूँ मैं, और तमाम यार बरक़त तेरी से खुलासा हुआ है। जब दिन क्रियामत के नज़दीक आवेंगे और उलमां मर जावेंगे, उस बक़्त (वक़्त) उम्मत मेरी बीच हाथ मेरे आयेगी, तो मैं देव (जिन्न) के ताई मुवक़ल करूँ, तो उसके ताई ख़तरा करे, और एक शख्स के ताई मैं जो, तो उसको बातन में उरझावें और खरीद फ़रोख़्त की बाता करें, तो नमाज़ उस का बक़्त जाता रहे, और सबाब जमात का न पहुँचे, तब मेरे को क्ररार होवे, और अकेला नमाज़ करे सिताबी से, जैसे

पंछी दाने को चुन लेता है। जो कोई ऐसे नमाज़ पढ़ता होये, तो वही नमाज़ उसके मुँहों पर मारते हैं। तो मैं खुश होता हूँ। ऐ मुहम्मद बीच उम्मत तेरी से कोई तेरह खसलतें (आदतें) रखता होय तो मैं बहुत खुश होता हूँ। के उस शख्स को बंदगी, दूसरे साँच न बोले, तीसरे गुनाह करे, और तौबा, भुलावे, चौथे हुक्म खुदा का न माने, पांचवें बीच काम दुनिया के मशगूल रहे, बक्त बंदगी के, छठें माता-पिता को दुःख देवे, सातवें गरीब को दुःख देवे, आठवें शराब को पिए, नवमें मना किये (किया) गई होय सो खावें, दसमें खुदी करे, अग्यारमें हिरस करे और बारमें तक्रव्वुर (गर्व) करे, और तेरमें पाक पीरों का गिला करे, ऐ मुहम्मद जो कोई इन खसलतों से तौबा: करै, तो इस दुनिया से, साथ ईमान के जाएगा। तब पैग़म्बर सल्ल० ने फरमाया के, ऐ लानती जो तू ऐसा जानता था, तो तूने तौबा: क्यों न किया, जो तू भी बीच बहिस्त के जाता। शैतान ने कहा, ऐ रसूल खुदा के ऐसा सुकन क्यों को कहते हो, जो कुछ हक़ तआला चाहता है। उसके ताई कोई नहीं फ़ेर सकता है। खुदा ने आदम को कहा के गेहूँ मत खाओ और दिल में थी के खाओ, पस आदम क्यों न खावे, और मुझको कहा कि आदम को सिज्दा कर और दिल में थी, के न करे, पस मैं क्यों कर करूँ। ऐ मुहम्मद हक़ तआला ने बहिश्त पैदा करी तो बहिश्ती भी बनाए हैं। तो मेरे हाथ में क्या है। जैसे कि खुदा तआला ने फरमाया है “तुन्नज़िलो मन्तशाओ व युहदी मेंयशाओ” (यानि) गुमराह करता हूँ मैं जिस शख्स के ताई चाहता है, मैं और हिदायत करता हूँ, मैं जिस किसी को चाहता हूँ मैं, और मैं चाहूँ के तमाम खलक में आबिद (भक्त) होऊ, मैं और खुदा ने न चाहा होय, तो कैसे करुँ मैं, पैग़म्बर सल्ल० ने फ़रमाया के ऐ लानती, जो कोई वास्ते खुदा के काम करता है। तो तुझे कैसा होता है ? लानती ने कहा के, गोश्त मेरा गंदा होता है। और सिर मेरा टूटता है। फिर शैतान ने कहा कि जो लड़का हक़ माँ-बाप का न रखता होय, तो वह

शरीक मेरा है। और जो हक माँ-बाप का बजा लावे तो गोश्त मेरा गंदा होता है। और जब मोमिन ख़ैरात (दान) देते हैं। तब मुझे बहुत ग़म होता है। और जब किसी तालिबे इल्म या आलिम मुसलमान के ताँई इज्ज़त और बुजुर्गी देता है, तो पीठ मेरी टूटती है। जो कोई हराम से और लुक्मों से दूर होता है। तो मेरे को क़ब्र में डालता है। और जो कोई बीच सफ़्र पहली तरफ़ सांची के नमाज़ पढ़ता है, सो मेरे को बीच जमात शैतानों के ज़िबह (क़त्ल) करता है। जो कोई झूठ मारता है, तो वह भी शैतान है। जो कोई शराब पीता है, सो मेरा सिरताज है, जो कोई मुसलमान को नाहक दुःख देता है सो मेरी दौलत है। जो कोई औरत करे और तलाक़ देवे सो मेरी आँखों को रोशनी है। जो कोई ज़िना (व्यभिचार) करे सो मेरा पातसाह है। और जो कोई सौगंध झूठ खावे, सो हैयाती मेरी है। और ब्याज और रिश्त लेने वालों से राज़ी हूँ मैं, जो कोई ख़ब्बे (बायें) हाथ से रोटी तोड़ के खाय, तो ए मेरी इज्ज़त है। और पहिनां जे हाथ ख़ब्बे (बाएं) से बीच पाऊँ ख़ब्बे (बायें) के सो तो मेरी बड़ाई है। और क़िल्ले की तरफ़ पेशाब करे तो मेरी बड़ी खुशी है। और गुनाह करके तौबा! विसार तो मैं शुक्र करता हूँ और राग गावना मेरा सुकन है। और नाचना इलम मेरा है। और देना हलाल का हराम की जगह मेरा तोशा है। एक समय शैतान से पूछा पैग़म्बर सल्ल० ने के, ऐ लानती तुझे किसी समय ग़म भी हुआ है। कहा कि चार वक़्त, पहले तो मैंने छः (6) लाख बरस (वर्ष) बंदगी करी फिर जब आदम पैदा हुआ, तब तमाम फ़रिश्तों ने सज़दा किया मैंने न किया, तो हक़ तआला ने, लानत दी मुझे, और काफ़िरों में गिना मुझे, दूसरे जब तुम बीच पेट में आए। तीसरे जब आयतुलकुर्सी उतरी, चौथे सब सूरः तुल फातिहा आई है। तब मेरे ताँई ग़म बहुत हुआ है।

## ॥ वसीयत नामा पहला ॥

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बुल आलमीन वलसलात अल नबी अमा बाअद पीछे इसके तमाम फ़िरके रिसालत पनाह फ़ेको रौशन हुजियो की मैं, सैयद महमूद ख़ादिम रोज़े पाक हूँ। मेरे ताँई तारीख़ उनैसमां महीना रमजान सन् एक हजार छयासी (19-01-1086) हिजरी-साल आवाज आई कि बसीयत उम्मत मेरी को कहे, कि सबब बुरे काम (फ़ैल) तुमारे से बीच दरगाहे ख़ुदा के शर्मिदा हो मैं तुमारे ताँई शफ़ाआत क्यूं कराऊं मैं गुनाह बेहद है। सबब गुनाह के से निशानी ईमान की नही रही। जैसे की बीच इसारत बरस की (411000) चार लाख और ग्यारह हजार आदमी, उम्मत से मुझे! उनमें से एक भी ईमान से न था के बीच निशानी ईमानदारी न रही और बहुत-सी निशानियां क्रियामत की फ़ैल बुरक़े के तुम्हारे ज़ाहेर आई और जहूर ईसा अलैहिस्सलाम का भी नज़दीक पहुंचा, के इससे आगे सुनोगे के तौबा : करो और ख़ुदा से पनाह मांगो, और दरवाज़ा तौबा: का बंद नहीं और जमाना इमाम मंहमद महदी साहिबुज्ज़मां का नजदीक पहुंचा है। आज इसके सुनोगे! सुनने उसके से तौबा: करो और सब ग़रीबों पर और फ़कीरों पर मेहरबान होय दिल उनका हाथ को फुरमाया ख़ुदा का और रसूल का करो। फुरमाया नफ़स शैतान मत करो और एह हुआ लिखते रहो और बीच-अज़ाबे ख़ुदा के गिरफ़्तार न हो। और साथ ईमान के जाओ।

न रोज़ा रखते हो न ग़रीबों को सदका देते हो। मैं कि सैय्यद महमूद ख़ादिम हो। जो आपसे झूठ कहा होय मैं, तो ख़ुदा और रसूल को बेजार हो मैं। और जो कोई शक़ लयावें सो काफ़िर है। मेरे ताँई ये हुक्म इमाम महमंद महदी साहिबुज्ज़मां का है। और हुक्म हुआ है उम्मत मेरी को कहीं की शरम ताँई एह हुक्म इमाम मंहमद महदी साहिबुज्ज़मां का है। और हुक्म हुआ कि उम्मत मेरी को कहो कि शर्म ख़ुदा और रसूल की नहीं करते हो।

बीच तुम्हारे दस खसलते बुरी है। यही कि नमाज़ नहीं करते हो दूसरे कुरान नहीं पढ़ते हो। तीसरे सूद खाते हो। चौथे अमल दोजख़ का करते हो। पांचमे कवातत करते हो याने आदमी पर आदमी चढ़े। सातमें ज़िना करते हो। आठमें जुआ खेलते हो। नौवें ख़्यानत करते हो। दसमें माल से जगात नहीं देते हो। जो इस बयान को ढांपे, जानो के शरः ढांपी। चाहिये के मुक्क़ः ज़ाहेर करे। और मालिक किसे की अमल करे। दुआ करे,

॥ बसीयत नाम तीसरा ॥

॥ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ॥

दरुद और सलाम होवै हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम पर।

अमा बाअद, जानो और ख़बरदार हो कि यह, ख़ादिम रोज़े पाक का बख़्शाने वाला मदीने का और ख़ातिमुल नबी का शेख़ अहमद रिवायत करे है कि सन् (1090) एक हज़ार नब्बे रात जुमा की बीच रोज़े पाक रिसालत-पनाह सल्लल्लाहु अलौहि वसल्लम के मसगूल था मैं, कि नींद आई, सरवरे अंबिया मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलौहि वसल्लम बीच ख़्वाब के ज़ाहेर हुए जमाल जहान का रोशन करने वाला सरवरे क़ायनात के से मुशर्रफ़ हुआ है। एह नुक्ता ख़िताब करके फ़ुरमाया। या शेख़ अहमद। उम्मत गुनहगार मेरी तो सत्तर हज़ार (70,000) आदमी मेरे! उनमें से सात तन सर्फ़ ईमान कैसे मुशर्रफ़ हुए और सर्फ़ ईमान कैसे ना उम्मेद रहे। इससे बीच दरगाह ख़ुदा के से शर्मिन्दा हो मैं।

या शेख़ अहमद उम्मत मेरी दाद को और इन्साफ़ को नहीं पहुंचती है। इससे रोज़ क्रियामत के बीच दरगाह ख़ुदा तआला के शर्मिन्दा हुआ है मां-बाप से गुनाहगार है। हल्फ़ उनका बज़ा नहीं लाते हैं। और हल्फ़ हमसायो का बज़ा नहीं लाते सबब माल और मता के। औलाद अपनी को इलम दीन

के से तालीम नहीं करते हैं। रोज़े और नमाज़ नहीं सिखाते हैं। अज़ाबे इलाही के से नहीं डरते हैं। माल और फ़रजंद से मुहब्बत रखते हैं और वास्ते ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल के मेहनत नहीं करते हैं। या शेख़ अहमद आगे इससे दो वसीयतनामा भेजे हैं। वसीयत पहली में कहा है कि बीच दुनिया की निशानी ज़ाहेर आएगी। दरगाह रब्बुल-इज्ज़त के से जवाब आया के, ऐ मुहम्मद उम्मत तेरी क़हर गुनाह के से नहीं डरती है और गुनाह करती है। बीच दरगाहें ख़ुदा के जारी की में। या रब्बिल् आलमीन आप क़हर उनके ऊपर मत कर, तो और वसीयतनामा भेजू मैं। या शेख़ अहमद निशानी क्रियामत की इनकी ताँई ज़ाहेर आवेगा क्यों नहीं ख़बर करते।

सख़्ती और तंगी आगे आई। तौबा: और अस्तजफ़ार नहीं करते और औरतें ऊपर सिर के बुरका डाल के बीच बाज़ार और कुर्ब साथ मर्द ना मेहरम के बात करती हैं और मुँह नहीं ढांपे। और अदब उम्मत मेरी से गया। भांत-भांत की बलायें उतरी। भांत-भांत की बिदअत ज़ाहिर आई। एक-एक किरादत करे। रोज़े नमाज़ से क़ाहिली करते हैं। रोज़ें क्रियामत के ग़ैब से गिरफ़्तार होंगे। और जा ला बाकी हुई है। और मुल्क तल्फ़ हुई है। हवा नफ़स कैसे ताबीन होते हैं। तारीख़ (1100) एक हज़ार और सौ, तीन अंधेरा होय के सूरज न निकले और भांत देखावे। अस्तग़फ़ार और हज़रत ज़बराईल उस बक्रत उतरे। (1) आलम से बरक़त। (2) फ़कीरों से सफ़ाक़त उठाये। (3) क़ुरान मजीद को उठाये। (4) दरवाज़ा तौबा: का बंद हो जाये। फ़ैल बुरे से उनके ख़बर कर चाहिए कि ग़जब ख़ुदा के से डरो और मुझसे शर्म रखो। और मुल्के बुर्ज को किरअत करो, तो ख़ुदा तआला गुनाह तुमारा बख़्शे। मैं सिफ़ायत करो। जो कोई तरफ़ क़ाबे: के आवे बीच दरगाहे ख़ुदा के ताबें होय। शेख़ अहमद! ऐ उम्मते मुहम्मद मेरे की वसीयतनामा के सच ऐतबार करो। बीच तिलावत (पाठ) क़ुरान के मशगूल हो ऐ बात झूठ नहीं। फ़ुरमाया के ऐ वसीयतनामे को शहर-ब-शहर पहुंचाओ। सिफ़ायत मेरी

ऊपर उसके हलाल है। बीच रोज़ क्रियामत के साथ मेरे बका अर्श के होएगा जो इनका ऐतबार न करे काफ़िर हो। ऐ झूठ नहीं। जो झूठ कहो मैं तो बीच दोनों जहानों से रूह स्याह होय। और उम्मत मेरी तौबा करे इसतंफ़गार करो। खुदा तआला गुनाह बख़्शे। बुर्जुकी अरवाह मुहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् के से वासो रज़ा खुदा जो कुछ के मैं करार किया था, तो तुम को पहुंचाया। अब बीच गर्दन मेरी से दूर होय वसीयतनामा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् के गुनाहों से भागो। रोज़ा नमाज़ और हज़, देना ज़कात का ऊपर तुमारे मुकर्रर है, रुजू करो। जो कुछ मैंने किया है उनसे बेज़ार हो,

वसीयतनामा चौथा जो सन् हि० 1151 संवत् 1797 में आया। इस वज़ह से लिखा है

॥ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम् ॥

॥ अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिलआलमीन! वलआक्रबतो लिल मुतक्रीन तलीन वस्सलातो वसलामो रसूलअल्लल्लाहु मुहम्मदी व अला आलेहि व अस्हाबेही अजुमईन

‘अमा बाअद, मालूम हो कि मैं शेख़ अहमद’ हूँ खादिम रोज़े पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा का। रात के वक़्त बीच रोज़े मुबारिक़ क़ुरान पढ़ता था, कि अचानक बाज़माक़ मुहम्मद सल्ल० फ़रमाया की ऐ। शेख़ अहमद! लोग उम्मत मेरी के तमाम गुनाहगार हुए हैं। दिन जुमे के सात हज़ार आदमी बीच मक्क़े के मुए उनमें से सात आदमी साथ ईमान के गए और बाक़ी सब कि बेईमान हो कर मुए इस वास्ते बीच दरगाह खुदा के शर्मिन्दा हुआ मैं। किस वास्ते के लोग हक़ माँ-बाप का और उस्ताद का बज़ा नहीं लाते और रिश्वत खाते हैं। और हक़ हमसायों का बज़ा करते और दिनो-दिन नमाज़ तर्फ़ करते हैं और हराम खाते हैं। ऐ शेख़ अहमद आगे ऐसे कुछ

वसीयतनामा भेजे मैंने मगर कुछ असर न हुआ। निशानी क्रियामत की नज़दीक आ पहुँची है। तीन चीज़ें जाहिर हुई हैं—(1) हाकिम बेअदल (2) और हरामज़ादे हरामज़ादगी करने वाले। (3) और मकर करने वाले मकर (करने) में जाहिर हुए और 'बिदअत' का चलन बहुत चला है।

आवाज़ आई खुदा की दरगाह से कि, ऐ हबीब मेरे! उम्मत तेरी क्रहर मेरे से नहीं डरती और गुनाह बहुत करती है। ऊपर उनो के क्रहर करूंगा। मुहम्मद सल्ल० ने अर्ज किये के या इलाही उम्मत मेरी पर बीच दुनिया के क्रहर मत करे फिर वसीयतनामा भेजता हूँ, सभी उस पर अमल करे।

और फ़रमाया अग्यारहवीं सदी (वि.स. 1746) में मेह (वर्षा) कम बरसा। और कोई अपनी खुदी से बाज़ नहीं आया और तोबा: नहीं किया। औरत और मर्द बीच गलियों के और बाज़ार के बातें करते हैं। और औरते मुंह नहीं ढांकती हैं। अपने खाविंद को नज़र में नहीं लाती है। फिर फ़रमाया कि, अग्यारह सौ पचास (वि.स. 1796) बरस में सब सबाब (पुण्य) का उठ गया और दरवाज़े तोबा: के बंद हुए। बीच उस ज़माने बेअदल पातशाह हुए और इन्साफ़ सरदारों से, मेहर माँ-बाप से तमाम उठ गई। और ग़ज़ब (कड़ाई और अज़ाब) परवरदिगार से नाज़िल हुआ। और बीच सन् 1163 ग्यारह सौ तिरसठ (संवत् 1808) के जुल्मती (जुल्मात) होयेगी सूरज न निकलेगा। बीच उस दिन (जमाने के) हज़रत ज़बराईल दुनिया में नाज़िल होवे जा। और हरुफ़ कुरान मजीद के के जायेगा।

चाहिए के इस वसीयतनामे पर अमल करे और वसीयतनामा खत्म हुआ। फिर और न आवेगा, कसम है खुदा की, हज़रत मुहम्मद सल्ल० बहुत रोते थे और यह कलाम फ़रमाते थे, कि जो कोई इस वसीयतनामे को गाँव-गाँव या घर-घर या शहर-शहर, गली-गली, बाज़ार-बाज़ार ख़बर देवेगा, तो वह बंदा मेरे साथ बीच सच्चा अर्श के रहेगा और जो कोई शक लायेगा, वह काफ़िर होयेगा। शिफ़ाअत मेरी उसके ऊपर हराम होगी, अगर एक मैंने



(शेख अहमद) झूठ लिखा होवे, तो दोनों जहान में मुँह मेरा स्याह होय। जो कुछ मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया सो मैंने लिख भेजा है, हर महीने तीन रोज़े रखें और कंद (फल) से सेत (शहद) से खोले। तीन बेर दुआ पढ़े और तोबा करे,

“कि हुक्म खुदा का और रसूल का हुआ कि सवारने इस काम के आगे ही से लेने तमीज़ हिसाब उम्मत का एक सौ एक देव तैनात हिंदुस्तान हुऐ हैं। कि हुक्म खुदा का तीन रात तीन दिन बीच तमाम खलक के चलावें, और तमाम होने सदी अग्यारही के मेहतर ज़बराईल नाज़िल होये बरकत दुनिया की और शफ़कत फ़कीरों की और कुर्आन मजीद को इस जहान से उठाये के मकान अपने के ले जावे और दरवाजा तौबा का बंद हुऐ” (तीसरा वसीयतनामा)  
(शेख अहमद ने औरंगजेब बादशाह को लिखा)

## ॥ वसीयतनामा ॥

### ‘यह नक़ल है असल के’

एक शख्स ‘शेख सालेह’ नाम है। बीच मस्जिद पैगम्बर अलैहिस्सलाम के रहता था। सो कहता है कि —

“मैं जुमे की रात आधी रात के वक़्त तिलावत कुआन में मशगूल था कि अचानक नींद में हो गया। इतने में हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझको आकर जगाया और फ़रमाया कि ऐ शेख सालेह, उम्मत मेरी को ख़बर करो कि बहुत आदमी मेरी उम्मत के बीच इस तारीख़ के बेईमान होकर इस ज़हान से बाहर हो गये हैं। सत्तर हज़ार (70,000) गुनाहगार होकर इस ज़हान से बाहर हो गये। आगे इसके एक फ़रमान बीच तारीख़ सन् 1086 को भेजा था। मैंने सो उसपे वादे करे सो कोई अब तक उसके ऊपर साबित न हुआ। इस वास्ते हक़ तआला ने बलाय क़हर की ऊपर आदमियों के नाज़िल करी है। बहुत से आदमी उस क़हर में मर गए। पीछे उसके बीच इस तारीख़ के सन् 1220 में भी और फ़रमान भेजा था थोड़े से उससे ख़बरदार हो गये। ख़ुदा की तरफ़ रुजू हो गए। बहुत से आदमियों ने किया, मसगूल फिसक़ व फ़िसाद के हुए, इस वास्ते हक़ तआला ने मलायको को फ़रमाया कि सब खेती को बिगाड़ डालो।

ए शेख सालेह, अब तुम मेरी उम्मत को ख़बर करो कि छोटे या बड़े गुनाहों को छोड़ देवे और तौबा: करें और हक़ ख़ुदा व रसूल का व माँ-बाप का व गुरु का और जो हुक्म ठहरे है तिनको बज़ा लाए। और तौबा: तफ़सीर का करो। जिससे दुनिया की बलाओ से बचोगे। नज़दीक है कि आख़रुल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़मां ज़ाहेर होवेंगे। और जो आलिम लोग मेरी उम्मत के निशान क्रियामत का पूछे, तो कहना कि सन् 1270 में सूरज पीछे (पश्चिम) की तरफ़ से उगा है। और जुहर के जगह पर आय के डूबा है।

और आवाज़ सख्त और भयानक पैदा होगी कि आधे आदमी व ज़िन्न मर जाएंगे। और आधे बाक़ी रहे। और दरवाज़ा तौबा: का बंद होवेगा। उस वक़्त तौबा: किसी का कबूल न होगा।”

फिर तारीख़ बीच पहली सन् 1400 चौदहवीं सदी के एक हरुफ़ कुर्आन मजीद के जाते रहेंगे और वर्क खाली रहेंगे। और खलक से हया और वफ़ा और मुरब्बत और आलिमों से अमल जाता रहेगा। फेर बीच तारीख़ सन् 1310 तेरहसो दस संवत (1956) के दाभ तुल अर्ज़ कि जानवर है सो सूरत और उसका मुँह मनुष्य जैसा है और खाल उसकी शेर की है व कान व पूँछ उसकी बैल की जैसी है। सो ज़ाहिर होगा। सो मोमिनो को निशानी पेशानी पर है। और मुनाफ़िको की पीठ निशानी पर है। और उसके घेरे से कोई बाहिर ना रहे है। फेर बीच तारीख़ सन् 1220 बारह सौ बीस के दज़्ज़ाल लानत ख़ुदा की उसके ऊपर है। जो पैदा होगा बहुत से शख्सों को गुमराह और काफ़िर करेगा चालीस दिन तक।

फिर हज़रत ईसा अलै० आसमान से मक्क्रा की छत पर उतरेंगे। सो दज़्ज़ाल लानती को बदली करेंगे सो क्रियामत के निशानों के यह (लक्षण) हैं। सो मेरी उम्मत को ख़बर करो कि गुनाहों से तौबा करे। और बीच ख़िदमत मिस्कीनो व अहले बैत व आलिमों के हाज़िर रहो। और जो हुक्म शर्त करे है। उसके ऊपर क़ायम मजबूत रहो। जिसमें क्रियामत के दिन हक़ तआला से शर्मिन्दा न होओ।

मैं शेख़ सालेह, जो हज़रत सल्ल० के फ़ुरमान में कि जो मुझे हुक़म हुआ है। उसमें से एक कान मात को (ज़ेर, ज़बर) अंतर करा हो तो कसम ख़ुदा की, कसम ख़ुदा की, कसम ख़ुदा की, क्रियामत के दिन मेरा मुँह काला हो। व सबसे ख़ुदा के शर्मिन्दा हो। और जो कोई इस ख़बर को सुन के शक करे सो क्रियामत के दिन काला मुँह होवे, और जो कोई इस फ़रमान को एक

शहर से दूसरे शहर तक जाहेर करे (तोवया करे) उसके लिए हज़रत रिसालत पनाह सल्ल० ने फुरमाया है कि उसको हौज़ कौसर से फायदामन्द करूँगा। इन्शा अल्लाह तआला।

आलिम हज़रत से गुज़ारिश है कि कुरान पाक से कुछ सवालात मुज़ब हैं। गौर फरमाईये!

- प्र० 1. पिछली किताबें मंसूख करके उन्हीं नामों की नई किताबें कौन सी हैं ?
- प्र० 2. पिछली आयतें भुलाकर नई बेहतर आयतें लाऊँ वे आयतें कौन सी हैं ?
- प्र० 3. रूहों का मर्तबा आदमियों व फ़रिश्तों से भी बड़ा बताया गया है। वे रूहें कौन सी हैं ? जिनके हाथ में आखिरत का हुक्म है। व काम हाल उनके नूर के हैं ?
- प्र० 4. यहूदियों के गिरोह में आखिरत को पैगम्बरों का मुल्क कहा है। वे (यहूद) कौन हैं ?
- प्र० 5. क्रियामत के वक़्त मोमिनों व दुनिया की क्या-क्या फ़ायदा मिलेगा ?
- प्र० 6. इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां दीन की ताज़ा करके बढ़ाएंगे, वह इमाम महदी सामिहबुज्जमां कौन है ? व दीन का ताज़ा होना क्यों लिखा है ?
- प्र० 7. हज़ार महीने से बेहतर लैल-तुल-क्रद्र की रात कही गई है। जिन पर वही उतरी और लैल-तुल-क्रद्र के तीन तक्रार कौन-कौन से हैं। खुलासा करके कहिए ?
- प्र० 8. क्रियामत के वक़्त हज़रत ईसा रुहअल्लाह दो जामें हरा हुल्ला व सफ़ेद गुदरी पहनेगे। ये लिखा है। क्या वह ज़ाहिरी/लिबास है ?

- प्र० 9.** सदी हिजरी दसवीं में ईसा रुहउल्लाह ग्यारहवीं में इमाम महदी साहेबु जमां का ज़हूर है। डेढ़ सौ साल पीछे होने का क्या सबब है ? कहिए।
- प्र० 10.** आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां का मशरिक (पूर्व) में जाहिर होना क्यों कहा है ? व एक दीन होना दुनिया का क्यों कहा है ?
- प्र० 11.** अस्माफ़ील के सूर फ़ूँकने पर पहाड़ रुई की तरह उड़ जाएंगे और दोबारा क़ायम होंगे जुल्म व शिर्क से भरी दुनिया नूर और अदल से भरेगी कैसे ?
- प्र० 12.** आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां ने दीन की पातसाही ख़िलाफ़त महाराजा छत्रसाल जू (अली) को दी है तो उनकी ख़िलाफ़त को मानते क्यों नहीं हो। दीने इस्लाम हक़ीक़ी (निजाबंद संप्रदाय) के ख़लीफ़ा छत्रसाल जू बनाए गए हैं। तो उनकी ख़िलाफ़त को तस्लीम क्यों नहीं करते ?
- प्र० 13.** कुर्आन-पाक में जैसा लिखा है। वैसी ही दुश्मनी आलिम आख़रूल इमाम साहिबुज्जमाँ से कर रहे हैं। आख़िरत को इसका सिला मिलेगा और दस तरह की दोज़ख़ की आग में जलना पड़ेगा क्यों ?
- प्र० 14.** रूक्ने में ज़्यादा क्या लिखूँ, आजूज़-माजूज़ पातसाही करेंगे आख़िरत में आठ बहिस्ते क़ायम होंगी व उन बहिस्तो में किनको क़ायम किया जाएगा और क्यों ?

हज़रत सभी सवालात के जवाब कुर्आन-मज़ीद का तर्जुमा तफ़्सीर हुसैनी या तफ़्सीरे क़ादिरी से तस्दीक़ करके ही कहिएगा। जवाब का मुन्तज़र..... ?

वाहिद सुंदर साथ